

Title: Discussion on the statement made by the Minister of Home Affairs regarding recent terrorist attack in Mumbai.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधीनगर): अध्यक्ष महोदय, सारा देश इस बात को स्वाभाविक मानेगा कि जब 10 दिसम्बर को सदन की बैठक फिर से आरम्भ हुई तो सबसे पहले दिन कोई चर्चा हो सकती है, तो वह मुम्बई की भयंकर घटना के बारे में ही हो सकती है, जहां 26 नवम्बर को एक ऐसी घटना हुई, जिसने सारे देश को दहला दिया।

सबसे पहले तो मैं कहना चाहूंगा कि यह घटना नहीं है, इस घटना ने इस बात को उजागर किया है कि कई वर्षों से यह देश एक युद्ध का सामना कर रहा है।^[R6] इसीलिए सचमुच में उसे टैरर-वार कहना उपयुक्त है। इसलिए पहली बार शायद यह हुआ होगा कि सरकार ने अपनी ओर से ही तय किया कि पूश्चोत्तर-काल न करके माननीय गृह मंत्री जी अपना जो वक्तव्य देना चाहते हैं, वह शुरू में ही दें, जिससे अधिक से अधिक समय सदन में चर्चा करने को मिले। मैं इस बात के लिए भी आपका आभारी हूँ कि आपने मुझे सबसे पहले बोलने का अवसर दिया और मैं समझता हूँ कि अब मेरा कर्तव्य होगा कि मैं माननीय गृह मंत्री जी के साथ मिलकर सारे सदन की पीड़ा और शोक प्रकट करूँ।

वहां पर इतना भयंकर कांड हुआ, जिसमें बहुत सारे लोग मारे गये, जिसमें भारतीयों के साथ-साथ विदेशी लोग भी थे। बहुत बहादुरी और वीरता से हमारे सुरक्षा-कर्मियों ने उनका सामना किया, जिसमें एनएसजी के कमांडोज भी थे, मुम्बई पुलिस के, आर्मी और नेवी के जवान भी थे। सभी ने मिलकर उनका सामना किया। मैं समझता हूँ कि जब वर्णन आता है तो उसमें रेलवे स्टेशन पर जो घटना हुई, उसमें रेलवे के कर्मचारियों ने जिस वीरता का परिचय दिया, जिन दो-तीन होटल्स में घटना हुई, उसमें होटल्स के कर्मचारियों ने भी अपने पूर्णों को संकट में डालकर लोगों की सहायता करने की कोशिश की, ये सारे लोग हमारे आदर के पात्र हैं, देश की कृतज्ञता के पात्र हैं। मैं सरकार और सदन के साथ मिलकर उनके प्रति अपनी विनम्र श्रद्धा प्रकट करता हूँ, आभार प्रकट करता हूँ।

कुछ नामों की चर्चा तो देश भर में लगातार होती रही है, पत्र-पत्रिकाओं में होती रही है जिनमें हेमंत करकरे, अशोक कामटे, विजय सातकर और संदीप उन्नीकृष्णन का नाम कोई भूल नहीं सकता है। माननीय गृह मंत्री जी ने सही किया जब उन्होंने उस तुकाराम का नाम लिया, जिसने असीम वीरता का परिचय देते हुए एक टैरिस्ट को केवल लाठी के सहारे जीवित पकड़ा। केवल एक लाठी के सहारे उसने यह काम करके दिखाया।

मैं मानता हूँ कि यह अवसर है कि विगत वर्षों में जिस आतंकवाद का यह देश सामना करता रहा है, उसका कुछ गहराई से विश्लेषण करें। मेरी मान्यता है और जैसा माननीय गृहमंत्री जी ने कहा है कि सारा "South Asia is in the eye of the storm of terror."

This is the phrase that you have used. Let us realize and say it very candidly that if South Asia is in the eye of the storm of terror, the epicentre of this storm is Pakistan. Let us not hesitate in saying that. Though in the United Nations Security Council when we have moved, we have not mentioned Pakistan – I do not know why – but I am happy that insofar as the draft resolution we have prepared and which has been circulated to several Party leaders, I have seen that we are very categorical in saying that the terrorist attack in Mumbai has been by terrorist elements from Pakistan. It is a right thing. Not only that; we have specifically mentioned in the Resolution the name of Lashkar-e-Toiba, a banned organization but which continues to function under different names. ^[k7]

It is a banned organization. It is banned even by Pakistan under pressure from the world, but it still continues to function. I will deal with it separately in my speech later.

महोदय, इन घटनाओं के बारे में जितनी जानकारी मिलती है, उसके आधार पर मैं कह सकता हूँ कि किसी राष्ट्र या देश की परीक्षा संकट के समय में होती है। मुम्बई के साधारण लोगों ने संकट के समय असीम साहस का परिचय दिया है। कभी-कभी शिकयत होती है कि टेलीविजन के चैनल्स और अखबारों में बड़े होटलों की चर्चा होती है, लेकिन जितने लोग मरे हैं, उनमें से आधे या आधे से अधिक रेलवे स्टेशन पर मरे हैं, जो कि सामान्य लोग थे, जो रेल से उतरते ही इस प्रकार के अचानक हमले के शिकार बने। मैं कल रात्रि को एक टीवी चैनल देख रहा था और उसे देख कर मुझे सही लगा, क्योंकि उसमें साधारण लोगों की चर्चा थी, जिसमें कहा गया था कि "होसला टूटे न"। शायद "आज तक" चैनल था, बहुत अच्छा दिखाया था। पूरे का पूरा फोकस ऐसे लोगों पर था, जो सामान्य लोग थे और रेलवे स्टेशन पर आए थे या कहीं जा रहे थे। किस प्रकार से उन्हें अचानक हमले का सामना करना पड़ा। एक कपल था, जो मुम्बई में रहता है, लेकिन तमिलनाडु से बिलौण करता था। उस व्यक्ति ने गोली लगी हुई लड़की से विवाह किया और बाद में उसका ओपरेशन करवाया। कई घटनाएं ऐसी थीं, जिनके कारण सारे देश का आत्मविश्वास बढ़ता है कि संकट के समय जब देश इस प्रकार का प्रत्युत्तर देता है, तो वह राष्ट्र को उन्नत बनाता है। राष्ट्र में विश्वास पैदा करता है कि हम संकट का सामना कर सकते हैं। मुझे यह भी अच्छा लगा, जब यह घटना समाप्त हो गई, तब एक टीवी चैनल ने दिखाया कि सुरक्षाकर्मी जा रहे थे, तो एक साधारण जवान से किसी टीवी चैनल ने पूछा कि आपको कैसा लग रहा है। उस जवान का उत्तर था कि "हमारे लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है।" मैं समझता हूँ कि जब शाम को हम सदन की तरफ से प्रस्ताव पारित करेंगे, तब उसका भाव भी यही होना चाहिए कि वर्षों से हमारे खिलाफ चलाए जा रहे आतंक के युद्ध पर विजय पाना इस देश के लिए किसी भी प्रकार से मुश्किल नहीं है और हम इस पर विजय पा कर ही रहेंगे।

जैसा मैंने कहा कि इसका एपिसेंटर पाकिस्तान है, इसीलिए यह सिर्फ टैरिज्म मात्र नहीं है, यह क्रास बार्डर टैरिज्म है। इस शब्द का प्रयोग करने के लिए आगरा में जनरल मुशर्रफ तैयार नहीं थे। जनरल मुशर्रफ ने कहा कि मैं इसे क्रास बार्डर टैरिज्म के रूप में नहीं देखता हूँ। खास कर उन्होंने जम्मू-कश्मीर का उल्लेख करके कहा कि यह तो आजादी की जंग है। इससे हम सहमत नहीं हुए और हमने कहा कि हम इसे क्रास बार्डर टैरिज्म मानते हैं और अगर आप इसे नहीं मानते हैं, तो किसी प्रकार का समझौता नहीं होगा। आपने सही कहा है और जितनी घटनाएं आपने गिनाई हैं एक्ट्स आफ टैरर कमीटेड इन जयपुर, बंगलौर, सब का उल्लेख किया है, यह बहुत अच्छी बात है और मुझे इस बात की भी खुशी है कि गृह मंत्री ने कहा है कि असम की चर्चा हम अलग करेंगे। उस पर पूरी चर्चा होनी चाहिए। हम इस बात को भूल नहीं सकते हैं। मैंने जब सुबह सदन के नेता से बात की थी, तब मैंने कहा था कि असम का उल्लेख होता, तो कोई गलत नहीं होता।^[18] उसका कारण है और मुझे स्वयं को लगता है कि असम, बंगलादेश के माध्यम से भी बहुत बार जो गतिविधियां होती हैं, आईएसआई उसकी तरह में होता है और वे वहां माध्यम ढूंढ लेते हैं लेकिन सदन के नेता का मत था कि शायद इससे हमारा फोकस मुम्बई के घटनाक्रम और लश्कर-ए-तोएबा से डायल्यूट हो जाएगा, मैंने कहा कि ठीक है, अलग बात हो जाए, उसमें भी कोई आपत्ति नहीं, लेकिन असम में जो कुछ हो रहा है, वह बहुत गम्भीर है और उसकी चर्चा अलग करने का जो निर्णय किया है, मुझे कोई आपत्ति नहीं, यद्यपि मैं समझता हूँ कि असम के साथियों को अपने मन की पीड़ा व्यक्त करने का अवसर था और उन्होंने किया।

मैंने एक बात और भी सुझायी थी और मैं विश्वास करता हूँ कि हम शाम को जो प्रस्ताव सम्मिलित करेंगे, उसमें जरूर इस बात का उल्लेख होगा और वह यह है कि कुछ समय

पहले इसी साल अगस्त के महीने में अफगानिस्तान में जो हमारा दूतावास काबुल में है, उस पर हमला हुआ था। सामान्यतः उसमें आईएसआई का नाम आया था कि उसे आईएसआई ने करवाया है। वह ऐसा संगठन है जो पता नहीं, जरदारी साहब ने इस बात को स्वीकार किया है कि हां, मैं मानता हूँ कि मुम्बई में जो लोग गए थे, वे पाकिस्तान से गए थे, कराची से गए थे लेकिन उन्होंने कहा कि वे नॉन स्टेट एक्टर्स थे। उन्होंने यह शब्द प्रयोग किया। नॉन स्टेट एक्टर्स कौन होते हैं? नॉन स्टेट एक्टर्स इस प्रकार का जो ऑपरेशन वहां किया, ऐसा लगता था कि मानो आर्मी कमांडोज थे। जितने लोग वहां थे और जिन्होंने उनको देखा, जिन लोगों ने उनका मुकाबला किया, उन सब का यह मत है कि वे कोई साधारण नागरिक नहीं थे, साधारण टैरिस्ट्स नहीं थे। They had undergone elaborate preparation. उनको कितना समय लगा होगा।

सचमुच मेरा माथा उस समय ठनका जब दो होटल्स के अलावा नरीमन हाउस का नाम लिया गया। नरीमन हाउस का नाम लेते ही मुझे समझ आया कि वह काफी सर्वेस करके किया गया है। साधारणतया किस को पता है कि नरीमन हाउस में ज्यूस रहते हैं, यद्दती रहते हैं, यद्दतियों की फैमिलीज रहती हैं या इस्लाम से आकर लोग रहते हैं। मुझे यह जान कर एक प्रकार से संतोष हुआ और यह बात मुझे इस्लाम के अम्बेसैडर ने आकर कही कि अगर यह घटना बुधवार को न होकर शुक्रवार को होती तो भयंकर परिणाम होते, इस नाते कि हर शुक्रवार को which is the eve of Kosher Day for them, वे शनिवार की पूर्व संध्या को मिल कर प्रार्थना करते हैं। यद्दती परिवार के जितने लोग मुम्बई में होते हैं, वे सब आते हैं और साथ बैठकर भोजन करते हैं। इस प्रकार उनकी बहुत बड़ी संख्या हो जाती और उसके भयंकर परिणाम होते, लेकिन उनको इन सब बातों का पता था कि वे यहां रहते हैं। ताज होटल और ऑबराय होटल फाइव स्टार होटल और मशहूर है, कोई भी पहचान सकता है। मैं नहीं जानता लेकिन मुझे किसी मित्र ने कहा कि रामपुर में जो सीआरपीएफ कैम्प पर अटैक हुआ था, उसमें जो व्यक्ति पकड़ा गया था, उसने मुम्बई के ताज होटल का जिक्र किया था और कहा था कि उस पर हमला होगा। यह अगर सही बात है तो - this is an additional dimension, an additional bit of evidence or bit of information which should be probed thoroughly कि उसके बाद क्या हुआ।

मैं यह बात मानता हूँ कि आज का यह अवसर विश्लेषण करने का है और साथ-साथ दुनिया को भी संदेश देने का है। यह जो युद्ध है जिस को हम कोई घटनाक्रम नहीं मानते, युद्ध मानते हैं, इस युद्ध में सरकार और विपक्ष एक साथ है, इस युद्ध में सारा देश कोई भी जाति हो, कोई भी संप्रदाय हो, कोई भी भाषा हो, किसी भी क्षेत्र का हो, कोई भी हो, सब एक है, यह संदेश जाना चाहिए, यह प्रस्ताव का उद्देश्य होना चाहिए।

इसके साथ यह संकल्प भी प्रकट होना चाहिए कि हमारा यह युद्ध आखिर तक चलेगा और हम इसे लॉजिकल परिणाम तक पहुंचाएंगे। गृह मंत्री जी के आखिरी वाक्य में उल्लेख आता है, जिसमें उन्होंने कहा है कि दो-चार महीने हैं में हमें हार्ड डिसीजन लेने होंगे। मैं अपनी पार्टी और एनडीए की ओर से विश्वास दिलाना चाहता हूँ और कहना चाहता हूँ कि चाहे सरकार कोई भी कठोर कदम उठाना चाहे, आप कोई भी हार्ड डिसीजन लें, जो डिसीजन इस युद्ध में देश को विजय दिलाने वाला होगा, उसमें मेरी पार्टी और एनडीए आपका साथ देगी। मैं यह बात आज ही नहीं कह रहा हूँ बल्कि जब मुंबई की घटना हुई थी, उसके चार दिन बाद हमारी पार्टी की कोर कमिटी की मीटिंग हुई थी, जिसमें हमने यह प्रस्ताव किया था, मैं इसमें से कोट करता हूँ:

"The four-day long terrorist attack on Mumbai, India's commercial capital, is a challenge that must be rebutted fully, visibly and tellingly. Given that Pakistan has totally rejected all requests of the Government, we expect the Government is assessing stern steps that are required to ensure that Pakistan desists from pursuing *Jihadi* terrorism. As a nationalist party the BJP shall stand by the Government in the effective steps it takes in this regard."

मैं हमेशा याद करता हूँ कि चाहे हमारे बहुत मतभेद रहते हैं और हम बहुत आलोचना भी करते हैं, कोई कसर नहीं छोड़ते लेकिन हम महाभारत के प्रसिद्ध कवि की बात को भूल नहीं सकते, जिसमें गंधर्व ने पाण्डवों और कौरवों पर हमला किया था और वे कौरवों को पराजित कर रहे थे, तब युधिष्ठिर ने अपने भाइयों को कहा कि जाकर कौरवों का साथ दो, उनकी सहायता करो। किसी ने कहा - आप क्यों उनकी सहायता करने के लिए कह रहे हैं तब उन्होंने कहा कि हमारे आपस में विवाद हैं लेकिन इस युद्ध के समय हम सौ नहीं एक सौ पांच हैं, "वयम् पंचाधिकरणम् शतम्"। अगर किसी दूसरे का सवाल आता है तो हम एक सौ पांच हैं। यह बात सबके लिए है। It applies to everyone.

मैंने जिक्र किया जो उन्होंने कहा कि ये नान-स्टेट एक्टर हैं। ISI itself is a non-state actor in a way. After all it is not under the control of the elected Government of Pakistan. It is answerable only to the army.

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY (PURI): Answerable to President.

SHRI L.K. ADVANI : I doubt it. I really doubt it. I am not only saying myself but even the spokesmen of the American Government, who are expected to know the functioning of Pakistan perhaps better, also admitted this fact to me. When she (Dr. Condoleezza Rice, US Secretary of State) came here, I posed her this question. मैं एक मुख्य समस्या जो पाकिस्तान से संबंधित है, उसके बारे में कहना चाहता हूँ कि मुझे समझ में नहीं आता कि वहां पर कौन अर्थोरेटी है? डेमोक्रेटिक देशों में जैसे हमारा देश है, यहां हर एक जानता है कि कौन फाइनल अर्थोरेटी है, लेकिन पाकिस्तान जैसा देश, जहां बहुत बार coup हुए हैं और कितनी बार आर्मी रूल आया है, वहां अब इस समय एक नाम है, तथाकथित प्रधानमंत्री भी हैं और राष्ट्रपति भी हैं लेकिन कौन अर्थोरेटी है? यह निर्णय करना आसान नहीं है। उनका कहना था और लगता है कि जो आर्मी चीफ हैं, वही सर्वोच्च हैं।

मुझे इस प्रसंग में एक बात और कहनी है कि पिछले दिनों विल्सन जॉन द्वारा लिखा गया एक बहुत परसेप्टिव लेख छपा था [r9] पायोनियर अखबार में। विल्सन जॉन ऑक्सवर्ड रिसर्च फौंडेशन में सुरक्षा के विषय में अनुसंधान करते हैं।

उसमें उन्होंने कहा है कि - There is evidence of a cabal within the ISI which noted Pakistani Scholar, Ahmed Rashid - who is an outstanding scholar - जिन्होंने एक पुस्तक लिखी है 'डिसेम्बलिंग टू वयास'. How it has descended into chaos? He calls an ISI within an ISI. यह जो कबाल है - this body may be primarily responsible for formulating and executing the Pakistani States Jihadi strategy in Afghanistan and India while giving the cover of deniability to the army and civilian establishments. Ahmed Rashid is an outstanding Pakistani Scholar on the Taliban movement in Afghanistan and Pakistan. He has described the "ISI within ISI" phenomenon in his latest book DESCENT INTO CHAOS: How the war against Islamic terrorism is being last in Pakistan, Afghanistan and Central Asia. This is something which needs to be studied in-depth. कि किस प्रकार से डिनारबिलिटी के लिए, यह हमने नहीं किया है, एल.ई.टी. ने किया है, तश्कर-ए-तैस्यबा

ने किया है और कुछ लोगों को जेल में डाल दिया, किसी को हाउस अरेस्ट में रख दिया, we should not be fooled by this kind of operation. हमें किसी धोखे में नहीं रहना चाहिए। यह कोई ऑपरेशन नहीं है, दिखावा है, छलावा है, धोखा है, प्रवचना है।

और यह बात केवल मात्र विल्सन जॉन और अहमद रशीद ने नहीं लिखी है, परंतु मैं देख रहा हूँ कि इस समय अमरीका में जो पाकिस्तान के एम्बैसेडर हैं, जिनका नाम हुसैन हक्कानी है, उन्होंने कुछ समय पहले यह लिखा था 'The most significant Jihadi group is Lashkar-e-Toiba which is backed by Saudi money and protected by Pakistani Intelligence Services'. This ISI is a Pakistani Intelligence Service. और फिर आगे हक्कानी ने 2005 में यह भी लिखा कि -'the ISI gave money and direction to the Islamic group as it conducted attacks in India in the 1990s. After 9/11 आई.एस.आई. ने इसी ग्रुप लश्कर-ए-तैयबा को पैसे देकर कहा कि कुछ समय तुप रहो, 9/11 हुआ है, इसीलिए हमारे ऊपर दबाव है, इसलिए तुम तुप रहो। उन्होंने इसका पैसा भी उन्हें दिया। ये सारी बातें, जो आज अमेरिका में पाक एम्बैसेडर हैं, उसने तथ्य दिये हैं - so that no one can challenge it.

मैं इन बातों का जिक्र इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि इन दिनों में हम भी पाकिस्तान पर दबाव डालने की कोशिश कर रहे हैं और समझते हैं कि अगर यू.एन. सिवियु रिटी काउंसिल में जाकर हम उनके खिलाफ बोलेंगे तो और प्रभाव होगा। लेकिन मुझे यू.एन. सिवियु रिटी काउंसिल का नाम सुनकर डर लगता है। इस नाते डर लगता है, क्योंकि हमारा कश्मीर का जो अनुभव है, उसे हमें कभी भूलना नहीं चाहिए। हम अपनी डिप्लोमैटिक शक्ति से, डिप्लोमैटिक कुशलता से जितना कुछ कर सकें, वह जरूर करना चाहिए। हम अपनी ताकत से जो कुछ भी इनके खिलाफ कर सकें, वह जरूर करना चाहिए, लेकिन हम उम्मीद करें कि यू.एन. सिवियु रिटी काउंसिल हमें बचावेगा, यह समस्या हमारी है और इस समस्या को हमें ही हल करना चाहिए। हमने जम्मू-कश्मीर की समस्या भी उस समय अगर हमने अपने बलबूते पर हल की होती तो हल हो गई होती। यू.एन. सिवियु रिटी काउंसिल में जाने का क्या परिणाम हुआ है, उसे हम काफी भुगत चुके हैं, दोबारा ऐसी गलती हमें नहीं करनी चाहिए। यह मेरा अनुसंधान होगा।

अध्यक्ष जी, आपने अचानक मुझे कह दिया, इसीलिए थोड़ी दिक्कत हो रही है।

MR. SPEAKER: Well, you are an expert.

SHRI L.K. ADVANI : Not at all.

MR. SPEAKER: Sorry for the inconvenience. It is such an important issue. You should not feel.

SHRI L.K. ADVANI : I am grateful to you. [r10]

हमें आश्चर्य नहीं होता है, जब वे ऐसा करते हैं। लश्कर-ए-तैयबा के लोग या उसके प्रमुख क्या बोलते हैं, क्या नहीं बोलते हैं, वह हमें ध्यान में रखकर चलना चाहिये। मैं इस बात को मानता हूँ और कई बार इस बात को कह चुका हूँ कि किसी आतंकवादी का कोई धर्म या मज़हब नहीं होता है। आतंकवाद एक अपना धर्म है लेकिन साथ ही साथ वास्तविकता यह है कि लश्कर-ए-तैयबा नाम की संस्थायें, जिन्हें पाकिस्तान ने आश्रय दे रखा है, उन पर बैन भी लगाती हैं तो दूसरे नाम से उन्हें चलने देती हैं। उनके नेता को गिरफ्तार भी करती हैं, तथाकथित गिरफ्तारी करती हैं और उन्हें हाउस अरेस्ट में रखती हैं, लेकिन जब यह मामला कुछ ठंडा हो जाये तो उन्हें सम्मान के साथ छोड़ देगी, पृथक् करेगी। लश्कर-ए-तैयबा का सुप्रीम धार्मिक और पॉलिटिकल हैड हाफिज़ मोहम्मद सैयद ने नवम्बर महीने में दिसम्बर की घटना के पहले कहा था :

"The only language India understands is that of force; and that is the language that it must be talked to. This is what the supreme religious and political head of LeT said." लश्कर-ए-तैयबा ने एक पम्फ्लेट ईशू किया। "While we are waging *jihad*", उसमें आगे लिखा है : "Its ideology goes beyond merely challenging India's sovereignty over the State of Jammu and Kashmir; it also affirms that its agenda includes 'restoration of Islamic rule over all parts of India'".

This is the thinking. यह चिन्तन है और इस चिन्तन की उपेक्षा नहीं करनी चाहिये। अगर हम इसके साथ लड़ना चाहते हैं, झगड़ना चाहते हैं तो हिन्दुस्तान के मुसलमानों को इस बात को समझाना चाहिये, उन्हें बताना चाहिये कि जिहाद के नाम पर इन लोगों के मंसूबे बड़े भयंकर हैं। Spiritual Islam is to be respected, but political Islam of this kind has to be countered and combated. This has to be understood. टैरिज्म का इस्लाम से कोई ताल्लुक नहीं है। पिछले दिनों यू.एस.ए. की सैक्रेटरी ऑफ स्टेट, मिस कॉन्डालिसा राइस मुझे मिलने आयी थीं...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Please sit down. You can reply to that later. Let there be a proper discussion.

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : जब वह मुझ से मिलने आयी तो मैंने उन्हें कहा कि आतंकवाद एक गम्भीर समस्या है, जिसमें हम चाहेंगे कि अमरीका जितना प्रभाव डाल सके, उतना डाले। लेकिन मैंने उन्हें यह भी कहा कि बार बार आतंकवाद को जस्टिफाई करने के लिये पाकिस्तान में अलग अलग लोग और विश्व में कई लोग कश्मीर का उल्लेख करते हैं। इस बात को समझना चाहिये कि इस में भारत कश्मीर विवाद का विषय नहीं था। हिन्दुस्तान में 530 रजवाड़े थे। उन सब में उस समय जो व्यवस्था थी, उस व्यवस्था के अनुसार केवलमात्र वहां के महाराजा ने निर्णय नहीं किया लेकिन वहां की जो जनप्रतिनिधि संस्था थी, उसे भी कहा गया, उन्होंने निर्णय किया कि हम भारत के साथ जायेंगे। अगर कश्मीर का कुछ हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में है तो उसका कारण नेकड अग्नेशन और इनवेज़न है। इस अग्नेशन के बारे में संसद में कुछ साल पहले सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित हुआ था कि यह हिस्सा भारत का हिस्सा है, वह हिस्सा कोई पाकिस्तान का हिस्सा नहीं है, भले ही कब्जे में उसके होगा। इस तथ्य को दुनिया को पहचानना चाहिये और अमरीका को विशेष रूप से पहचानना चाहिये क्योंकि समय समय पर अमरीका में ऐसे ग्रुप खड़े होते हैं जो यह समझते हैं कि समस्या हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की है, कश्मीर की है और अगर कश्मीर आजाद हो जाये तो समस्या हल हो जायेगी, वे इस गलतफहमी में न रहें। भारत किसी भी सूत्र में जम्मू-कश्मीर के मामले में कोई समझौता नहीं करेगा क्योंकि यह भारत का अभिन्न अंग है।[s11]

यह हमारी संसद का सर्वसम्मत प्रस्ताव है। हां, लश्कर-ए-तोइबा ने अपने पैम्फ्लेट में यह बात डिक्लेयर की कि हमारे तीन खास दुश्मन हैं और वे हैं - भारत, अमेरिका और इजरायल - as existential enemies of Islam. इसीलिए मुझे कोई आश्चर्य नहीं हुआ कि उन्होंने केवल ताज और ओबराय नहीं चुने, उन्होंने अपने इस टारगेट के लिए नरीमन हाउस को भी चुना। हमको इस आतंकवाद और इन आतंकवादी हमलों को पहचानना चाहिए। इसमें दो बातों के ऊपर टारगेट किया गया है, एक तो भारत की प्रगति होती गयी है और भारत आगे बढ़ता गया है, जिस प्रकार से यहाँ पर सब धर्म, सब मजहब, सब मत-मतान्तर एगजिस्ट करते हैं, यानी यहाँ पर सब आते हैं, यह देश ऐसा है जहाँ पर क्रिश्चियानिटी बहुत पहले आयी, सबसे पहली मस्जिद हिन्दुस्तान में केरल में बनी। जिस समय भारत आजाद नहीं हुआ था, अविभाजित भारत में, मैं कंरावी में रहता था।

MR. SPEAKER: Please do not do that.

...(Interruptions)

MR. SPEAKER: I am controlling him. Shri Ramdas, do not do this.

...(Interruptions)

अध्यक्ष महोदय : यह सही नहीं है। This running commentary will not be permitted. Whatever he is saying will not go on record.

(Interruptions)* â€

अध्यक्ष महोदय : आप बोलिए।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : मैं केरल का जिक्र कर रहा था। जहाँ पर सबसे पहला एक वर्त बन। जो कोचीन जाता है तो वहाँ पर यहूदियों का भी सिनागॉग दिखाते हैं। मैं स्वयं करांची का निवासी हूँ। मेरा जन्म वहाँ हुआ। मैंने अपने जीवन के पहले बीस वर्ष वहाँ पर बिताये। मेरे स्कूल में मेरे क्लासमेट कई ज्यूस थे। मैं जब 50 साल बाद इजरायल गया था तो मैंने उनमें से एक को ढूँढ निकाला। वे सारे अनुभव हैं, इसीलिए मैं इसको मानता हूँ। यह हिन्दुस्तान जिन परिस्थितियों में आजाद हुआ, भारत का विभाजन इस बात पर हुआ

* Not recorded.

कि मुस्लिम बहुमत कहाँ पर है और हिन्दू बहुमत कहाँ पर है? पाकिस्तान ने भले ही अपने को इस्लामिक राज्य घोषित किया हो, शियोक्वैसी स्वीकार की होगी, हमने शियोक्वैसी स्वीकार नहीं की। हमने कहा कि हमारा राज्य सेकुलर राज्य होगा जिसमें सब धर्म, सब पंथ बराबर होंगे, चाहे वे किसी भी धर्म व मजहब के अनुयायी क्यों न हों।

MR. SPEAKER: Please Mr. Ramdas, this is not the way to behave.

SHRI L.K. ADVANI : This is the civilizational ethos of India. यह सिविलाइजेशनल इथोस ऑफ इंडिया पर आक्रमण है। यह हमें पहचानना चाहिए। यह हमारी पूजा पर आक्रमण है। यह सिविलाइजेशनल इथोस ऑफ इंडिया पर आक्रमण है। इसको पहचानकर हम इसका सही उत्तर उनके दे पाएँ और इस उत्तर को देते हुए हम भारत के मुसलमानों को भी उसमें समाविष्ट कर सकें। जितनी मात्रा में हम कर सकेंगे उतनी मात्रा में ही हमने सही उत्तर दिया, यह कहा जाएगा। अभी-अभी रिसेन्टली मैंने देखा कि मुंबई की घटना के बाद कई स्थानों पर मुस्लिम समाज में गुरसा है कि यह क्या हो रहा है? इनके कारण हम यहाँ पर बदनाम हो रहे हैं। इनके कारण यहाँ पर मतभेद पैदा होते हैं। अभी-अभी हैदराबाद में इमाम और मौलवी इकट्ठा हुए थे। जमियत उलेमा हिंद ने इसका आयोजन किया था। उन्होंने आतंकवाद के खिलाफ प्रस्ताव पारित किया। कई लोग यहाँ आए और आतंकवाद के खिलाफ प्रदर्शन किया। मैं उसका स्वागत करता हूँ। प्रसिद्ध पत्रकार एम.जे. अकबर मेरे मित्र हैं। वे रेगुलरली आजकल टाइम्स ऑफ इंडिया में लिखते हैं। उन्होंने लिखा, वह मुझे बहुत अच्छा लगा। उन्होंने टॉरंटो स्टार में एक लेख लिखा, जिसमें कहा कि "I am an Indian and a Muslim and proud to be both. Like any Indian, today I am angry, frustrated and depressed. I am angry at the manic dogs of war who have invaded Mumbai."

12.00 hrs.

उन्होंने सही कहा और विदम्बरम जी हॉं कह रहे हैं, लेकिन उसका जो फॉलोइंग सैन्टेन्स है, उसको भी हॉं कहेंगे। उन्होंने कहा कि :

"I am frustrated by the impotence of my Government in Mumbai and Delhi. Tone- deaf to the anguish of my fellow citizens. And I am depressed at the damage of the idea of India."

वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री पवन कुमार बंसल): नहीं, यह ठीक नहीं है।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : धन्यवाद। इसीलिए मैं कहना चाहूँगा कि It is not just a failure of intelligence. क्योंकि मैं गृह मंत्री की बात मानता हूँ कि मैं उन सवालों को जो सब अखबारों में छपे हैं, अभी नहीं उठाऊँगा क्योंकि जो ड्राफ्ट प्रस्ताव मुझे दिया गया, उसमें कहा है कि हम रेव्यू करेंगे कि क्या कुछ हुआ, क्या कुछ नहीं हुआ जिसके कारण मुंबई की घटना हुई। इसीलिए मैं वे सारे सवाल नहीं उठाता हूँ लेकिन हॉं, पूछना जरूर चाहता हूँ जिससे वे परस्यू करें, मैं उसकी आलोचना नहीं कर रहा हूँ। I do not go by whatever has been published in the Press. आज सुबह के अखबार में केवल वैसल का नहीं बताया लेकिन वैसल के कोआर्डिनेट्स क्या हैं, यह भी बताया। गृह मंत्री ने अपने भाषण में कहा है कि नेवी को एलर्ट किया गया, नेवी को बताया गया। नेवी का कहना है कि वह उस समय हमारे टैरिटोरियल वाटर्स में नहीं था। लेकिन यह भी उन्होंने कहा है कि उन्होंने यहां से चोरी किया। वह कुबेर एक इंडियन शिप था जो गुजरात का था, जिसको उठाकर ये लोग ले गए। तो क्या हमें यह अधिकार नहीं कि इस प्रकार के जहाज़ को हम छुड़वाने के लिए कुछ करें? I do not know. The simple fact that they are outside the territorial waters of India, do they prohibit us from taking back our own vessel? Then from that point to the point where they reached by a rubber dinghy वह कितना डिस्टेंस है और कितनी देर उनको आने में लगी होगी। पर उसमें कोई कमी रही क्या? क्योंकि कुल मिलाकर अभी तक I do not know. It is not only that several seniors and veterans in the Government of India and the Government of Maharashtra have had to pay the price.

But the Home Minister himself, the first thing he did and rightly so, was that he said, 'I apologise to the people of Mumbai for whatever failure has happened.' Similarly, the Naval Chief has said something which has to be taken cognizance of and therefore it is that I feel that accountability in a democracy should not be confined only to the Home Minister or to the Chief Minister of a State. We have not placed that issue at all relating to the Prime Minister because we feel that within a short time the people of this country would have the opportunity to decide who should form the new Government. Therefore, formally we have not said that.

But this must be understood जो लोग समझते हैं कि आज जनता में गुस्सा नहीं है, गुस्सा है, बहुत गुस्सा है, और जो लोग समझते हैं कि क्योंकि दिल्ली में या राजस्थान में बीजेपी नहीं जीती, इसलिए Terrorism is not an issue. We will be underestimating the wisdom of the Indian people if we think in those terms. हम अगर दिल्ली में या राजस्थान में सफल नहीं हुए तो मैं उसका क्रेडिट कोई कांग्रेस को नहीं देता हूँ, अपनी कमी मानता हूँ। We have lost rather than Congress has won. But it is a different matter. It would be wrong to infer from this that in the minds of the people terrorism is not an issue. Terrorism is an important issue...(Interruptions) Therefore, it is that the House would like...(Interruptions)

MR. SPEAKER: Let it be discussed in a proper way.

...(Interruptions)

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : पिछले दिनों मेरे साथी अरुण शौरी ने एक विस्तृत लेख इंडियन एक्सप्रेस में लिखा, जिसमें संसद के बहुत सारे सवालियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से बार-बार यह बताया गया कि आगामी हमला समुद्र से हो सकता है। यह प्रधान मंत्री ने कहा, होम मिनिस्टर ने कहा, नेशनल सिविलिटी एडवाइज़र ने कहा, सबने कहा, डिफेंस मिनिस्टर ने कहा और उसके बाद भी यह हुआ है। [h12]

उसके बाद ऐसा क्यों हुआ? इसे आप रिव्यू करेंगे, इसकी मुझे सुशी है।

The National Security Advisor, Shri M.K. Narayanan has warned saying:

"There are many new schools that are being established on the Pakistan-Afghanistan border which now specialize in the training of an international brigade of terrorists to fight in many climes. Training has become rigorous. It is almost frightening in nature. Studies are being carried out about important targets with regard to vulnerability, access to poor security, absence of poor counter-terrorism measures. The sea route in particular is becoming the chosen route for carrying out many attacks even on land."

This is what the National Security Advisor has said. I am simply quoting this in order to see that the review which the Government undertakes as per the proposed draft resolution should take into cognizance all these facts.

मैं यह भी जानना चाहूंगा कि एनएसजी के कमाण्डोज़ को मुम्बई पहुंचने में इतनी देर क्यों लगी? उन्हें सूचना रात 11 बजे मिल गई थी, लेकिन वे सुबह पहुंचे थे, बहुत देर से। उसी प्रकार आईबी और रें के कोऑर्डिनेशन के बारे में, इंटेलिजेंस एजेन्सीज़ की सिनर्जी के बारे में आपने कुछ बातें कही हैं। मैं आशा करता हूँ कि उन सब बातों के बारे में आवश्यक कंसेटिव स्टैप्स उठाए जाएंगे।

मैं यह भी जानना चाहूंगा कि दाऊद इब्राहिम के बारे में मांग मुम्बई की इस घटना के बाद की गई या इससे पहले भी सरकार ने उसकी मांग पाकिस्तान सरकार से की है? यह बात कई बार कही जाती है कि दाऊद इब्राहिम किसी समय इस सारे आतंकवाद के काण्ड में लिप्त नहीं था और जिस कार्य में लिप्त था, उस कार्य से परिचित होने के कारण समुद्र के सभी रास्तों से परिचित हो गया कि कहां-कहां समुद्र के ज़रिए सामान लैण्ड किया जा सकता है, सब कुछ किया जा सकता है। इससे भी मुम्बई के कई लोगों को लगा कि इन सारी घटनाओं के पीछे भी उनका योगदान हो सकता है, तो आश्चर्य की बात नहीं है। लेकिन वह न भी हो तो भी यह बात सही है कि मुम्बई के टाडा कोर्ट ने वर्ष 1993 के बम विस्फोट काण्ड के लिए बहुत सारे लोगों को दण्डित किया है, उसमें उन्होंने घोषित किया हुआ है कि प्रमुख अपराधी दाऊद इब्राहिम आज तक एबस्कोपिडंग है, गिरफ्तार नहीं हुआ है, फरार है। उसके बारे में दुनिया जानती है कि वह एक अच्छे खासे बंगले में कराची में रहता है, पाकिस्तान ने उसको आश्रय दे रखा है। कोई कारण नहीं है, कोई जस्टिफिकेशन नहीं है, उसको हमें न सुपुर्द करने में। इसके अलावा हमने बाकी 20 लोगों की मांग की है, उनको हमें सुपुर्द करना चाहिए। इस बारे में भी क्या कार्यवाही अभी तक हुई है, क्या होने वाली है और कब तक होने वाली है?

इन्हीं शब्दों के साथ एक बार फिर से मैं पूरी दुनिया को और खास तौर से हमारे दुश्मन, जिन्होंने हमारे ऊपर आतंकवाद का युद्ध छेड़ रखा है, उनको कहना चाहता हूँ कि आज इस सदन का प्रस्ताव वास्तव में पूरे देश की दृढ़ता, निश्चय और संकल्प को प्रकट करेगा कि इस आतंकवाद के युद्ध पर विजय पाने के लिए पूरा राष्ट्र एक साथ है, एक मत है। सरकार और विपक्ष में कोई मतभेद नहीं है। भाषाओं, मज़हबों और संप्रदायों के कारण कोई मतभेद नहीं है। यह हमारे अंदर की डेमोक्रेसी है, जिसमें हमारे मतभेदों पर हम गर्व करते हैं। यह युद्ध की स्थिति है, इसमें हम सब एक हैं, इस बात पर मैं बल देना चाहूंगा। धन्यवाद।

MR. SPEAKER: Shri Milind Deora, are you in your seat?

SHRI MILIND DEORA (MUMBAI-SOUTH): No, Sir. I am sorry for it. Can I take your permission to speak from here?

MR. SPEAKER: Yes.

SHRI MILIND DEORA : Sir, I thank you for the opportunity to allow me to present my views on this important matter.

I understand that time is short and so, I will stay away from rhetoric and give as many suggestions as I can that the Government

can implement to ensure the safety and security of the nation.

At the outset, I would like to agree with the Leader of the Opposition that the people of India are concerned. They are asking important questions from all politicians. "Yes", as an MP of South Mumbai constituency, which was most affected by these attacks, people are asking questions naturally from the Government. But it is important to remind the opposition parties that they too are under the people's scanner. If people are criticising the Government for an alleged failure of Intelligence or for other security lapses, the people are also questioning the opposition for politicising the kind of investigation that were going on earlier and for changing their views from one point saying, we are against a particular person who is investigating these attacks and the next day joining the people of India and making those people martyrs.

If we politicise this issue, if we get into party differences, I think, we will never go beyond politics and we will fail to fight terrorism in its truest form. There are many stories of Mumbai that bring about emotions of sorrow and stories that inspire the people of this country. There are stories of bravery and there are stories of heroic efforts by the civilians in the city. I think more than the number of people who died in the Mumbai city, the traumatic effect that the attacks have left on the people of India who had to watch this incident play out over a few days, is what we should address at this point. If we as Parliamentarians, if we as legislators and policy makers across the entire political spectrum cannot put aside our petty differences and unite, I think, that would be the single-handed failure in fighting terrorism.

India is a solid state and India is a strong state. I have no doubt that the Government of the day will re-assure the people of India that they are going to undertake some of the most important steps to ensure that these attacks are prevented in the future.

I would like to make very pointed suggestions on what the Government of India should be doing. At the external level, we have heard about the United Nations refusing to ban certain terrorist outfits across the border. We have heard of another large neighbour's involvement in preventing these terrorist outfits from being proscribed. I think it is important that the Government, the Ministry of External Affairs, takes this up at the highest levels. Just before this discussion began, I was watching the news media and I learnt that now the United Nations Security Council has unanimously voted in favour of proscribing some of the most deadly terrorist outfits across the border, in Pakistan Occupied Kashmir.

At the internal level, it is very important that we in India, in the entire security establishment, both in the Defence Ministry as well as in the Home Ministry, take some very concrete steps. I think we need to re-look at our entire Intelligence's investigation capabilities and do our best to de-link them from politics.

There were questions raised about the NSG Commandos and the time they took to respond to these attacks in the Mumbai city. I am happy that the Home Minister of India has made an announcement that there will be NSG- style commando outfits raised in cities, like Mumbai, around the country. I think we have to spread them across the country, not just in western part of India, but also in other regions of India, like Kolkata in eastern region and in southern region so that we can rapidly respond to these terror attacks.

There are two parts to fighting terrorism. There is a preventive part and there is a response part. The response part involves everything, from a local police getting better equipment, better intelligence, better training, NSG-style outfit, etc. in different cities. But the key ingredient here is the preventive mechanism. That largely rests on the Intelligence's investigation capabilities. We all are aware that when it comes to maritime security, the Coast Guard of India is the lead Intelligence agency in preventing such things. [\[MSOffice13\]](#)

Based on reports going around, we must ensure that the coast guard continues to play this pivotal and important role and coordinates between the Intelligence, between the Navy itself and the State Police across different coasts around India.

Sir, I would like to laud the hon. Prime Minister's efforts and his consistent calls for a Federal Agency. I do not think any of us can stress the importance of having a Federal Agency that has not just intelligence-sharing and aggregation-capabilities, I repeat not just investigation-sharing and aggregation-capabilities, but I think more importantly prosecution capabilities. I think that is the key to having a strong federal anti-terror agency where the Central Government can work with the State Governments to ensure that while they have a pool of intelligence, they have a pool of investigative information, they can put that into action by ensuring effective prosecutions and convictions on time. I think to restore the peoples' faith in the entire security establishment -- and I do agree that security establishment is much more than political leaders, it is much more than the Union Home Minister and Chief Ministers -- the security establishment has a lot of faceless people also. So, to restore the people of India's faith in the entire security establishment, I think we can take a cue from what had happened in the United States after 9/11 where they appointed a '9/11 Commission' that went into the exact reasons of why 9/11 happened, whether there were any security lapses and then placed that Commission's report before the public. Those works led to certain actions that have prevented further attacks on countries like the United States.

Sir, if the hon. Minister and the Government of India would agree, appointing a Commission, that is, perhaps apolitical, perhaps even political, it could be on the lines of the Joint Parliamentary Committee; that can study this and place these findings before the people, I think that will go a long way in reassuring the people of India that the Government has understood the core reason for this problem and is taking the necessary steps.

Sir, I was present throughout the places that were attacked in Mumbai from 10.15 p.m. on Wednesday, the 26th of November. There are many people who are heroes, who have done a great deal of service to the city and to the nation and yes, we must compliment the efforts of people from the Anti-Terrorist Squad of Maharashtra Police like Shri Karkare, Shri Kamte, Shri Salaskar and Major Unnikrishnan from the NSG. There are also others who today are unsung heroes. That person is there, as the hon. Minister of Home Affairs rightly pointed out, who shielded the terrorist bullets and who led to the capture of one of the ten terrorists, who is going to bring India a wealth of information in terms of planning and will allow India to improve its investigation capabilities. All these people are heroes and all these people deserve our utmost kudos.

Sir, I think very briefly that we are all demanding answers to very important questions. But I do believe that if we come together as a polity, if we come together as a Parliament and we ask the right questions, we will get those answers. The key thing here is and I do agree with the hon. Leader of the Opposition on this point that if a terrorist belongs to a Muslim community, we should not say that they are linked to a particular community. We should see terrorists as terrorists and we should not defend anyone belonging to any community. That applies to all religions. That applies to the Hindus, to the Muslims and to the Christians. If there is any terrorist who is found across any religious community, no political party should come forward in defending that person. That I think is the key thing. If we can depoliticise this terror debate, that is the most basic thing that we, as politicians and leaders of this country, owe the people of Mumbai and we owe the brave NSG commandos, the Maharashtra Police personnel, the Government hospital staff and all the civilians who died in this attack.

Sir, with these few words, I conclude my speech and I am very confident that the Government of the day, the hon. Minister of Home Affairs in his reply, will ensure that many of these steps will lead to better national security and improving the entire security establishment.

मोहम्मद सलीम (कलकत्ता - उत्तर पूर्व): धन्यवाद, सर।

कुछ न करने से भी छिन जाता है, एजाजे सुखन,

तुप रहने से भी कातिल की मदद होती है।

इस सदन में, लोक सभा में 2004 से आज तक हर वर्ष 1-2 बार हम टैरिज्म अटैक्स, ब्लास्ट, विस्फोट, उससे हुई मौतों, शहादत, कुर्बानी और फिर उसका जायज़ा लेना और उसके लिए कुछ ठोक कदम, एकदामात उठाने के लिए हुकूमत के पास कुछ पेशकश रखना, यह करते आये हैं। मैं पिछले कुछ रोज़ से सारी इस 14वीं लोक सभा में जितनी बार चर्चा हुई, उसको मैं एक बार देख रहा था, उसका अवलोकन कर रहा था और गृह मंत्रालय के सामने जिन बातों को हम लोगों ने रखा, मैं यह बात इसलिए कर रहा हूँ कि मुम्बई के जो हादसे हुए, उसके बाद ऐसा कुछ हिस्सों से प्रकट करने की कोशिश की गई कि संसद, सांसद, राजनेता, राजनैतिक दल, इनकी इस मामले पर कोई चर्चा नहीं होती, कुछ बोला नहीं जाता, कुछ किया नहीं जाता और लोग मारे जा रहे हैं। वह एक गलत अंदाज़े बयां था। मैं किसी को डिफेंड नहीं कर रहा हूँ, मैं संसद को भी डिफेंड नहीं कर रहा हूँ, संसद भी अहकाक हुए हैं। अभी दूसरे तरीके से भी अटैक किया जा रहा है। यहां तक कि हमारी जम्हूरियत को, हमारे लोकतंत्र को, हमारे प्रतिष्ठानों को, जिन्हें और भी मजबूती प्रदान करनी है, यहां तक कि हमने एक टेलीविज़न चैनल पर देखा कि नेवल फोर्स कहां थी, यह भी सवाल उठाया जा रहा है। खामियां हैं, कमजोरियां हैं, लेकिन मुम्बई के जो वाक्यात हुए, जो अटैक हुए, उससे अगर हमें लड़ना है तो हमारी कमजोरियों और खामियों का रूट काज़ से एतान करने से हम नहीं लड़ पाएंगे, बल्कि उन खामियों और कमजोरियों को दूर करना पड़ेगा, उसका जायज़ा भी लेना पड़ेगा। लेकिन हमारी अपनी कॉम्पिटेन्सी लेवल को बढ़ाना पड़ेगा, क्योंकि जो अटैक कर रहे हैं, जिस तरह से वे हथियारों से तैस हो रहे हैं, जिस तरह से प्लान कर रहे हैं, जिस तरह से ट्रेनिंग ले रहे हैं, जिस तरह से उन्हें मदद मिल रही है, उससे हमारी सिक्वोरिटी के लिए जो इन्तजामात हैं, वे हमेशा, यह देखा जाता है कि नाकामी साबित हो रहे हैं।

मैं सबसे पहले, इस मंत्रालय में इस जिम्मेदारी में हमारे नये गृह मंत्री ने जो बयान दिये, उनका स्वागत करता हूँ, क्योंकि जितनी बार हमने दिसम्बर महीने से अब तक चर्चा की, हर बार तत्कालीन गृह मंत्री के सामने हमने ये सब बातें रखीं और जवाब के बाद यही कहा कि वह ठीक से एड्रेस नहीं हुआ। उन मुद्दों का आकलन सही ढंग से नहीं हो रहा है, यह क्षोभ बोलिये, दुःख बोलिये, परेशानी बोलिये, इस सदन में यह हमेशा होता है। नये मंत्री जी जिस तरह से कोशिश कर रहे हैं, उसको भी हम सराहते हैं। यह कोशिश की शुरुआत है।

सबसे पहले विपक्ष के नेता भी मंत्री जी के बयान के बाद जिस रिपॉर्ट और जिस भावना से यह चर्चा हुआ, हमें बहुत दिनों से इन्तजार था, मैं इसका स्वागत करता हूँ। पहली बार मैं कह रहा हूँ, इस सदन में हम चर्चा कर रहे हैं, इतने खून, कुर्बानी और जान देने के बाद, जहां पर वह छोटी-मोटी छेड़खानी, इससे उसको वह फायदा हो जाये, उसको वह नुकसान हो जाये, अपने-अपने रंगीन चश्मे से इसको देखने से हम बाज़ आये हैं। यह इस संसद के लिए और इस देश के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि है कि हम एक हैं। इस तरह से चुनौती का सामना करने के लिए हमारी बाकी सियासी, राजनैतिक कोई भी फायदे-नुकसान का अगर हिसाब करना है तो उसके लिए बहुत कुछ पड़ा हुआ है। वह यह नहीं है। 5 दिसम्बर, 2004 को जब यू.पी.ए. सरकार आने के बाद पहली चर्चा हुई। अब तो सब वीडियो रिकॉर्डिंग है, पिछले साल जब 13 दिसम्बर को यहां टैरिज्म के ऊपर चर्चा हो रही थी तो बड़ी नॉक-ऑफ हुई। सब अपना-अपना कोई बहाना, छोटे-मोटे जो बाकी मामले हैं, उनको बीच में ताने की कोशिश की गई। वह सब वीडियो वलीपिंग्स हैं। इससे हमने सबक लिया। पूरे देश के लिए यह मालूम होना चाहिए कि संसद, सांसद, राजनैतिक दल और राजनेता राजनीति से ऊपर उठकर राष्ट्रनेता बनने की कोशिश कर रहे हैं और एक साथ, एक तपज़ में इस वाक्य की कंडेमेंशन कर रहे हैं, मज़मूम कर रहे हैं।

दूसरी बात, इससे जब जीतना पड़ता है, लड़ना पड़ता है तो हमें सवालात उठाने पड़ेंगे। सवालात का मतलब यह नहीं है कि हम किसी को जरूरी कर रहे हैं। सवालात का मतलब यह है कि हम उस बीमारी का इलाज सही ढंग से कर सकते हैं, जिसको हम डाइग्नोज कर सकते हैं। अगर डाइग्नोज सही नहीं होगा तो हम उसका उपचार भी नहीं कर पाएंगे और इसलिए मुंबई के इस आक्रमण, टैरिस्ट अटैक, आतंकवादी हमले के बाद भी बहुत से सवालात उठे हैं। [R14] अखबारों में, टेलीविजन में, कई दिनों से जो लाइव टेलीकास्ट और एक्सटेंडेड टेलीकास्ट हो रहा है, मैं उस पर नहीं जाऊंगा, इस डिस्क्रीटिव बयान से हमें कुछ हासिल नहीं होने वाला है।

हम अपनी पार्टी की तरफ से आप सबके साथ और पूरे देश के साथ जुड़ते हैं। जिन्होंने शहादत दी, कुर्बानी दी, हमारी सिविलिटी फोर्सेज जिस तरह से बहादुरी के साथ लड़ी, तमाम परेशानियों के बावजूद भी जिस तरह से वे कामयाब हुए, इसके लिए हम उन्हें बधाई देते हैं। जो हमें छोड़कर चले गए, हमें उनके लिए बड़ा अफसोस है, हम उनके परिवार को भी अपनी इजहार-ए-अकीदत भी पेश कर रहे हैं और श्रद्धा भी दे रहे हैं। सिर्फ सिविलिटी फोर्सेज ही नहीं, उसके साथ-साथ जो सिविलियंस, इन्वैल्यूडिंग फोरेनर्स उनको भी श्रद्धा देते हैं। सरकार की ओर से जो कुछ भी उनके लिए करना चाहिए, उनके परिवार के लिए, उनके रिहैबिलिटेशन के लिए, वह करे। मुल्क के लिए जब कोई कुर्बानी देता है, तो मुल्क उसे भूल जाए, ऐसा नहीं होना चाहिए। एक मिसाल की तरह केन्द्र सरकार, राज्य सरकार और पूरे राष्ट्र की यह जिम्मेदारी बनती है। जैसा कि मिलिन्द देवड़ा जी ने कहा कि हमारे एटीएस के तीन बहादुर हेमंत करकरे, सातकर, अशोक काम्ठे की जिस तरह से उनकी जानें गयीं, उसके साथ शंजीव उन्नीकृष्णन और हमारे महाराष्ट्र पुलिस के साथी, खासकर तुकाराम, हम उन सबको याद करते हैं और उनकी देशभक्ति के प्रति नमन करते हैं। मुंबई के लोगों ने जिस तरह से बहादुरी दिखायी और जो लोग अफेक्टेड डायरेक्टली नहीं हुए, लेकिन पूरे मुल्क के साथ इनडायरेक्टली अफेक्टेड हुए, उनके साथ जो मुंबईवासी हैं, उनके साथ भी हम अपनी एकजुटता प्रकट करते हैं कि उनके ऊपर एक बहुत बड़ा हमला हुआ और वे उसके शिकार बने, जो उनके ऊपर प्रत्यक्ष रूप से नहीं लेकिन प्रत्यक्ष रूप से हुआ। इसके साथ-साथ रेलवे स्टेशन में जो आरपीएफ है, रेलवे स्टाफ है, वहां के कर्मचारी हैं, एक रेलवे स्टेशन में कई किरम के लोग अपने कामों में व्यस्त रहते हैं, पैसेजर्स भी और इसके साथ-साथ इन दोनों होटल्स के कर्मचारी और अधिकारी और जो रेजीडेंस और कस्टमर्स थे, उन सबके साथ भी मैं अपनी एकजुटता प्रकट करता हूं और उनकी बहादुरी की मिसाल हम हमेशा याद रखेंगे।

इस बात को कहते हुए, मैं समझता हूं कि बयान में भी यह बात आयी है, मैं इसमें ज्यादा नहीं जाऊंगा, लेकिन इस तरह के हादसे को रोकने का पहला कदम होता है कि हम किस तरह से अपनी इंटीलेंस को और भी चुरत करें और उसे ज्यादा मजबूती प्रदान करें। इंटीलेंस इसलिए कहा, क्योंकि गृहमंत्री जी, अगर आप पुराने डिस्कण्स को देखेंगे, मैं 5 दिसंबर, 2004 और 13 दिसंबर, 2007 के पार्लियामेंट के डिस्कण्स में वे तमाम सवालात आए कि को-आर्डिनेशन एमंग डिफेंड वैरियस एजेंसीज, अगर एवशनेबल कोई कोर्ट है, तो किस तरह से आप पास-ऑन करेंगे? हमारे स्टेट और सेंट्रल एजेंसीज हैं, उसके साथ किस तरह से को-आर्डिनेट रहेंगे? हमारी जो मिलिट्री और सिविलियन एजेंसीज हैं, उनके साथ किस तरह से को-आर्डिनेट करेंगे, इंटरमिनिस्टीरियल जो को-आर्डिनेशन है और हमारी कोस्ट लाइन के बारे में भी बातचीत हुई है। वर्ष 2003 से यह लंबित है कि साढ़े तीन हजार किलोमीटर की हमारी कोस्ट लाइन है, उसमें खासकर जो ईस्ट कोस्ट और वेस्ट कोस्ट है, उसको हम किस तरह से प्रोटेक्ट कर सकते हैं। उसके लिए अगर हम यह कहते हैं कि स्टेट पुलिस पांच किलोमीटर तक देखे, कोस्ट गार्ड बीस किलोमीटर तक देखे और उसके बाद नेवल फोर्स बाकी इंस्ट्रूमेंट में जो हमारा क्षेत्र है, उसे देखे, इसका आकलन भी करना पड़ता है। हम पिछले चार साल से इस सरकार से यह कह रहे हैं कि थ्रू परसेप्शन को हमें एसेस करना पड़ता है, जैसे इंडीविजुअल्स की करते हैं, पालिटिशियंस की करते हैं, बड़े-बड़े ओहदे के लोगों के लिए करते हैं, उसी तरह से हमारे मुल्क की भी करनी होगी।

आज हमें अच्छा लगा कि बयान देते हुए गृहमंत्री जी ने पहली बार यह कहा कि हमें मैरीटाइम एंड कोस्टलाइन की सिविलिटी को और भी ज्यादा ध्यान देना है, वरना हम पिछले पांच साल से जितनी जवाबत एक्सप्रेस कर रहे हैं, मलक्का से लेकर श्वेज तक, सब बेकार हो जाएगी। इस सबसे हम अपनी मिलिटेंट सिविलिटी को सिविलिटी करने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन जो हमारा कोस्ट है, उसको हम नजरअंदाज कर रहे थे। हम मिलिटेंट सिविलिटी की बात करते हैं, बेशक वह रहेगी। आप आज या पिछले कई दिनों के अखबार देखिए तो यह देखने को मिलेगा कि जब इनपुट्स मिले हैं कि पाकिस्तान से जहाज में एलईटी अपने जहाज को लेकर हम पर अटैक करने आ रहे हैं, वे कितने डिग्री पर कहां पर हैं, उनकी पोजीशन पता चल रही है, यह कहां तक सच है या झूठ है, हम तो नहीं समझ सकते, लेकिन ये बातें आ रही हैं। इस घटना बाद हमने देखा कि एक के बाद एक एजेंसीज अलग-अलग बयान दे रही हैं कि उनका कसूर नहीं है, उनका कसूर है और वे कहते हैं कि उनका कसूर नहीं है, उनका कसूर है। हम इस तरह से कब तक अंधेरे में घूमते रहेंगे। यह तो पोलिटिकल डिस्कॉर्स भी नहीं, आफिशियल है, चाहे रिटायर्ड आफिसर्स के नाम में हो, चाहे कोर्ट आफिसर्स के नाम में हो, चाहे मीडिया के दबाव में हो, अलग-अलग से बयानबाजी शुरू हो गयी कि हमने तो दे दिया था, उसके बाद नहीं आए, ए से बी प्वाइंट गए, बी से सी गए, सी से डी गए, लेकिन कहां मिस हो गए, हमें नहीं मालूम। [p15]

That points out a further coordination. हम जानते हैं कि हमारे पास कोआर्डिनेशन की एक संस्था एमएसीसी (मल्टी एजेंसी कोआर्डिनेशन कमेटी) है, लेकिन वह कहां तक कारगर है, कहां तक काम कर रही है, वह सरकार को देखना पड़ेगा। जब बहुत सी एजेंसीज होती हैं तो उन्हें एक जगह सूत्रवत करने के लिए तमाम इंटीलेंस इनपुट्स होते हैं, इंटीलेंस का मतलब यह नहीं है कि हम हार्ड खबर इकट्ठी करें। उसे एनालैसिज़ करने की जो जरूरत होती है, उसमें फिर हमारी अपनी जो सोच है और जो पार्ट एक्सपीरिंस है, उसके साथ उसे क्रास एग्जामिन करना पड़ता है, फिर उसके अंदर से एवशनेबल डायरेक्ट्स निकालना पड़ता है, फिर जो एजेंसीज हैं उन्हें वे डायरेक्ट्स देंगे। लेकिन इसे करने के लिए जैसे हम शेयर मार्किट के इंडेक्स देखते हैं, एनएसई इंडेक्स देखते हैं। मैंने सुदू दिसम्बर, 2005 की डिबेट में यह कहा था कि हमारा नेशनल सिविलिटी इंडेक्स है, सिविलिटी एजेंसीज, नेशनल सिविलिटी काउंसिल को यह करना पड़ता है कि किस तरह से उसके तारतम्य हो रहे हैं, उतार-चढ़ाव हो रहे हैं, कहां से वह ज्यादा होगा, कब वह नार्थ-ईस्ट में ज्यादा हो रहा है, कब कश्मीर में ज्यादा हो रहा है, कब मुंबई या वेस्ट कोस्ट में हो रहा है, साथ में कैसे हो रहा है, क्योंकि हमारे जो औपेनॉट्स हैं, जो हमें अटैक करना चाह रहे हैं, वे भी अपनी स्ट्रैटेजी बदलते रहते हैं, टैक्टिक्स लेते रहते हैं, तो हम भी फिक्स एंड स्ट्रेट लाइन में नहीं चलते। उसके लिए हमारे नेशनल सिविलिटी इंडेक्स के कई इनपुट्स हैं - फॉरेन पॉलिसी परसेप्शन, दूसरे मुल्क की स्ट्रैटेजी, साथ एशिया के बारे में, हमारे मुल्क के बारे में जो सोच है, हमारे अपने मुल्क की जो अंदरूनी पोलिटिकल और सोशल सिचुएशन है, इकोनॉमिक सिचुएशन है, हमारे मुल्क के अंदर चाहे किमिनल एक्टिविटीज हों, चाहे टैरिज्म हो, चाहे सैवटेरियन पोलिटिक्स हो, उनके जो रोल्स होते हैं, भूमिका होती है, उसके साथ देश के बाहर क्रास बार्डर टैरर करके जो हमें भेजना चाहता है, उन तमाम सवालातों के बारे में मैं बहुत जल्दी से बोलना चाहता हूं। इन सबको लेकर उसके बाद सिविलिटी इंडेक्स का मामला रहता है और उसी के मुताबिक हमें वह करना पड़ता है। कहीं न कहीं हमारे यहां नाकामी हुई है, कमजोरी हुई है, चूक हुई है। मैं किसी को कटघरे में नहीं खड़ा करना चाहता, कोई समरी ट्रायल नहीं होना चाहिए, कोई मीडिया ट्रायल भी नहीं होना चाहिए और यह भी अच्छी बात है जो आपने बयान में कही कि अभी सब डिसवलोप नहीं करना चाहिए कि इन्वैस्टिगेशन में क्या-क्या मिला, यह भी एक नई परम्परा है। हम पिछले 10-12 सालों से देख रहे हैं कि कोई विस्फोट हो जाए, कोई आतंकी हमला हो जाए, कोई भी ऐसी घटना हो जाए, वह क्यों हुआ, कैसे हुआ, उससे पहले दूसरे दिन प्रैस कॉन्फ्रेंस करके या किसी स्रोत को कोट करके कह दिया जाता है कि हमने उसे बर्रट कर दिया, हमने उसे अरैस्ट कर लिया, हमने कमांडर इन चीफ को पकड़ लिया, हमने उसके बाद उसे जेल में डाल दिया और जो स्लीपर सैल था और जो टैरर नेटवर्क था, उन्हें हमने बर्रट कर दिया। हमारे जैसे इतने बड़े मुल्क में इतनी परेशानियों के आलम में, खासकर हमारी जो साथ एशियन जियो-पोलिटिकल सिचुएशन है, वहां इतना आसान नहीं है कि एक वाक्या हो जाए और दूसरे दिन गृह मंत्रालय के कोई अफसर हों या किसी स्टेट या शहर के पुलिस कमिश्नर हों और वे बयान देकर कह दें कि बाकी सब ठीक हो गया। बाद में हम देखते हैं कि वह कहीं का नहीं रहा। अवसर केसेज़ में ऐसा होता है। यह अच्छी बात है। This is also a new trend that you are setting. I must appreciate that कि अभी हमें डायवल्ज करने की कोई जरूरत नहीं है, उसके ऊपर काम करना पड़ेगा और फिर हमें

हार्ड एवीडेंस का जुगाड़ करना पड़ेगा, उसके बाद चाहे हमारे मुल्क में हो, चाहे दूसरे मुल्क में हो, चाहे पाकिस्तान में हो, उसके अगेन्स्ट हमारे एवीडेंस इकट्ठे करके फिर उसके ऊपर कार्रवाही करनी पड़ेगी, कार्रवाही करने के लिए मजबूर करना पड़ेगा, जिस एजेंसी को करना है। यह अच्छी बात है। लेकिन मैं समझता हूँ कि मिलिन्द देवरा जी ने कहा कि जो एजेंसीज़ हैं, मैं नाम नहीं बोल रहा हूँ, यह सब कुछ इकट्ठा करने के लिए आपने नेशनल सिक्योरिटी काउंसिल बनाई, सेंक्रेटोरिएट बनाए, नेशनल सिक्योरिटी एडवाइज़र बनाए, तो सिर्फ गृह मंत्री, पाटिल साहब की आपने छुट्टी कर दी। मुम्बई का वाक्या वया यहीं तक है? मुम्बई में जो अटैक हुआ और हम जो पूरे विश्व को कह रहे हैं, जिस तरह से हमारे ऊपर हमले हुए, जो नुकसानात हमारे हुए, सिर्फ फिज़िकल नुकसानात नहीं, all taken together, तो और भी जो बातें हैं जिन पर माथापट्टी करनी थी, जो माथापट्टी नहीं की, अगर मैं स्पैसिफिक कहूँ तो नेशनल सिक्योरिटी एडवाइज़र ने पिछले चार साल सिक्योरिटी को लेकर बातचीत कम की, उन्होंने फॉरेन पॉलिसीज़, पोलीटिकल पार्टिज़र के अंदर मीटिंग और व्हीफिंग करना ज्यादा किया। उन्हें आप फॉरेन पॉलिसी एडवाइज़र कर दीजिए। [N16] एक मंत्रालय से दूसरे मंत्रालय में भेज दीजिए। जिसकी जहां एक्सपर्टिज़ हो सकती है, वह वहां अच्छा काम कर सकते हैं। हमें ऐसा प्रूतिष्ठान चाहिए जो हमारे मुल्क को सिक्योर करने के लिए प्राइम मिनिस्टर को सही मशविरा और मदद दे सके। यह कोई व्यक्ति का मामला नहीं है, एक प्रूतिष्ठान है। उस प्रूतिष्ठान को सही ढंग से मैन करना पड़ेगा और हमें जो जिम्मेदारी दी गयी है, उस जिम्मेदारी की एकाउंटेबिलिटी एस्टेबलिश करनी पड़ेगी। विदाउट एस्टेबलिशिंग एकाउंटेबिलिटी हम बहुत ज्यादा दूर तक नहीं जा पायेंगे। इसी तरह मैं बाकी और नाम न लेते हुए कहना चाहता हूँ कि एकाउंटेबिलिटी एस्टेबलिश करना बहुत ज्यादा जरूरी है।

इसके साथ-साथ जिस तरह से अभी कोस्टल अटैक हो रहे हैं, आप जानते हैं कि जब कारगिल में अटैक हुए थे, इंटूज़न हुए थे, वह लैंड से हुए थे। डिमालय पहाड़ी क्षेत्र था और पाकिस्तानियों ने वहां इनफिल्ट्रेशन किया। हमारे यहां सब लोगों ने कहा कि वह फेल्योर है। हो सकता है कि उस वक्त गवर्नमेंट ऑफ़ डी डे पहले मानने के लिए तैयार नहीं हुए। मैं इसमें किसी बहस में नहीं जा रहा हूँ, लेकिन उसके बाद कमेटी बनी, चूंकि अभी कमेटी की बात आयी। उसके बाद फिर वया हुआ, कहां तक पहुंचा? अक्सर ऐसा होता है कि हमारे यहां कोई सिस्टेमिक फेल्योर होता है, छोटा-मोटा जब फेल होता है, तो हम बोलते हैं कि ह्यूमन फेल्योर है इसलिए उसके नीचे वाले को सजा दे दो। लेकिन जब कोई बड़ा फेल्योर होता है, तो उसके लिए कहते हैं कि वह सिस्टेमिक फेल्योर है और सिस्टेमिक फेल्योर में वहां कोई ह्यूमन फेस हमें देखने को नहीं मिलता है। बाद में उस सिस्टम को सुधारने के लिए हमने वया-वया किया और उसका वया नतीजा निकला, वह राष्ट्र के सामने, देश के सामने, संसद के सामने हम नहीं लाते। हम समझते हैं कि यहां पर सिस्टेमिक फेल्योर है। सिस्टम को इपूव करने की जरूरत है और उसके लिए एकदम तह तक जाना पड़ेगा और जाने के बाद फिर वह राष्ट्र को मालूम होना चाहिए कि कहां हमारे से चूक हो गयी और उसको सुधारने के लिए हमने वया-वया बंदोबस्त किये। नहीं तो कभी-कभी ऐसा होता है कि एक घटना हो गयी, तो उसके बाद एक और नयी संस्था बना दी। एक संस्था के बाद दूसरी संस्था बना दी और दूसरी संस्था के साथ तीसरी संस्था बना दी। बाद में यह समस्या हो जाती है कि फिर उन संस्थाओं के बीच में हमारी एक फ्यूज़ल मैनटैलिटी भी है। मैं अखबार में पढ़ रहा था कि बम्बूवाल्स जैसे हम आयरन कर्टन बोलते हैं वैसे हम अपने-अपने बम्बूवाल्स बनाकर कहते हैं कि यह हमारा इलाका है, यह अपना क्षेत्र है और यह उनका क्षेत्र है और फिर कोआर्डिनेशन नहीं होता। जैसे एकदम आयरन कर्टन नहीं होना चाहिए वैसे वह बम्बूवाल्स भी नहीं होना चाहिए कि बांस को बेड़ा बनाकर हम एक नयी संस्था बना दे और फिर उसको अलग कर दें। उसके कोआर्डिनेशन का मामला है, इसलिए मैं बार-बार इस तरह से जोर दे रहा हूँ।

दूसरी बात एक और है। आज यह स्पष्ट है कि ये जो अटैक हुए, अब तक जो कुछ सरकार से मालूम हुआ कि इन हमलावारों ने पाकिस्तान की जमीन से ट्रेनिंग ली, मदद ली, जहाज लिये और फिर हमारे यहां हमले किये। इसलिए हमारी पार्टी ने कहा, क्योंकि ऐसी सितुएशन होने से उसमें बड़ा माहौल बनता है, इमोजनल होते हैं। जहां तक हमारे इंडो-पाकिस्तान के रिलेशन का मामला है, तो वलो हम वीर पराक्रम बने, आपरेशन पराक्रम करें। 13 दिसम्बर को जब यहां हमले हुए, तो उन हमलों को पाकिस्तान द्वारा ही माना गया कि वहां से वे ऑरिजिनेट किये गये और वे क्रांस बार्डर टैरिज्म का हिस्सा है। हमने फिर आपरेशन पराक्रम किया। हमने टेलीविजन में देखा कि मेरठ की छावनी से हमारी फौज निकल रही है। उन्हें तिलक लगाया जा रहा है, माला दी जा रही है और फिर वह बार्डर तक गये। बाद में जो अंडरग्राउंड माइन्स लगाई गई थीं, उनसे हमारे किसानों को परेशानी भी हुई। उन्हें हमें मुआवजा भी देना पड़ा और कुछ जानें भी गयीं। मैं मिलिट्री स्ट्रेटिजिस्ट नहीं हूँ। अगर उसके लिए कोई ऐसा स्ट्रेटेजी का हिस्सा है, तो वह ठीक है लेकिन हम समझते हैं कि उस वक्त वया था-दी गवर्नमेंट ऑफ़ डी डे उस ऑपरेशन पराक्रम को आपरेट कर रही थी और मीडिया उसे टैप कर रहा था। इस बार ऐसा हुआ कि मीडिया ने ही जंग छेड़ दिया और गवर्नमेंट को कहा कि तुम हमारे साथ चलो। हम गन लेकर चले गये, बम लेकर चले गये जंग करने के लिए, आप हमारे साथ-साथ चले आओ। यह जो इंटरनैशनल रिलेशन का मामला है और जो दो देशों के बीच का मामला है यानी टैरिज्म का जो सवाल है, उसे कुछ व्यक्तियों ने कह दिया कि कारपेट बॉम्बिंग होना चाहिए, उसे कारपेट मालूम है, बम मालूम है लेकिन कारपेट बम वया है, वह नहीं मालूम है। लेकिन वह एक्सपर्ट्स के द्वारा, चूंकि हमारी मीडिया बहुत स्ट्रॉंग है इसलिए वह बह जाने की कोशिश करते हैं लेकिन हम नहीं बह गये, यह अच्छी बात है। लेकिन हम कुछ नहीं कर सकते, यह भी नहीं है। हमें करना पड़ेगा, यह हम सब शिकायत कर रहे हैं कि कर्टिन एक्ज़स पार्टी लाइन कि टैरिज्म का जो सवाल है, आज यह एक अंतर्राष्ट्रीय मामला है। आज से नहीं कई, दो दशक से हम देख रहे हैं कि किस तरह से यह बढ़ता जा रहा है। दूसरी बात है कि जो दूसरे वेस्टर्न वर्ल्ड थे यूएस, यूके, उनके तट पर जब यह समस्या थी, जैसे बिजनेस में आउटसोर्स कर देते हैं, उसी तरह से टैरिज्म का हादसा और परेशानी थी, उसको वह अपने तट से आउटसोर्स कर दिया और वह एशिया में आकर पड़ा। अब हम उसे साउथ एशिया को मान रहे हैं। यह साउथ एशिया के लिए एक बड़ी चुनौती है। [MSOffice17]

अब हम उसे साउथ एशिया का मान रहे हैं, यह दक्षिण एशिया के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। अगर हमें आज के आतंकवाद से लड़ना है, आतंकवाद का आज जो रूप है, उससे लड़ना है, तो उसे किसी एक धर्म, मजहब, जाति, भाषा या प्रदेश के नजरिए से नहीं देखा जा सकता है और उसी तरह से किसी एक विशेष देश के नजरिए से भी नहीं देखा जा सकता है। दक्षिण एशिया में हम आतंकवाद के शिकार हुए हैं। यह बात सही है कि पाकिस्तान की जमीन का इस्तेमाल हिन्दुस्तान के ऊपर हमला करने में किया जा रहा है। इसके लिए हमें 9/11 के बाद यूनाइटेड नेशन्स सिक्योरिटी काउंसिल द्वारा पारित किए गए रिजोल्यूशन नंबर 1373 को देखना चाहिए, जिसमें कहा गया है कि यूएन का कोई भी सदस्य देश अगर अपनी जमीन का इस्तेमाल करने की इजाजत देता है दूसरे मुल्क में हमला करने के लिए, टेरर नेटवर्क को पनपाने के लिए तो उसके ऊपर कार्रवाई करनी पड़ेगी। हम आपको बधाई देते हैं कि आज ही यूएन सिक्योरिटी काउंसिल में एक प्रस्ताव पास हुआ। हम कोई नया इनिशिएटिव लेने की बात नहीं कह रहे हैं, 9/11 के वाक्य के बाद, यूएन सिक्योरिटी काउंसिल का मिडनाइट सेशन बुलाकर वह रिजोल्यूशन पास किया गया। हम जब मुंबई में आतंकवाद के शिकार हुए तो हम बेशक इसे यूएन सिक्योरिटी काउंसिल को रेफर कर सकते हैं। यहां आदरणीय विपक्ष के नेता जी से मेरा मत कुछ भिन्न है, उन्होंने कहा कि यूएन सिक्योरिटी काउंसिल क्यों? उसके साथ कश्मीर का मामला, नेहरू का मामला आदि बातें कहते हुए वे अपने एजेंडे पर चले गए, लेकिन हम समझते हैं कि 9/11 के बाद यूएन और पूरा विश्व टैरिज्म के खिलाफ लड़ने के लिए वचनबद्ध है, कम से कम कागजी तौर पर। इसलिए जब हम हमले का शिकार होते हैं तो पूरे विश्व को हमें यह बताना चाहिए कि तुम इसे कागजी मत रखो, इसे कारगर बनाने के कोशिश करो और उस जगह पर अगर हम पूरा अण्डा सिर्फ अमेरिकी बास्केट में डाल देंगे तो उससे हमें कुछ हासिल नहीं होगा। इसलिए कोडोलीजा राइस अगर भारत आए, वह इंडिया और पाकिस्तान में चाहे जंग हो या पीस हो, मीडवाइफरी का रोल प्ले करें, तो उससे हमें तसल्ली नहीं है, बल्कि इसके लिए जो मल्टीलैटरल एजेंसी है, यूनाइटेड नेशन्स, हमें उसे बताना चाहिए। हम शुरुआत से ही यूएन से जुड़े हुए हैं। हमें यह यूएन को भी बताना है कि आपका एक मेंबर स्टेट हमारे नजदीक में, हमारे बॉर्डर में यह काम कर रहा है, आपकी सिक्योरिटी काउंसिल का यह रिजोल्यूशन है, इसके तहत वह काम नहीं कर रहा है, हमारे पास ठोस सबूत हैं, आप उसे मजबूर करो। इसे डिप्लोमैटिक एडवांटेज भी मिलता है। पाकिस्तान को भी मजबूर होना पड़ेगा। आज पाकिस्तान के जो वर्तमान सदर हैं, वह भी सदर बनें क्योंकि मोहतरमा बेनजीर भुट्टो की टैरिस्ट अटैक में शहदात हुई। यह बात पाकिस्तान के लोगों और सियासतदां को भी समझना होगा कि अगर हम दहशतदगर्दी के शिकार हैं और होते रहेंगे तो पाकिस्तान की जमीन भी नहीं बचेगी। दूसरे के लिए कब खोदने पर खूद को भी उसी कब में जाना पड़ता है। इसलिए इस बात को जिस तरह से पूरी दुनिया को बताना है, उसी तरह से

पाकिस्तान को भी बताना है। मैं न्युयार्क टाइम्स में आसिफ अली जरदारी का लेख पढ़ रहा था, कम से कम लेख में तो वह कुछ कह रहे हैं, इसलिए हमें अपना दबाव बढ़ाते रहना होगा कि आपको एक्शन लेना है। इससे पाकिस्तान के अंदर जिस तरह से दहशतगर्दी के काम करने वाले लोग हैं, उसी तरह से अमनपसन्द, शांतिकामी लोग भी हैं, तो उन लोगों के लिए भारत की ओर से जैसे जाना चाहिए कि आप अपनी हुकूमत को मजबूर करें, इसमें आपका भी हित होगा और हमारा भी। आज पाकिस्तान हॉट-बेड क्यों बना है, साउथ एशिया की ऐसी स्थिति क्यों हुई, क्यों हम मल्टीटैटरल बोल रहे हैं? पिछले 20-25 सालों से अफगानिस्तान में जो कुछ हुआ, वहां पाकिस्तान की जमीन का इस्तेमाल करके टेरिस्ट मैनुफैक्चरिंग की जो मशीन बनाई गयी, हम उससे अपने आप को अलग नहीं कर सकते हैं। आज हम उसी अमेरिका से कहेंगे कि आप उस समस्या को दूर कर दो जिस परेशानी का सबब वही है। ... (व्यवधान)

श्री तरित बरण तोपदार (बैरकपुर) : उनकी पॉलिसी यही थी।

मोहम्मद सलीम : वह ठीक है, रोल वेंज होते रहते हैं। आज चाइना का एक डिस्सा, साउथ-वेस्ट चाइनीज प्रॉक्सि, रशिया का चेचन्या प्रान्त, इरान का अफगानिस्तान से लगा हुआ स्टेट, पाकिस्तान खुद और हम, ये सभी इस तरह के टेरिज्म के शिकार हैं, जिसे पनपाया गया एक ब्लूप्रिंट तैयार करके [R18] धर्म का इस्तेमाल किया गया, मज़हब का इस्तेमाल किया गया और कहा गया, Islam is in danger in Afghanistan. उसे बचाने के लिए ये सब मातृक एक हुए। नजीबुल्ला को फांसी दी गई, यू.एन. के सिवयोरिटी कैम्प से, दूतावास से बाहर निकालकर, तो हमें अफसोस है कि उस वक्त हमारी संसद में बहुत से लोग, जब वे मुजाहिदीन आए, बर्बाद करने वाला नजीबुल्ला गया, तालियां मारकर स्वागत कर रहे थे। मैं उस वक्त राज्य सभा का सदस्य था। हमने कहा था कि यह अफगानिस्तान का मामला अफगानिस्तान तक नहीं रहेगा, वह रिपल ओवर करके पाकिस्तान तक जाएगा। आज जो पाकिस्तान के फातहा इलाके में आपरेशन चल रहा है, वे वहां के लोगों को मजबूर कर रहे हैं और पाकिस्तान की फौज वहां अनविलिंबली लड़ाई लड़ रही है, अमेरिका के कारण नहीं लड़ रही है। लेकिन उसका रिपल ओवर हमारे तट पर होगा, हमारे मुल्क में होगा, यह हमने कहा था। इसलिए पिछले साल दिसम्बर में जब हमारे मुल्क में चर्चा हो रही थी आतंकवाद की, उस समय हमने यह कहने की कोशिश की कि जो अफगानिस्तान और पाकिस्तान में हो रहा है, उसका रिपल इफेक्ट और रिपल ओवर हमारे मुल्क पर होगा और उसके लिए हमें तैयारी करनी होगी।

कश्मीर में इस यूपीए सरकार को उपलब्धि हासिल हुई है, यह भी ठीक बात है। वहां पर मिलिटैरी, इंसेंसी और आतंकवाद पर काबू पाने में बहुत हद तक रोका गया है, वे फेल हुए हैं, क्योंकि वहां की जनता ने उन्हें सपोर्ट नहीं किया। चुनाव के वक्त भी देखा गया कि percentage of people's participation, वह जाहिर बात है कि उनके द्वारा अपने दायरे को बढ़ाने की कोशिश की गई, जो कौंस बॉर्डर टैरिज्म स्पॉंसर कर रहे थे कि हम किस तरह इसे और ज्यादा क्षेत्रों में ले जाएं। हम क्या उन क्षेत्रों को मजबूत करेंगे, यह बड़ी बात है। आज दुनिया में "इस्लामिक टैरिज्म" की बात हो रही है। वैस्टर्न वर्ल्ड जिसे वलैश ऑफ सिविलाइजेशन बोल रहा है, एक नया तत्व पिछले दस साल से खड़ा हो गया है। एक तरफ वे कहते हैं कि Islam is in danger. इसे बचाओ, आरडीएक्स लो, तलवारें लो, दूसरी तरफ वे कहते हैं, There is danger in Islam. तब वह वलैश होता है। हमारे मुल्क में भी ऐसी शक्तियां हैं, ऐसी ताकतें हैं, जिनके दिमाग में यह बात बसी हुई है कि Yes, there is danger in Islam. दूसरी तरफ Islam is in danger. जो फंडामेंटलिस्ट रिलिजीयस ग्रुप हैं, उनकी एक ही सोच है कि चाहे इसके लिए मजहब का इस्तेमाल किया जाए, तो क्यों। वह कोई भी हो सकता है, वह किरिश्चियन हो सकता है, सिख हो सकता है, हिन्दु धर्म हो सकता है। If we allow religious sentiment to be exploited as a tool for political mobilisation, social mobilisation, उसका एक्सप्लोइटेशन होगा, ओवर शूट करेंगे। हम कम्युनल बिल्डअप करेंगे, फंडामेंटलिस्ट बिल्डअप करेंगे, लेकिन कहीं न कहीं डैमोक्रेटिक दायरे के बाहर चुनाव का हथियार नहीं रहेगा, वोट का हथियार नहीं रहेगा, वह कहीं न कहीं ओवर शूट करेगा। एक धर्म के खिलाफ दूसरा धर्म ही नहीं, उसी धर्म के लोग भी शूटअप होंगे। आज पाकिस्तान में आतंकी घटना होती है, तो वह नॉन मुस्लिम देखकर नहीं होती। जब मुम्बई पर हमला हुआ, छत्तुपति शिवाजी टर्मिनस में जो इन्डिस्ट्रिमीनेट ए.के. 47 लेकर गोलियां चलाई गईं, तो किसकी क्या भाषा है, कौन मराठी है, कौन उतर भारतीय है, कौन मुसलमान है, उसका आकलन किसी ने किया। जब हम शिकार होते हैं, भाषा, धर्म और प्रदेश से ऊपर उठकर होते हैं, तो इससे ऊपर उठकर हमें इससे लड़ना भी पड़ेगा, तब ही हम यह चुनौती स्वीकार कर सकते हैं, तब ही हम लड़ सकते हैं। अगर हम अलग-अलग ग्लास से देखेंगे तो हमारा नुकसान होगा। हमारा नुकसान इसलिए भी हुआ कि यह जो कौंस बॉर्डर आतंकी वहां से आए, हम अपने बच्चों को, अपने नौजवानों को रिक्रूट करके उस जगह नहीं धकेल सकते। अगर उसके अंदर कांफिडेंस इंस्टिबल नहीं कर सकते, अगर स्टेट मशीनरी जेनरेट नहीं कर सकते, अगर हम इन्साफ नहीं देना सकते, अगर हम ऐसा जो कम्युनल बिल्डअप करते हैं, उनके साथ जुड़ा नहीं सकते, राजनीतिक दल जिम्मेदारी के साथ इससे ऊपर उठकर नहीं सोचते तो फिर ऐसा माहौल बनता है, कुछ लोग जो इसे दूर तक ले जाना चाहते हैं वे हमारे मुल्क के खिलाफ उसका इस्तेमाल करेंगे। यह बात हम बार-बार कहते रहे हैं। इसलिए हम समझते हैं कि prevention is better than cure. हम सिर्फ यह समझें कि हम औजार से तैस हो जाएंगे, मुल्क को और ज्यादा सिवयोरिटी स्टेट बना देंगे, मिलिटरी को और ज्यादा पावर दे देंगे, मुल्क को मिलिटरी स्टेट बना देंगे, बेशक इसकी जरूरत है। हम यह भी कहना चाहते हैं कि पाकिस्तान खुद एक सिवयोरिटी स्टेट है, पाकिस्तान ने डेमोक्रेसी से कोई अनुभव नहीं लिया, जब भी लिया तो वहां एबोर्टेड हुआ, जब भी वहां लोकतंत्र आने लगा, उसकी मिलिटरी को एनोरमस पावर मिली। उसकी सिवयोरिटी एपार्ट्स को एनोरमस पावर मिली। [R19] वहां के ह्यूमन राइट्स को उन्होंने सिवयोर नहीं किया, पीपल राइट्स को सिवयोर नहीं किया। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उसका मुल्क सिवयोर हो गया या उसकी नेशनल सिवयोरिटी हो गयी। हमारी नेशनल सिवयोरिटी की जो अवधारणा है और जैसा माननीय आडवाणी जी ने भी कहा कि हमारा जो कल्चर इथोस है, सिविलाइजेशन इथोस है, हजारों साल से जो हमने अपने मूल्यों को बचाए रखा है, उन्हें हमें अब भी बचाए रखना पड़ेगा, संवारे रखना पड़ेगा, उसे हम नुकसान पहुंचाने नहीं दे सकते, उसके साथ छेड़खानी होने नहीं दे सकते। पाकिस्तान की परेशानी यही है कि वह उन मूल्यों से हट गया है, भारतवर्ष के जो मूल्य हैं, उनसे वह हट गया है, लेकिन हम उनसे नहीं हट सकते हैं। हमारा जो सेवयुलर फैबरिक्स है, हमारे जो सेवयुलर इंस्टीटयुशंस हैं, उन्हें हमें बनाए रखना पड़ेगा, संजोए रखना पड़ेगा, तभी हम इस वलैज का मुकाबला कर सकते हैं। अभी सरकार कह रही है कि हम नेशनल इंवेस्टीगेटिव एजेंसी बनाएंगे, लेकिन ज्यादा जरूरत इस बात की है कि उसमें हमारे स्टेट्स और सेंटर का जो रिलेशन है - to get the States onboard. वह हम एक को छोड़ करके दूसरे से व्यवहार नहीं कर सकते। उसमें बैटर ववार्डिनेशन, बैटर मैकेनिज्म चाहिए। साथ में बिल का कॉपी चाहिए, फाइन बिल चाहिए कि आप क्या बोल रहे हैं, आप क्या करना चाहते हैं, उसे हम देखेंगे।

इस मुल्क में हमने कहा है कि चुनौती को स्वीकार करने की हमें विंता करनी चाहिए और उससे निपटने के लिए हम सबको एक होकर खड़ा होना पड़ेगा। Unity is the buzzword. इसके साथ-साथ जो कॉफिलिक्ट्स इश्यूज हैं उनको हटाना पड़ेगा और जो कॉमन इश्यूज हैं उन्हें सामने लाना पड़ेगा। आपको यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि मिली है कि पूरा देश एक होकर खड़ा हुआ है और इस उपलब्धि को आपको आगे भी ले जाना पड़ेगा। इस सेशन में ऐसा कोई सवाल हुकूमत की तरफ से नहीं आना चाहिए जो इस हाउस का बंटवारा कर सके, इस हाउस को बांट सके। अगर prevention of money laundering है, चूँकि टेलर की जो मेक-वर्क है, उसके जो फाइनेंस होते हैं, उन्हें रोकना पड़ेगा, लेकिन आप इसी बहाने देखें कि चलो एक नया नेशनलिस्ट वातावरण तैयार हुआ, मुल्क के पीछे सब लोग खड़े हो गये, चलो हम इंश्योरेंस सेक्टर को थोड़ा डायलूट कर दें, हम गृह मंत्रालय में आये हैं। तमाम फाइनेंस बिल्स को भी नहीं लाने की कोशिश करें, जहां पर लोग एक राय नहीं हैं।

MR. SPEAKER: Keep that for the occasion.

मोहम्मद सलीम : यह सब वहां करो, जहां नेशनल कॉन्सेंसस है, जिस मामले में लोग इकट्ठा हैं उस काम को आप करो। जिस मामले में युनिटी नहीं है, उस काम को आप पीछे

करो। हमें पूरी उम्मीद है कि इस सत् के डिस्कशन में हम सब और पूरा देश जिस तरह से एक साथ होकर खड़ा हुआ है हम केवल पाकिस्तान को ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया को यह मैसेज देने में कामयाब रहेंगे कि हमारे मुल्क के साथ, हमारे मुल्क के इतोहाद के साथ, हमारे अवाम के वैन और सुकून के साथ छेड़खानी मत करो। इस घरती से हमने पिछले पांच हजार सालों से शांति की वाणी सुनाई है और उस शांति को बिगाड़ने की अगर कोई कोशिश करेगा तो हम भी उसे सबक सिखाने से बाज नहीं आयेंगे। धन्यवाद।

MR .SPEAKER: Now, the hon. Leader of the House, the Minister of External Affairs to intervene, Shri Pranab Mukherjee.

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI PRANAB MUKHERJEE): Thank you, Mr. Speaker, Sir. First of all, I would like to express my thanks to all the three hon. Members who have made their contributions up to now, and many more who would be participating.

While making his Statement, my colleague the hon. Home Minister pointed out that I would intervene to point out certain external factors and elements associated with this attack. Had it been merely confined to a law and order situation arising out of the violent attack, perhaps there would have been need of my intervention as the External Affairs Minister. But all of us are fully aware, and has been pointed out now that the epicenter of this attack and not only this one, but also series of attacks prior to this attack – is located in a neighbouring country.[\[r20\]](#)

Mr. Speaker, Sir before I proceed I would through you like to make an appeal. Perhaps, this is one of the debates of this House, which will draw maximum international attention : we are meeting immediately after the attack. Its international dimension have been noticed since 26th of November and is still continuing. Concerns have been expressed by a large number of leaders from the international community. More than 16 Heads of the States and Governments have spoken to the Prime Minister over telephone and expressed their concerns. Almost every Head of the State or Government have sent written messages. I have received a very large number of calls from my counterparts all over the world, and most of them not only expressed their solidarity with us but they have also expressed their confidence that India would be able to overcome this problem.

MR. SPEAKER: I want to also inform that I have got messages from the Presiding Officers of the National Assemblies of many, many countries, to share our agony.

SHRI PRANAB MUKHERJEE: Thank you, Sir.

So, this is the atmosphere in which we are discussing this issue. Democracy is always accompanied by dissension but at the same time there are occasions when keeping aside dissension on minor issues, we unite on major issues, and we express our views in a united manner. Therefore, this is one such occasion I would like to suggest to hon. colleagues that all of us should rise to this occasion.

Sir, 164 precious lives were lost. More unfortunately is that of these 164“every death is unfortunate but it this much more“more than 26 persons who lost their lives belong to other countries. They were our guests. When I expressed condolences to the Foreign Ministers of those countries, the first thing I did was that I conveyed my apology, my regret to the 13 Foreign Ministers whose citizens were killed, including the Foreign Minister of Israel. I said that they were our guests and we could not protect them, I sincerely apologize to you. Of course, most of them pointed out that it is not our fault because terrorism has assumed a dimension which is not confined to any individual country and not confined within the territorial boundary of any State. It has really become cross-border. It has really become an international phenomenon.

We have expressed our sense of outrage and the anger which the Indian people have felt. Had it been a single occasion, perhaps, it would not have happened to this extent and would not have assumed that level of anger and sense of outrage which we have witnessed this time.[\[m21\]](#)

13.00 hrs.[\[k22\]](#)

When this event was taking place, when the attacks were going on, just a couple of hours before that, I was in bilateral talks with the Foreign Minister of Pakistan who was in India as my guest and who has come to India on my invitation. The next day we were to attend a joint seminar at Chandigarh essentially to discuss how to further improve the people-to-people contact and improve the relationships between our two countries. This attack took place just then. Of course, after that, it was not possible for me to go to Chandigarh. The Pakistan FM returned after two days. I will come to this aspect a little later.

But, with reference to the depth of anger and the sense of outrage in the country, our people expect us, the people expect this country to come to the occasion and to come to a resolute action which will convey the message that the territorial sovereignty, the territorial integrity of this country cannot be played with, it cannot be ignored and nobody should dare to attack us. This

message must be conveyed.

Look at the series of events which have taken place and the location of recent bomb attacks. Jaipur is a most important tourist centre, Bangalore is the hub of Indian intellectuals and science and technology, Ahmedabad is one of our important industrial centres and Mumbai is the financial capital, the commercial capital of India. Are these mere coincidences? Are these only accidental? Or, is there a design? There is a method behind these. This is not the time to dissect the entire framework because that will take some time. Most respectfully I would like to submit that whatever be the depth of our anger, we shall also have to keep in mind that this is a phenomenon which cannot be easily switched off or switched on. We shall have to patiently confront it. Those who have propagated the thesis of inflicting thousand cuts upon us after failing to win a battle or defeat this country in open armed conflict, they have done so as a deliberate exercise to cause great harm to this country but this country has grown from strength to strength.

We are not provoked. We have no intention to be provoked. All sorts of propaganda have been built up. That we have mobilised our Armed forces, that we have suspended air link, stopped every other activity etc. Nothing in fact has happened. Yes, we have conveyed our sense of outrage and have [\[k23\]](#) conveyed the depth of our feeling. I talked to the Pakistan Foreign Minister over the phone on 28th of November and every word of it was from the written text as per the diplomatic norms and every word of this conversation is on record.

A canard was spread simply depending on a hoax call that India is going to attack Pakistan that our Armed Forces are mobilized; and that the Indian Foreign Minister has threatened the Pakistan President over the telephone. Most respectfully, I would like to submit that I have great respect for Mr. Asif Ali Zardari, President of the Republic of Pakistan, but I have conversation with him only once and that was when I visited Pakistan in May 2008 and called on him. This was before he became the President and he was the Leader of his Party. It was the first and the last conversation that I had with him. Nobody would believe and particularly in the case the establishment of a duly constituted Government as to how can the Foreign Minister of one country simply pick-up the phone and talk to the President of another country? These things cannot be done. These calls are fixed in advance. Even if the Foreign Minister speaks to another Foreign Minister, the time is fixed; the call is fixed; and all these things are routed through the Foreign office. This type of things does not happen. But what is worrying us is that if the establishment of a duly constituted Government believes in these types of things and tries to act on it, then it may sometimes cause major problems.

Various issues have been raised from the Foreign Ministry angle, and I would like to respond to some of them. Mr. Advani has suggested that we should go to the United Nations Security Council (UNSC). Mr. Salim has suggested that we should build-up an international campaign. I agree with both. Yes, we should build-up international campaign against terrorism; we should build-up campaign; and we should talk to all the countries concerned that this is not an India-Pakistan issue. This is not an issue related to the Jammu and Kashmir. This is an issue and a part of the whole issue of global terrorism. In almost every Annual Session of the UN General Assembly we, from India, have been tabling a Resolution that it is high time that there should be a Comprehensive Convention to deal with the problem of cross-border terrorism, it is the biggest menace to world peace and tranquillity in the post cold-war era. Unfortunately, it has not been possible to achieve this yet, but we are trying, and will continue to do so.

We must keep in view that international relations depend on very delicate relations, and we should not try to distort situation. We have our own domestic problems, and the Government of the day will have to deal with that. But this is an issue where adequate pressure has to be built-up and adequate pressure is being built-up. [\[r24\]](#)

This is an assurance that I can give you. I have spoken to more than two dozen Foreign Ministers and all of them agree – this is just not our view, this view has been shared by a large number of countries with whom we had interactions and with whom we had discussions – that they came from Pakistan and the whole exercise required long-term planning. It is just not that somebody comes with AK-47 rifle and indiscriminately fires and kills people and then try to run away, or killed. It is not like that at all in this case.

A most important dimension of this terrorist attack is that for the first time a terrorist attack in India has targeted foreigners – targets were the Jews and other foreigners present. I have talked to my counterparts and informed them of the steps we have taken. Formally, I spoke to the Pakistan's Foreign Minister on 28th evening around 7-7.30 p.m., which was followed up by what is described in the diplomatic language as a 'speaking note'. Thereafter, on the 1st of December, we lodged a formal demarche. There we urged that they must take action against certain organizations which are indulging in terrorist activities and a number of fugitives who have committed crimes in India and who have violated the Indian laws are taking shelter there. We said: "Please arrest them and hand them over to us".

The Leader of the Opposition wanted to know whether we have taken up the extradition and return of Dawood Ibrahim. This has been done in every meeting with Pakistan at the level of the Home Secretary, at the level of the Foreign Secretary and at the four meetings of the Joint Anti-Terror Mechanism. We have given them a list of 42 persons – not one; not 20, but a list of 42

persons. We have also pointed out that mere denial is not going to resolve the issue. We said that you may deny, their existence but how are you going to convince your own people when these faces appear on the television screen?"

I have been asked or suggestions have been made to me as to why I am not responding when some arrests have taken place in Pakistan. As per newspaper reports, some camps have also been closed. My response is very simple. I was waiting for the Parliament to commence its sittings. I will respond here that Please follow it up seriously as exactly the same scene was played after the attack on Parliament in 2001. Therefore, action has to be carried to its logical conclusion by banning the organizations and by complete dismantling of the infrastructural facilities available on that side to facilitate the terrorist infiltration and terrorist attacks in India. Lashkar-e-Toiba is a banned organization in Pakistan. [\[r25\]](#) But by simply changing names and changing signboards, its activities have continued. How does that help us? Places are the same; ideologies are the same. The headquarters and activities are the same.

I am glad to inform you that this morning the UN Security Council has declared Jamat-ud-Dawa, the latest outfit of Lashkar-e-Toiba, as a banned organisation. Four people, including those who we suggested are listed as terrorists by the UNSC. We are told that in the names included is that of Hafiz Sayed. We were told by an international interlocutor that there was information that this man was arrested. However, within twenty minutes I heard from our Mission that this man was appearing on the television screen in an interview.

Masood Azhar has been house-arrested. What does 'house arrest' mean? The law in Pakistan is the same as the Indian Penal Code. The criminal laws are the same. In criminal cases there are two kinds of custody that could be contemplated - one is judicial custody and the other is police custody. Is this a convincing step?

I have no quarrel with the democratic Government of Pakistan. We welcome the return of democracy to Pakistan. Perhaps I was amongs the first Foreign Ministers to visit Pakistan after this new Government was installed. On behalf of the Government of India I conveyed our sincere desire to take steps to move forward and to build up our cooperation. I invited the Foreign Minister of Pakistan to come and also to participate in a seminar in Chandigarh jointly to explore the possibilities of enhancing people-to-people contacts.

On the question of the non-state actors, are the non-state actors coming from heaven? Are they coming from a different planet? The non-state actors are located in the territory of a particular country. These non-state actors are operating from within a particular country. What we are most respectfully suggesting to the Government of Pakistan is that please act. Mere expression of intention is not adequate.

We have been assured by Pakistan in this regard not once but twice. On the 6th of January, 2004 - Shri Advani was the Deputy Prime Minister and Shi Atal Bihari Vajpayee was the Prime Minister then – President Musharraf in his joint statement with Prime Minister Vajpayee gave the solemn assurance that Pakistan's territory will not be allowed to be used by terrorists. This was reiterated on 24th September, 2008 by another President of Pakistan, President Asif Ali Zardari. But, you find that terrorists are still coming from Pakistan.

The Home Minister has more information. It appeared in some newspapers that the controllers of these attacks, those who were conducting the attack when the action was underway,were instructing them to do this and do that, are in Pakistan. We do feel sometimes, I do agree with Mr. Salim in this, that we have to draw many lessons from this. In their anxiety to beat the other channels in publicity, some channels were showing crowds of people on the screens. Instructions then came to the terrorists to throw a grenade at the crowd so that they would run away.[\[KMR26\]](#)

Some lives were lost. Because of the anxiety to get publicity. If the camera was not focused there and if the crowd was not seen them by those who were monitoring from outside, perhaps these things would not have happened. So, we have to draw the lessens where to stop and where to pause.

Our brave soldiers have sacrificed their lives, a graphic picture of which has been given by the Home Minister : the way the Maharashtra ASI took bullets in his body to facilitate the capture of the terrorist by the other police personnel, we, the ordinary mortals, cannot even think of such sacrifices. Hats off to him. I salute our security people. When they were sacrificing their lives, from a safe distance, if somebody thinks that he will defeat his competitors by getting larger viewers by giving updated news, he may serve the interests of the company but surely he or she will not serve the interest of the nation. Most respectfully, I would like to submit that is the lesson we have to draw of where to stop and where we have not to go.

Mr. Speaker, Sir, I read the article of President, Asif Zardari in the *New York Times*. I have full sympathy for him when he says that events of Mumbai reminded him of the time when Benazir was assassinated hot dead. There is a book written by Mrs. Benazir Bhutto and published in Great Britain by Schuster Limited in 2008. I am just quoting one point that will reflect the internal situation. I quote:

"But in Pakistan things have almost never as they seem. There are always circles within circles. Rarely straight lines. This was meant to look like the work of Al-Qaeda and the Taliban and I do not doubt that they were involved. Elements from within the Pakistani Intelligence Services had actually created the Taliban in the 1980s and certain elements sympathised with Al-Qaeda ideologically and theologically. Some had recruited for and worked with it. I had identified those I suspect in my letter to the General..."

`General' means President Pervez.

"... before my return."

This is written by whom? If she was alive, she would have become the Prime Minister of Pakistan today or President.

Now, that may be the internal situation. This is exactly what I told my interlocutors that you shall have to appreciate it and do not try to have a general straightjacket formula that this is a dispute between India and Pakistan, Kashmir is the bone of contention, solve the problem of Kashmir and everything will be in place.

Mr. Speaker, Sir, most respectfully I would like to submit, I do not believe in this straightjacket simple formula. It is a complex situation. I have no doubt of that. We want to encourage democratic institutions and the democratic system in Pakistan but it is not for us to decide how. We cannot deliver this. It is for the people of Pakistan, it is for the institutions of Pakistan and it is for the civil society of Pakistan to undertake this job. And most respectfully I would like to submit that simply by raising hysteria that a big power is going to attack Pakistan and trying to divert the attention, taking the plea of a hoax call from the Indian Foreign Minister to the Pakistan President is not going to yield results. [r27]

We expect some positive steps from Pakistan. Of course, it is for them to decide. Most respectfully I say that we have suggested several times, in all international and in all bilateral fora, in our dialogue and in our communication with them that please deny them sanctuary accept the facts and try to resolve the situation and that we are ready to help. While having discussions with the Prime Minister over phone, it was offered that Pakistan DG, ISI would be coming to India. But within hours, this was denied. That may be the internal problems of Pakistan, but how is it going to help India? If they are not able to resolve their internal problems, they will have to find a way out. The international community can only help them.

But we cannot completely ignore history. In the name of preventing the advance of communism, they are armed to the teeth, resulting in rise of the Taliban. I remember a conversation between two former Prime Ministers some time in the early 1980s. I can mention the names of the former Prime Ministers. It was Mrs. Indira Gandhi and Mrs. Thatcher. I was the eye witness and it was a breakfast meeting. In reply to a question Smt. Gandhi asked, "Tell me, is there a single shot from Pakistan that had been fired in any direction, other than India?" There was no answer.

We are fully aware of the situation I am not indulging in jingoism or I am not indulging in any such sort of things. But I am simply expressing my anger. This is the feeling of the Indian people. We have to deal with them – I know that I cannot change my neighbour and I cannot live with my neighbour in perpetual tension. That is the policy that we have been following. But we expect that the issues will be addressed, the issues cannot be ducked and issues cannot be sidelined.

Mr. Speaker, Sir, with these words, I conclude.

Sir, I most respectfully submit that I have circulated a draft of the Resolution to the hon. leaders. After this, we can sit with them, if they want to have some sort of a discussion. But as the very nature of the debate, the rule under which it is being discussed, it does not end in the adoption of a Resolution. So, it cannot be the outcome of the discussions, because if I understand correctly, you are allowing this discussion under rule 193; and normally the Parliament expresses its sense through a substantive motion, either under rule 184 or something like that. But they are technical issues. It does not matter, and so, at the end of the debate, we can adopt the Resolution.

MR. SPEAKER: You may leave the issue of rules to me.

SHRI PRANAB MUKHERJEE: I am leaving it to you, Sir. You are the master and you will look into it. We express our views on this.

श्री मोहन रावले : हम कितने दिन पाकिस्तान के साथ चर्चा करते रहेंगे? आपने कहा कि पाकिस्तान के खिलाफ सबूत हैं, तो पाकिस्तान पर अटैक क्यों नहीं करते?

SHRI PRANAB MUKHERJEE: That is not the point. That is not the issue. I am making it quite clear that that is not the solution. Let us be very clear and frank that that is no solution. Thank you.

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण-मध्य): वहां से हमारे देश में आतंकवादी घुस रहे हैं ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Thank you very much.

I also thank the Leader of the Opposition. I am obliged to all the leaders for their cooperation.

The House stands adjourned to meet again at 2.15 p.m.

श्री रामजीलाल सुमन (फ़िरोज़ाबाद): उपाध्यक्ष महोदय, मुम्बई में आतंकवादी हमले में जो निर्दोष नागरिक मारे गए, सुरक्षाकर्मी मारे गए और न सिर्फ हमारे देश के लोग, बल्कि दुनियां के कई अन्य देशों के लोग भी मारे गए। हम अपनी ओर से, सबसे पहले उन सभी लोगों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। मैं आपकी मार्फत सरकार से आग्रह करना चाहूंगा कि जो पीड़ित परिवार हैं उनकी ज्यादा इमदाद करने की जरूरत है।

महोदय, इस चर्चा का जो लम्बो-तुबाव है, इस चर्चा की जो भावना है, वह यह है कि मुम्बई में आतंकी हमले के बाद, आतंकवाद से लड़ने के लिए पूरा देश एकजुट होकर खड़ा हो गया है। यह बात सही है कि हम लोग हिन्दुस्तान में अलग-अलग पार्टियों के लिए काम करते हैं, हमारी विचारधाराएं अलग-अलग हैं, हमारे सोचने का तरीका अलग है। जब अन्य विषयों पर चर्चा होती है, बहस होती है, तो हम अपने-अपने दलों की जो राय होती है, उसे व्यक्त करते हैं, लेकिन इस चर्चा का सीधा मतलब है कि हमारे दलों से महत्वपूर्ण अगर कोई चीज है, तो वह देश के लोग हैं। देश की सुरक्षा, देश की प्रतिष्ठा और देश की इज्जत, दलों की मर्यादाओं से कहीं बड़ा सवाल है।

महोदय, एक भारतीय होने के नाते, इस संकट की घड़ी में जो हमारा दायित्व है कि हम सब लोग मिलकर खड़े हो जाएं। यह संदेश हम पूरी दुनियां को देना चाहते हैं और भारत सरकार से यह कहना चाहते हैं कि पूरा देश आपके साथ है और आतंकवाद से निपटने के लिए जितनी दूरी तक आप जा सकते हैं, उतनी दूरी तक आप जाएं। इसके लिए आपको पूरी आजादी है, लेकिन देश के लोगों को इससे राहत मिलनी चाहिए।

महोदय, अभी आडवाणी जी बोल रहे थे। अभी पांच राज्यों में विधान सभाओं के चुनाव हुए और जब चुनाव हो रहे थे, तभी मुम्बई पर आतंकवादी हमला हुआ। मैं स्वयं सोचता था कि निश्चित रूप से यह एक मुद्दा बनेगा क्योंकि यह गम्भीर मामला है, लेकिन चुनाव में आतंकी हमला, मुद्दा नहीं बना क्योंकि इसका सीधा कारण यह है कि अब तक हमारे काम करने का जो तरीका रहा है, वह ऐसा रहा है कि भले ही श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार रही और चाहे डॉ. मनमोहन सिंह जी की सरकार हो, लोगों का दृष्टिकोण यह बन गया, गुरसा है कि इस सवाल पर दोनों गम्भीर नहीं हैं, दोनों घिसी-पिटी भाषा बोलते हैं और कार्रवाई में, एक्शन में कुछ दिखाई नहीं देता।

महोदय, इस सदन पर हमला होने के बाद, श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा कि अब तो आर-पार की लड़ाई होगी। मुम्बई में जब हमला हुआ और सरकार के जिस प्रकार के बयान आए, उनसे कुल मिलाकर देश के लोगों का विश्वास टूटा है और लोग चाहते हैं कि कोई भी सरकार हो, लेकिन सरकार इस मुद्दे पर आर-पार की लड़ाई लड़े। यह देश का अवाम, देश की जनता चाहती है।

महोदय, मैं ऐसा सोचता हूँ कि सब कुछ होने के बावजूद भी यह चुनावी मुद्दा नहीं बन पाया। जहां एक ओर हम पाकिस्तान को इसका दोषी मानते हैं, वहीं मैं कहना चाहता हूँ और गृह मंत्री जी यहां बैठे हैं, मैं उनसे प्रार्थना करना चाहता हूँ कि हमारा जो सिस्टम है, हमारी जो व्यवस्था है, हमारी जो पुलिस है और हमारे जो सुरक्षाकर्मी हैं, वे आज के इस दौर में, पुराने तौर-तरीके से नहीं चलेंगे। इसलिए नए तरीके से कुछ सोचने की आवश्यकता है। भविष्य में इन आतंकी गुटों से जैविक आक्रमण हो सकता है, रासायनिक आक्रमण हो सकता है और आणविक हथियारों के हमले हो सकते हैं। इसलिए मेरा आग्रह है कि बदलती हुई परिस्थितियों में आपके जो सुरक्षा बल हैं, उनके पास यदि अत्याधुनिक हथियार नहीं होंगे और अत्याधुनिक तकनीक से वे तैय नहीं होंगे, तब तक उनसे अच्छे परिणामों की अपेक्षा नहीं की जा सकती है।

हमारी फौज की सुफिया एजेंसी है। इसी तरह की कोई सुफिया एजेंसी बनाई जा सकती है। लेकिन जैसा मैंने आपसे आग्रह किया कि नये संदर्भ में, नई बदलती हुई परिस्थितियों में हमें नये तरीके से उनके बारे में सोचना होगा। जो सबसे दुख की बात है, तकलीफ की बात है, वह यह है कि सुरक्षा एजेंसियों में आपस में कोई तालमेल नहीं होता। बकौल गृह मंत्री जी के रें का कहना है कि हमने नौसेना को पहले ही कह दिया था और हमारे पास सूचना है कि समुद्र के रास्ते हमला हो सकता है, जबकि नौसेना के लोग मना करते हैं। तटों की सुरक्षा का जिम्मा जिस कोस्ट गार्ड पर है, उनके पास पर्याप्त रफतार की जो नावें होनी चाहिए, वे नहीं हैं। अफसोस की बात है कि कई वर्षों से ये योजनाएं फाइलों में दबी पड़ी हैं। गृह मंत्री जी, मेरा आपसे आग्रह है कि तटों की सुरक्षा का जो काम है, इसके सिलसिले में सरकार जो कुछ करना चाहती है, मेहरबानी करके उन फाइलों को निकालकर तत्काल यह व्यवस्था दुरुस्त कैसे हो सकती है, इसमें विलम्ब करने की आवश्यकता नहीं है।

उसमें एक व्यावहारिक दिक्कत यह भी है कि सूबों का जो खर्चा है, उसमें तमाम राज्य सरकारें अपेक्षित सहयोग नहीं करतीं। यह ऐसा अवसर है कि देश की प्रतिष्ठा दांव पर लगी है, निर्दोष लोग मारे जा रहे हैं। इस अति संवेदनशील सवाल पर हर राज्य के लोगों को बुलाना पड़े, मुख्यमंत्रियों को बुलाना पड़े, उनसे बात करनी पड़े, उनका जो हिस्सा है, उसको सुनिश्चित करने के बाद इस पर प्रभावी कार्रवाई होनी चाहिए। यह एक असल और बुनियादी सवाल है।

हालांकि यह कांग्रेस पार्टी का सवाल है, सरकार का सवाल है। मुम्बई ब्लास्ट के बाद दो पार्टियों का बलिदान हो गया, यह समस्या का कोई हल नहीं है। जो मूलभूत और जड़ की समस्या है, उसकी ओर आप जाइये। श्री शिवराज पाटिल गृह मंत्री नहीं रहे, उनकी जगह विठ्ठलराव साहब होम मिनिस्टर बन गये, यह समस्या का कोई हल नहीं है। देश की जनता दो टूक भाषा में जवाब चाहती है। यहां पर आपने जो भाषा बोली है, वह भाषा हम नहीं सुनना चाहते, हमें आपके कार्य करने में यह दिखाई देना चाहिए कि सही मायने में आप आतंकवाद से लड़ने में ईमानदार हैं। यही देश का आम नागरिक चाहता है। मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि जब तक सुरक्षा का आपका जो तंत्र है, इस तंत्र का पूरा कार्याकल्प नहीं करेंगे, तब तक अच्छे परिणाम नहीं आ सकते हैं।

पुलिस सुधारों के नाम पर रुरतम जी और धर्मवीर कमीशन से लेकर राज्य सरकारों ने तमाम कमीशन बनाये। आप कमीशन क्यों बनाते हैं, जब उन कमीशनों की रिपोर्ट को आप लागू नहीं करते? इस देश में कितने कमीशन ही बने। मुझे लगता है कि जनता का तत्काल ध्यान हटाने के लिए आप कमीशन बना देते हैं, लेकिन किसी भी सवाल पर,

महत्वपूर्ण से महत्वपूर्ण सुझाव भी अगर कोई कमीशन देता है तो उस कमीशन की सिफारिशों को, उसकी अनुशंसाओं को आप लागू नहीं करते। आप मेहरबानी करके यह देखें कि पुलिस में सुधार के लिए जो विभिन्न प्रकार के कमीशन बने हैं, उनमें उनकी सिफारिशों की क्या सार्थकता है, उनको लागू करने का आप काम करें।

आज ही अखबारों में छपा कि लाखों पुलिसकर्मियों की कमी है। अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा व्यवस्था के जो मानक हैं, उसमें एक लाख लोगों पर 222 पुलिसकर्मियों को होना चाहिए, जबकि हमारे देश में 126 हैं और विकसित देशों में एक लाख लोगों पर यह संख्या 250 से लेकर 500 तक है। आपके यहां फोर्स की बहुत कमी है। अब अगर ऐसे समय पर भी आप भर्ती नहीं करेंगे तो कब करेंगे। लिहाजा इसमें अत्यधिक जल्दी की आवश्यकता है।

विदम्बरम साहब, अंग्रेजों का बनाया हुआ 1816 का पुलिस एक्ट है, उसमें सुधार की आवश्यकता है। यह बाबा आदम के जमाने की बात है, जबकि आप इस सदी में काम कर रहे हैं। यह एक्ट इतना पुराना है कि इसमें परिवर्तन की, संशोधन की और आज के तरीके से सोचने की आवश्यकता है। मैं आपसे कहना चाहूंगा कि आतंकवाद का स्वरूप अन्तर्राष्ट्रीय है, इसलिए इसमें यह भी आवश्यकता है कि इसके लिए कोई विश्व कानून बने, यह बहुत जरूरी है। यह जो मौजूदा कानून है, मैं समझता हूँ कि यह पर्याप्त नहीं है तो नये संदर्भ में आपको विश्व कानून भी इस सिलसिले में बनाना पड़ेगा। एक सबसे बड़ा सवाल यह भी है कि 1993 में मुम्बई का जो विस्फोट हुआ, उसका फैसला 14 साल बाद आया है। इसमें एक सीमा होनी चाहिए कि एक, दो या तीन महीने के अन्दर इसका फैसला होना चाहिए। हमारे देश में जो कानून है, हमारे देश में जो न्यायालय का काम करने का तरीका है, अगर कोई फलतू आदमी हो तो 20-25 साल लगना तो मामूली बात है। [R28] उसकी कोई सीमा या मर्यादा नहीं है और सिविल नेचर के जो वाद हैं, उनका फैसला 35-40 सालों में हो पाता है। इसलिए इस तरह के जो आतंकवादी हमले होते हैं, उसके लिए एक समय-सीमा तय होनी चाहिए कि इस समय-सीमा के तहत इन वादों का निस्तारण कर दिया जाएगा।

अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला हुआ, तो अमेरिका ने कहा कि इस समय जो आतंकवाद के खिलाफ नहीं है, इस तरह से जो हमारे साथ नहीं है, वह आतंकवाद का हमदर्द है। मैं नहीं जानता कि यह सरकार इस भाषा को बोल सकती है या नहीं बोल सकती, लेकिन इस तरह का संदेश हिंदुस्तान की तरफ से जरूर जाना चाहिए कि आज हमारे सामने संकट है और यह संकट दुनिया के दूसरे देशों के सामने भी हो सकता है, इसलिए संकट की इस घड़ी में हमारा साथ दें। यह समस्या केवल हमारी समस्या नहीं है, यह समस्या पूरे देश और दुनिया की समस्या है।

महोदय, मुंबई की घटना के बाद पाकिस्तान सकते में था। हिंदुस्तान ने जो अपनी प्रतिविरा व्यक्त की कि इसमें पाकिस्तान का हाथ है, तो वहां के राष्ट्रपति जरदारी और प्रधानमंत्री गिलानी ने कहा कि हमारे यहां के आईएसआई के जो डायरेक्टर हैं, उन्हें बात करने के लिए हिंदुस्तान भेज दिया जाएगा, लेकिन 10 दिसंबर को उनकी भाषा बदल गयी। इस संगठन का पाकिस्तान में क्या अहम रोल है? सत्ता से हटने के बाद पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति परवेज मुशरफ ने कहा कि आईएसआई पाकिस्तान की सुरक्षा की पहली पंक्ति है और इसे कमजोर करना किसी भी कीमत पर न्यायसंगत नहीं है। यह पाकिस्तान की सबसे उपयोगी संस्था है। पाकिस्तान की वह संस्था जो हमें बर्बाद करने में लगी है, वह पाकिस्तान के शासकों की दृष्टि से सबसे महत्वपूर्ण संस्था है। इसलिए हम जब आईएसआई के बारे में बात करते हैं, तो निश्चित रूप से यह मानकर चलना चाहिए कि यह बात सीधे तौर पर पाकिस्तान सरकार जुड़ी है।

यह कितना गंभीर मामला है कि कल ही सरकार ने एक पृष्ठ के उत्तर में बताया है कि देश में वर्ष 2004 से अक्टूबर, 2008 तक आतंकी हमलों की 22,107 घटनाएं हुईं, जिनमें मुंबई की घटना शामिल नहीं है। इससे भी ज्यादा क्या कोई गंभीर सवाल हो सकता है कि चाहे जब निर्दोष लोग मारे जाएं, नागरिक मारे जाएं, लोगों की जिंदगी की कोई निश्चितता न हो।

महोदय, मैं एक बात कहना चाहूंगा कि जितनी भी घटनाएं हमारे देश में हुई हैं, उसके संबंध में हमने जो कुछ भी किया, वह घटना होने के बाद किया। यह हाल हमारे स्फूर्तियां तंत्र का है और कई बार सरकार ने स्वीकार भी किया कि हमको जानकारी थी, लेकिन हम कुछ नहीं कर पाए। बहस और विचार इस बात पर होनी चाहिए कि जब किसी घटना की जानकारी आपको है कि घटना हो सकती है, तो घटना होने के पहले आपने क्या कदम उठाए? हिंदुस्तान में एक भी घटना ऐसी नहीं है कि जानकारी होने के बाद उस घटना को रोकने के लिए आपने कुछ सार्थक प्रयास किए हों। जो अब तक प्रयास हुए हैं, सब घटना घटित होने के बाद हुए हैं।

मैं कहना चाहूंगा कि 21 दिसंबर, 2006 में आई.बी. की रिपोर्ट सरकार को मिली, जिसमें साफ कहा गया कि पाकिस्तान की आईएसआई और नेवी 600 आतंकवादियों को ट्रेनिंग दे रही है। यह ट्रेनिंग तीन चरणों में दी जाती है। उनके प्रशिक्षण का काम 12 महीने से 18 महीने तक चलता है। मार्च, 2007 को कोस्टल सिविलिटी ग्रुप के डायरेक्टर जनरल ने स्वीकार किया कि समुद्री मार्ग से भी आतंकी हमला हो सकता है। लोकसभा में मार्च, 2007 में श्री एंटनी ने कहा और मई, 2007 में उस समय के गृहमंत्री श्री शिवराज पाटिल जी ने राज्यसभा में कहा कि समुद्री मार्ग से भी आतंकवादी हमला हो सकता है। सरकार ने इस संबंध में क्या किया? यह बहुत तकलीफदेह है। नये गृहमंत्री जी ने खुद स्वीकार किया है कि हमसे चूक हुई है। यह भी कोशिश करनी चाहिए कि भविष्य में इस प्रकार की घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। हमारे जो पुराने अनुभव हैं, अगर हम उनसे नहीं सीखेंगे, तो भविष्य में अच्छे परिणामों की हम अपेक्षा नहीं कर सकते।

मैं जानता हूँ कि यह बहुत संवेदनशील सवाल है। मेरा अपना ऐसा मानना है कि दुनिया की कोई समस्या ऐसी नहीं है, जो बातचीत के जरिए हल न हो सके, बशर्ते कि हमारी नीयत ठीक हो। [p29]

मुझे लगता है कि पाकिस्तान की नीयत ठीक नहीं है। हमें अधिक से अधिक विश्व समुदाय को विश्वास में लेना चाहिए और कोशिश करनी चाहिए कि हम बगैर खून-खराबे के आतंकवाद पर काबू पाएं। लेकिन मैं आपसे एक निवेदन जरूर करना चाहूंगा कि जब तक सीमा पार से आतंकवादी गतिविधियां खत्म नहीं होंगी और आतंकवादी ठिकाने नष्ट नहीं होंगे, तब तक फौरी इलाज तो हो सकता है लेकिन इसका स्थायी इलाज नहीं हो सकता। इसलिए जिस परिस्थिति में सरकार है, सरकार कूटनीति से कोई ऐसा हल निकाले कि हमारा देश जिस समस्या से पिछले दो दशकों से जूझ रहा है, हम उस पर नियंत्रण पा सकें।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं समाजवादी पार्टी की ओर से सरकार को भरोसा दिलाता हूँ कि हमारा दल पूरी तरह उनके साथ है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव (झंझारपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, आतंकवाद आज अंतर्राष्ट्रीय जटिल समस्या बन गई है। 26 नवम्बर, 2008 को मुम्बई में जो आतंकी हमले हुए, वे कोई साधारण हमले नहीं हैं। पिछले दिनों में हमारे देश के अंदर जितने आतंकी हमले हुए हैं, यह उससे अलग किस्म का आतंकी हमला है, क्योंकि जिस तरह प्रशिक्षित होकर, ट्रेड होकर पाकिस्तान की जमीन से हमारे देश में आक्रमण हुआ, वह निश्चित रूप से वैश्विक आतंकवाद का एक हिस्सा माना जा सकता है। पूरी घटना में 189 अमूल्य जीवन गए हैं जिनमें 26 विदेशी नागरिक और एनएसजी के दो कमांडो, 18 सुरक्षा बल बहादुर अधिकारी ने भी बलिदान दिया है। यहां तक कि एटीएस के प्रमुख श्री हेमंत करकरे, उनके साथ श्री कामते, श्री सातोशकर और दो एनएसजी के कमांडो सहित मुम्बई पुलिस के बहादुर जवानों और आरपीएफ स्टेशन पर पांच सौ लोगों को जित् लू यादव ने बचाया। आरपीएफ स्टेशन पर साधारण बंदूक से बहादुरी दिखाई। सभी बहादुर सुरक्षाकर्मी चाहे एटीएस के चीफ हों, चाहे अन्य हों, जिन लोगों ने साहस और वीरता का परिचय दिया, हमारे देश में आतंकवादी हमले का सामना करते हुए शहीद हुए, बलिदान दिए, मैं उन लोगों को सैल्यूट करता हूँ, सबसे पहले सलाम करता हूँ, नमन करता हूँ और ऐसी दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। उनकी दिवंगत आत्मा को शांति मिले, यह मैं कामना करता हूँ।

उपाध्यक्ष महोदय, इसमें यह नहीं देखा जाता कि कौन मारे गए। देसी मारे गए, विदेशी मारे गए, एएसजी के कमांडो मारे गए, हमारे बहादुर अधिकारी मारे गए, एंटी टैरिस्ट प्रशिक्षित अधिकारी थे, आतंकवादियों ने किसी को नहीं देखा कि हम किसको मार रहे हैं क्योंकि आतंकवादियों का कोई धर्म नहीं होता, कोई जाति नहीं होती, कोई मजहब नहीं होता, आतंकवादी अपने मिशन को पूरा करते हैं।

अभी गृह मंत्री जी ने एक बयान देकर पूरी स्थिति को स्पष्ट किया, खुलासा किया। मैंने आज विपक्ष के नेता को भी देखा, तास्ट में थोड़ा सा अपने एजेंडे पर जाने की कोशिश कर की, लेकिन उन्होंने बहुत ही स्तर की डिबेट की, मैं इसे मानता हूँ। लेकिन मैं सरकार से कहना चाहता हूँ कि सरकार को जो सावधानी बरतनी चाहिए, महाराष्ट्र राज्य को जो सावधानी बरतनी चाहिए, आतंकी हमले हुए, सरकार ने भी स्वीकार किया है कि खूफिया तंत्र विफल रहे हैं। खूफिया तंत्र ही नहीं, तटीय रक्षकों की भी लापरवाही रही है। मेरीन की जो पैट्रोलिंग होती है, वह पैट्रोलिंग कहां चली गई थी। तट पर आकर, गुजरात में जाकर कुबेर जहाज को लेते हैं, फिर तट पर पहुंच जाते हैं और मुम्बई में जिन-जिन ठिकानों पर उन्हें हमला करना था, आर्थिक नगरी में उन्होंने अपना जुल्म ढाने का काम किया। वे अपने कत्ल के मिशन को पूरा करने में लग गए। समन्वय की भी कमी थी। राज्य की पुलिस हो, चाहे सुरक्षा बल हों, तटीय रक्षक हों, मेरीन पैट्रोलिंग हों, उनके समन्वय का भी पूरी तरह अभाव था। लैंक ऑफ कोऑर्डेशन था, मैं ऐसा मानता हूँ, क्योंकि रॉ का रिपोर्ट एंड एनालिसिस विंग, जब छः रिपोर्ट, सितम्बर से लेकर 19 नवम्बर तक, 26 नवम्बर को घटना घटती है और छः रिपोर्ट में समुद्री रास्ते से फिदायीन हमले की आशंका जताई गई थी, यहां तक कि ताज होटल और सीएसटी स्टेशन पर हमले का पूर्व संकेत दिया गया था।[\[N30\]](#)

इंडिकेशन होने के बावजूद भी चूक हुई है। इसे नकारने की जरूरत नहीं है। सरकार को स्वीकार करना चाहिए कि हमसे चूक हुई है। इसमें चूक हुई है, यह भी जांच करने की आवश्यकता है क्योंकि राज्य सरकार कहती है कि हमें चेतावनी नहीं दी गयी जबकि केन्द्र सरकार कहती है कि नहीं, पूरी तरह रिपोर्टों के जरिये उनको संकेत दिया गया कि मुम्बई में ताज होटल और सीएसटी स्टेशन पर फिदायीन हमला हो सकता है। राज्य सरकार इसे नकारती है और कहती है कि नहीं, हमें चेतावनी नहीं दी गयी। यह कोऑर्डिनेशन भी अपने आप में एक जांच का विषय है, इसलिए मैंने इस बात का जिक्र किया। अभी मैंने पहले कहा कि आतंकवादियों का कोई मजहब नहीं होता, कोई धर्म नहीं होता। कम्युनिज्म और टैरिज्म ये दोनों जुड़वां बहनें हैं, एक सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए मैं इस बात को कहना चाहता हूँ कि जब तक देश के अंदर हमारा सांप्रदायिक सद्भाव मजबूत नहीं रहेगा तब तक हमारा जो दुश्मन है, बाहरी आतंकवादी ताकत है, उसका मुक़ाबला हम कैसे कर सकते हैं? इसलिए आज हमें इस सदन में एकजुट होने का संकल्प लेना होगा। कहने को कुछ और करने को कुछ और नहीं होना चाहिए। हमें अपना आत्मनिरीक्षण करने की भी जरूरत है। इतने महत्वपूर्ण और संवेदनशील राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषय पर चर्चा हो रही है, इसलिए हम सबको, राजनीतिक पार्टियों के नेताओं को आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता है। इस देश को यदि हम धर्म के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर, भाषा के नाम पर बांटने की कोशिश करेंगे, तो हमारा देश एकजुट नहीं रहेगा। हम बाहरी आतंकवादी ताकतों से मुक़ाबला करने में पूरी तरह सफल नहीं हो सकते। इसलिए सबसे ज्यादा जरूरी है कि हम एक हों, क्योंकि आपको मालूम है, मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है, हम नहीं चाहते कि हम आज इस बात का जिक्र करें, क्योंकि बहस का जो स्तर है, वह अपने आप में एक ऊंचाई पर है। लेकिन बहुत तकलीफ होती है कि पूरे देश में किसी भी चीफ मिनिस्टर की देशभक्ति नहीं जागी। पूरे देश में एक मुख्यमंत्री हैं, उनका नाम मैं यहां नहीं लूंगा, उनकी बड़ी देशभक्ति जागी। उनकी देश भक्ति कब जागती है? जब एटीएस के प्रमुख श्री हेमंत करकरे का बलिदान हो जाती है तब वह थैला लेकर उनकी पत्नी के पास पहुंच जाते हैं। उस बहादुर अधिकारी की पत्नी भी बहादुर थी। उन्होंने इंकार कर दिया और कहा कि हमें आर्थिक सहयोग के लिए एक करोड़ रुपये नहीं चाहिए। राष्ट्रभक्ति का प्रमाण इससे बड़ा और क्या होगा? एटीएस के प्रमुख बड़े निष्ठावान, देश और राष्ट्र के प्रति बड़े समर्पित अधिकारी थे जिन्होंने कोई भेद नहीं किया। उन्होंने जिस तरह से मालेगांव के कांड की जांच की है, उसमें जो तार जुड़े हुए हैं, वे लोग बड़े परेशान हुए। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि देश को धर्म के आधार पर नहीं बांटना चाहिए। हम आज जो संकल्प ले रहे हैं, वह संकल्प तभी मजबूत होगा जब हम अपना आत्मनिरीक्षण करें। हम थोड़ा इन सबसे ऊपर उठें। हमें दलीय संकीर्णता से ऊपर उठना पड़ेगा क्योंकि यह देश और राष्ट्र का सवाल है, राष्ट्र में आतंकवादी हमले का मुक़ाबला करने का सवाल है। यह बहुत बड़ा सवाल है इसलिए हमें अपनी संकीर्ण भावना से ऊपर उठना होगा। हमें दलों की सीमाओं से भी ऊपर उठने की कोशिश करनी होगी और इसका मन बनाना होगा कि यह मामला क्यों हुआ? मुझे बहुत आश्चर्य हुआ, आपको मालूम है, आपने चर्चा कर दी, मैं नहीं चाहता था कि यहां दिल्ली और राजस्थान की कभी चर्चा हो। इस तराजू पर, इस कसौटी पर इस चीज को देखने की जरूरत नहीं थी। पता नहीं, हमारे माननीय विपक्ष के नेता कॉन्स्टेंट में उस तराजू को भी देखने लगे। हम उसे यहीं छोड़ देते, लेकिन हम एक बात जरूर कहना चाहते हैं जिस पर आज कहा जा रहा है कि अजहर मसूद को नजरबंद किया जा रहा है, तो वह कौन है? यह वही आतंकवादी है जिसे हिन्दुस्तान के एक मंत्री ने कंधार ले जाकर छोड़ा था। उसी दिन आतंकवादियों का मनोबल उंचा हो गया। आज हमारे जवान शहीद हो रहे हैं, क्योंकि उस दिन आतंकवादियों का मनोबल बढ़ा था। गृह मंत्री जी यहां बैठे हैं। हमें दूसरे देशों को देखकर एक नीति बनानी होगी। पूरी दुनिया में जो एंटी टैरिस्ट एक्ट है, उसकी समीक्षा की जाये, रिव्यू किया जाये।[\[MSOffice31\]](#)

वया हम अपने देश की अस्थिरता को कम करने के लिए तैयार हो जाएं और किसी पकड़े गए आतंकवादी को जेल से निकालकर कंधार लेकर छोड़ दें? आज वही आतंकवादी हिन्दुस्तान के खिलाफ फिर से बाघ बना हुआ है, इस तरह की आग उगल रहा है।

श्री खारबेल स्वाई (बालासोर): यादव जी, उस जहाज में लगभग 150 पैसेंजर्स थे, वया हम उनको मरवा देते?

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव (झंझारपुर) : सिविलियन्स की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, लेकिन वया इसीलिए कानून में बदलाव हो जाए? ...[\(व्यवधान\)](#) टैरिज्म से, टैरिस्ट्स से कोई समझौता नहीं हो सकता है।

उपाध्यक्ष महोदय, हमें आतंकवादियों से कोई समझौता नहीं करना चाहिए। ...[\(व्यवधान\)](#)

श्री खारबेल स्वाई : वया हम 150 पैसेंजर्स को मर जाने देते?...[\(व्यवधान\)](#)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : ...*

* Expunged as ordered by the Chair.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing should be recorded.

(Interruptions) *â€

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : ...**

MR. DEPUTY-SPEAKER: This should be expunged.

...(Interruptions)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing should be recorded.

(Interruptions) *â€

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing should be recorded unless I allow it.

(Interruptions) *â€

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please sit down. Nothing is being recorded.

(Interruptions) *â€

उपाध्यक्ष महोदय : देवेन्द्र जी, बड़ी अच्छी तरीके से बहस चल रही थी। इसकी सीरियसनेस को समझिए।

â€(Interruptions)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, मैं इन बातों की चर्चा करना नहीं चाहता था।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : देवेन्द्र जी, आप ऊपर देखने की बजाए मेरी ओर देखकर अपनी बात कहें।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : मैं आप लोगों की सारी बातें खोल दूंगा।...(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing should be recorded.

(Interruptions) *â€

उपाध्यक्ष महोदय : देवेन्द्र जी, आप मेरी ओर देखकर बोलिए।

â€(व्यवधान)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Nothing should be recorded.

(Interruptions) *â€

उपाध्यक्ष महोदय : देवेन्द्र जी, मैं आपको एलाऊ नहीं कर रहा हूँ। आपकी कोई बात रिकॉर्ड में नहीं जा रही है।

(Interruptions) *â€

PROF. VIJAY KUMAR MALHOTRA : Lalu Ji was present in

* Not recorded.

** Expunged as ordered by the Chair.

that meeting. ...(Interruptions) The hon. Prime Minister was also present in that meeting. जिस मीटिंग में फैसला हुआ, उसमें आपके नेता भी शामिल थे।...(व्यवधान)

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : ठीक है, लेकिन इसकी बारीकी से जांच होनी चाहिए।...(व्यवधान)

उपाध्यक्ष महोदय : देवेन्द्र जी, आप पहले मेरी बात सुनें। आप ऊपर देखकर बोलने की बजाए मेरी ओर देखकर अपनी बात कहिए। हम एक बहुत सीरियस डिबेट कर रहे हैं,

इसकी सीरियसनेस को बनाए रखें।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : उपाध्यक्ष महोदय, मैं बहुत अफसोस के साथ कह रहा हूँ कि...[\(व्यवधान\)](#)

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please sit down. Nothing is being recorded.

*(Interruptions) â€!**

MR. DEPUTY-SPEAKER: I have expunged whatever he has said.

देवेन्द्र जी, आप डिबेट की सीरियसनेस को बनाए रखिए।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : महोदय, ये दिल जोड़ने वाले लोग नहीं हैं, ये हिन्दुस्तान के दिल को तोड़ने वाले लोग हैं। हम लोग दिल जोड़ने वाले हैं। आप दिलों को मत तोड़िए।...[\(व्यवधान\)](#)

आप लोग देश की एक खास कम्युनिटी पर शंका करते हैं। मैं इन सब बातों की चर्चा नहीं करना चाहता था...[\(व्यवधान\)](#) अगर आप लोग डिस्टर्ब करेंगे तो आपके नेता भी नहीं बोलने पाएंगे।...[\(व्यवधान\)](#) आप लोग चर्चा को गलत पटरी पर मत ले जाइए। अगर आप कम्युनल वायरस फैलाएंगे तो देश की एकता कैसे रहेगी? आन्तरिक सुरक्षा को खतरे में डालकर हम बाहरी असुरक्षा का मुकाबला कैसे कर पाएंगे? इसलिए आन्तरिक सुरक्षा को मजबूत रखने के लिए हमें सभी वर्गों के बीच सद्भावना को मजबूत बनाना होगा। किसी कौम पर शंका करने की जरूरत नहीं है।[\[R32\]](#) आज हम वया यह नहीं देख रहे हैं कि इस घटना का अल्पसंख्यक लोग भी विरोध कर रहे हैं, वे भी आतंकवाद के खिलाफ पैगाम दे रहे हैं, इसमें कोई दिक्कत नहीं है। इस घटना के विरोध में समूचा देश एक हो रहा है।

श्री अनंत गंगाराम गीते(रत्नागिरी): इसमें कोई शक नहीं है।

श्री देवेन्द्र प्रसाद यादव : आपने सही कहा, लेकिन आज आप लोग यह बात कहते हैं, उस समय किस बिल में घुस गए थे। आपने तो बड़ी भारी महाराष्ट्र सेना बनाई है, उसने तब क्या किया? भारत की सेना ने उस समय साहस और वीरता का परिचय दिया, आपने कुछ नहीं किया। आप तो राष्ट्रवाद के बड़े नारे लगाते

* Not recorded.

थे। मैं कहना चाहता हूँ कि देश को एक रखिए, हिन्दू हो, मुसलमान हो, सिख हो या ईसाई हो, सब मिलकर आतंकवाद का मुकाबला करें, यह संकल्प लेने की जरूरत है। समाज में सद्भावना को मजबूत बनाकर हमें आतंकवादियों को धूल चटाने की आवश्यकता है। हमारा देश एक महान देश है। हम आतंकवादियों से खुद जूझ सकते हैं, इसके लिए हमें किसी दूसरे देश की सहायता की जरूरत नहीं है। किस देश में वया कूटनीति बन रही है, यू.एन.ओ. की शिवयोरीटी कौंसिल में वया निर्णय हो रहा है, इसकी हमें जरूरत नहीं है। हम देश की एकता को मजबूत करें, इसकी जरूरत है। यह ठीक है कि कूटनीतिक प्रयास हम करते रहें। लेकिन हम आगे बढ़कर आतंकवाद का मुकाबला करें, इसकी ज्यादा जरूरत है। मैं इसका जिक्र नहीं करना चाहता था, लेकिन माननीय सदस्य ने मुझे बाध्य किया इसलिए कहना पड़ा। मैं कहना चाहता हूँ कि इस आतंकवाद पर आम सहमति बने, यह बहुत ही जरूरी है। राजनैतिक दलों को संकीर्ण सरोकारों को त्याग कर एक स्वर से आतंकवाद के खिलाफ लड़ने का संकल्प लेने की आवश्यकता है। इसलिए हमें एकजुट होना चाहिए।

हमारे देश में ऐसी भी मिसाल है, जब हमारी पाकिस्तान से लड़ाई हुई थी, उस समय कैप्टन अब्दुल हमीद ने पाकिस्तानी सैनिकों को तोड़कर देश भक्ति का, राष्ट्रीयता का परिचय दिया था। इसलिए इस वतन में रहने वाले जिस भी बिरादरी के हों, सबके खून में भारतीयता है, राष्ट्रियता है और अपने वतन के प्रति प्यार है। इसलिए हम इसका बंटवारा नहीं कर सकते, इसे अलग नजरिए से नहीं देख सकते। यही कारण है कि इस घटना में जो लोग मारे गए, वे सभी बिरादरी के लोग थे। उनमें देशी भी थे और विदेशी भी थे। इसके अलावा जो सैन्यकर्मी शहीद हुए, वे भी सभी धर्मों के लोग थे।

इस घटना की शक की सुई हमेशा की तरह पाकिस्तान की तरफ गई है। इस बात के स्पष्ट सबूत भी मिल रहे हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि आतंकियों के विरुद्ध जो भी कठोर फैसला इस सरकार को लेना है, वह लेना चाहिए। इस पर बहस हो सकती है कि पाकिस्तान के खिलाफ कैसा और वया कड़ा फैसला लेना है, वया कार्रवाई करनी है। लेकिन अब समय आ गया है कि भारत में चल रहे जो भी आतंकी हमले हैं, उनके खिलाफ एक निर्णायक माहौल तैयार किया जाए। यदि ऐसा हो जाएगा तो हमें दुनिया के दूसरे देशों की तरफ नहीं देखना पड़ेगा, बल्कि हम खुद अपनी तरफ से ठोस कार्रवाई करने में सक्षम होंगे। इसलिए कठोर कार्रवाई के लिए संकल्प और इच्छाशक्ति की जरूरत है। हमें इस पर गौर करना होगा। पिछले कुछ समय से चाहे मुम्बई हो या देश की अन्य जगह, ऐसी घटनाएं घटी हैं। उनके खिलाफ हमें संगठित होने की जरूरत है।

हमारे अतीत में अहिंसा रही है। हमारी पालिसी रही है कि हमारा देश अहिंसा चाहता है। लेकिन उसका वया फायदा, जब हम अपनी सीमा पर और देश के अंदर बाहर से हमला करने वालों को बाहर का रास्ता न दिखा दें। सन् 1963 में डा. लोहिया जी ने भी कहा था कि आज हमारे सामने कोई विकल्प नहीं है, कल शायद हो सकता है। जिस देश की सीमाओं और भीतर बाहर से खतरा हो, तो उस देश को अपनी रक्षा के लिए अपनी सेना का सही समय पर इस्तेमाल करना चाहिए। हम एक सपूषु देश हैं, उसके लिए हमें किसी की इजाजत की जरूरी नहीं है। अगर कुछ हिन्दुओं को यह बात समझ में न आए, उन्हें यह दलील समझ में न आए तो उन्हें जल्द से जल्द यह बात समझा देनी चाहिए कि पाकिस्तान के विरोध के लिए यह जरूरी है कि वह मुसलमानों का दोस्त हो, वहां की जनता का दोस्त हो। [\[R33\]](#)

15.00 hrs.

जो हुवमरान हैं, जो टैरिस्ट्स हैं, जो मुजाहिदीन हैं, फिदायीन हैं, चाहे आईएसआई हैं, ऐसे लोगों का दोस्त नहीं बनना है बल्कि जो पाकिस्तान का अवाम है, उसका दोस्त बनना हमारे लिए जरूरी है। वहां की जनता हमारे खिलाफ नहीं है। वहां जो शिविर में टैरिस्ट्स हैं, जो आतंकवादी हैं, जिनको भारत के खिलाफ प्रशिक्षण दिया जा रहा है, नफरत का जहर उनके मन में हमारे खिलाफ घोला जा रहा है, वे लोग भारत के खिलाफ हैं, पाकिस्तान की अवाम हिन्दुस्तान के खिलाफ नहीं है। मुसलमानों का विरोध करना, उन्हें दबाना, दो राष्ट्र के सिद्धांत का समर्थन करने से पाकिस्तान को ताकत मिलती है। सांप्रदायिक दंगे करने वालों के खिलाफ सरकार को तेजी से सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। जब तक हम समाज में सद्भाव को मजबूत नहीं करेंगे, तब तक हम आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई मजबूती से लड़ाई नहीं लड़ सकते हैं।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि मेरी तकरीर में बहुत डिस्टर्बेंस हुआ। इसलिए मैं आपसे एक अनुरोध करना चाहता हूँ कि देश के अंदर भी अगर कोई आतंकवादी शिविर हो तो

उसका पता लगाना चाहिए। चाहे वह किसी भी कौम का शिविर क्यों न हो, अगर कोई भी शिविर आतंकवादी गतिविधियों में लिप्त पाया जाए तो उसको रेखांकित करने का काम सरकार को प्राथमिकता के आधार पर करना चाहिए। चाहे वह अश्विन भारत का हो, चाहे ड्रामा करने का हो, चाहे जो भी हो, उसको रेखांकित करना चाहिए। राज्यों में सीआईडी, लोकल इंटीलिजेंस यूनिट तथा केन्द्रीय स्तर पर आईबी, सीबीआई, मिलिट्री इंटीलिजेंस या डायरेक्टर ऑफ रैवेन्यू, इंटीलिजेंस, रॉ, करंटम इंटीलिजेंस, इन्कमटैक्स सर्विलेंस को कोऑर्डिनेट करके एक नोडल इंडिपेंडेंट एजेंसी बनानी चाहिए, जो ऐसे मामलों का मुकाबला कर सके।

जो पुलिस है उसको तॉ एंड आर्डर लाने हेतु कंकरेंट लिस्ट में लाने हेतु भी विचार होना चाहिए। एनएसजी के जवानों की प्रशिक्षित टुकड़ी हर स्टेट की कैपिटल में होनी चाहिए जिससे आतंकवादियों का मुकाबला मजबूती से किया जा सके। उसके लिए आवश्यक स्टॉफ और इन्फ्रस्ट्रक्चर मिलना चाहिए।

अंत में जो विज़मन्स और टैरिस्ट के मामले हैं उन्हें जल्दी से जल्दी टाइम-बाउंड मानकर निपटारा करना चाहिए, तभी हम आतंकवाद का मुकाबला कर सकते हैं। संसद में आज एक संकल्प होना चाहिए कि हम सब एक स्वर में बोले, अलग-अलग बोलने की जरूरत नहीं है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूँ।

श्री मित्तूरेन यादव (फैजाबाद) : मान्यवर उपाध्यक्ष जी, मैं आपका आभारी हूँ कि इस विषय पर बोलने का आपने मुझे समय दिया। मान्यवर, आतंकवादी समस्या एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या है और किसी भी समस्या का समाधान जिस प्रकार से उसका जन्म होता है उसी प्रकार से उसका हल भी निकालना चाहिए। चूंकि यह एक अंतर्राष्ट्रीय समस्या है इसलिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ही संगठित होकर हमें इसका हल भी निकालना चाहिए। जब तक हम किसी मर्ज के कारण को नहीं समझेंगे तब तक उसका डायग्नोसिस नहीं होगा और अगर उसका डायग्नोसिस नहीं होगा तो उसका इलाज नहीं होगा। आतंकवाद क्यों पैदा हुआ, चाहे हमारी गलती से हो, चाहे दोस्तों की गलती से हो, चाहे और किसी बड़े राष्ट्र की गलती से हो, लेकिन कहीं न कहीं गलती हुई है, तभी आतंकवाद पैदा हुआ है। यदि हम अफगानिस्तान को देखें तो अफगानिस्तान के राष्ट्रपति ने सोवियत यूनियन से अपनी सुरक्षा के लिए ताकत मांगी थी और इस सुरक्षा के आधार पर, अमरीका ने पाकिस्तान से मिलकर अफगानिस्तान में आतंकवाद को बढ़ावा दिया। जब अमरीका ने यह गड़बड़ खोदा तो उस गड़बड़े को अमरीका को भी झेलना पड़ा। हमारा यह कहना है कि हिंदुस्तान को भी इस बात को देखना चाहिए कि कहीं हमसे गलती तो नहीं हो रही है। हिंदुस्तान पर आतंकवादियों का हमला होने का कारण क्या है? अभी तक हिंदुस्तान की सरकार ने इस बात को जाहिर नहीं किया कि आखिर आतंकवादी हिंदुस्तान पर हमला क्यों करते हैं? [34]

महोदय, हमने बंगलादेश की लड़ाई में पाकिस्तान का विरोध किया था, वया पाकिस्तान उसका बदला ले रहा है या किसी और कारण से या कश्मीर को ले कर पाकिस्तान ऐसा कर रहा है या सांप्रदायिकता उग्रता के मामले के कारण ऐसा हो रहा है? पाकिस्तान आतंकवाद पैदा करके हिंदुस्तान पर आतंकवादी हमले क्यों करवा रहा है? हिंदुस्तान की जांच एजेंसियां अभी तक इस बात को स्पष्ट नहीं कर पाई हैं। जब तक आप जान नहीं पाएंगे, तब तक कैसे इस आतंकवाद को रोक सकेंगे? इस देश में भी कहीं न कहीं आतंकवाद पैदा हो रहा है और वह भी आपकी गलतियों की वजह से पैदा हो रहा है। बहुत से माननीय सदस्यों ने अपनी बात सदन के सामने कही है कि आंतरिक सुरक्षा के बारे में भी हमें ध्यान देना चाहिए। पंजाब में उग्रवाद कैसा पैदा हुआ था, मैं कहना नहीं चाहता हूँ कि पूरे देश में उग्रवाद कैसे पैदा हुआ, आपकी सियासी कमजोरियों की वजह से। अपनी सत्ता को प्राप्त करने की गलत नीतियों के कारण आपको स्वामियाजा भुगतना पड़ेगा। देश में आतंकवाद की बढौलत मुम्बई में जो कुछ हुआ है, उसके लिए कल माननीय सदन ने शोक व्यक्त किया था और श्रद्धांजलि अर्पित की थी। हम कब तक श्रद्धांजलियां अर्पित करते रहेंगे, हमें इसका निदान ढूँढना पड़ेगा।

मान्यवर, आतंकवादी हमले के समय में मारे गए लोगों ने और अन्य लोगों ने जिस ताकत के साथ आतंकवादियों का मुकाबला किया था, जिन अधिकारियों ने अपने जीवन का बलिदान दिया, उनकी तारीफ करने में कमी नहीं करनी चाहिए, लेकिन आपको देखना पड़ेगा कि हमारे देश का गृह विभाग कमजोर था, हमारा गृह मंत्री कमजोर था। हमारी नौ सेना भी कमजोर थी, हमारा तटीय प्रबंधन कमजोर था। कई चीजें स्वीकार की गई हैं। अगर हमारे देश का गृह मंत्री बदला गया है, तो इसका मतलब है कि भारत सरकार ने स्वीकार कर लिया है कि गृह मंत्री की गलती थी, सरकार की गलती थी। हमारी नौ सेना और दूसरी एजेंसियों ने भी स्वीकार किया कि उनकी गलती थी। आज भारत सरकार को भी स्वीकार करना चाहिए कि इनकी कमजोरियों के कारण देश में आतंकवाद बढ़ रहा है। हमारे पास सही टूल्स, सही जानकारीयां हासिल करने के तरीके नहीं हैं, जिनके आधार पर आतंकवाद को रोक जा सके। इसके लिए गृह मंत्री और भारत सरकार से निवेदन करना चाहता हूँ कि बहुत संजीदगी से विचार करने की जरूरत है। इसके साथ ही साथ प्रदेश सरकारों को भी सतर्क रहने की जरूरत है। उत्तर प्रदेश में जो हमले हुए हैं, हमारे रामपुर में आरपीएफ के ऊपर जो हमला हुआ, उसमें आठ लोग मारे गए और पांच लोग घायल हुए। जो आदमी गिरफ्तार हुआ था, उसने मुम्बई की एक-एक घटना के बारे में नियोजित ढंग से जो होने वाला है, उसका जिक्र किया था, उसका नाम फरदीम अंसारी था। उसने सारी बातें बताईं और कई लोग गिरफ्तार भी हुए थे, लेकिन भारत सरकार ने उस पर ध्यान नहीं दिया। इतना ही नहीं दिसम्बर 2007 और जनवरी 2008 में फैजाबाद में और लखनऊ में कई जगह बम ब्लास्ट हुए। उसमें 13 लोग मारे गए। उसके बाद जो लोग गिरफ्तार हुए, उन्होंने बताया कि हिंदुस्तान में आतंकवाद कहां-कहां बढ़ रहा है, कौन सी साजिशें कर रहा है, कौन टारगेट है, सारी चीजें उजागर हुईं। अखबारों में आया, जांच रिपोर्टों में आया, लेकिन उन पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। गोरखपुर के बम कांड में भी सारी चीजें जांच में आईं, उन पर भी नजर नहीं डाली गई। कहने का मतलब यह है कि जब आपके सामने मर्ज दिखाई पड़ रहा है, उसका इलाज नहीं करेंगे तो वह फोड़ा कैंसर का रूप ले लेगा। भारत सरकार को स्वीकार करना चाहिए कि सारी गलती इनकी है। कुछ लोग कह रहे हैं कि पाकिस्तान को इसका जवाब देना चाहिए, पाकिस्तान भी परमाणु अस्त्र से तैस है और हम भी परमाणु अस्त्र से तैस हैं। [35]

आप जिस दिन लड़ाई छेड़ेंगे, हिंदुस्तान का कम नुकसान नहीं होगा। यह समस्या लड़ाई से हल नहीं हो सकती। यह समस्या तभी हल हो सकती है जब दुनिया की तमाम आतंकवाद विरोधी ताकतों जो पाकिस्तान में भी मौजूद हैं, जिन्होंने बेनजीर भुट्टो और दूसरे कई लोगों की हत्याएं की, उन सब को मिलाकर और एक जनमत तैयार करके इससे लड़ेंगे। यह शक्ति आपके पास है और आप अभी यह कबूल कर रहे हैं कि दुनिया के 24 राष्ट्रों के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्रियों ने टेलीफोन किया और सहयोग करने के लिए कहा। जब आपको इतनी बड़ी ताकत अंतर्राष्ट्रीय पैमाने पर मिल रही है तो इस आतंकवाद से लड़ने में कोई कमजोरी महसूस नहीं करनी चाहिए। देश में जिस प्रकार की एकता है, जहां विभिन्न भाषा, संस्कृति, बोल-चाल, रहन-सहन और वेश-भूषा के लोग रहते हैं, वे विपत्ति की इस घड़ी में पूरी ताकत के साथ आपके साथ खड़े हैं, उसके बाद भी आप ऐसे आतंकवाद से लड़ नहीं पाए तो हम इस सरकार को काबिल सरकार नहीं कह सकते हैं। ठीक है, आपके प्रति जनमत है। आज देश महसूस करता है कि वर्तमान सरकार को आतंकवाद से लड़ने के लिए जितनी सक्रियता, संजीदगी और सतर्कता बरतनी चाहिए तथा आंतरिक तौर पर प्रदेश सरकारों की तरफ से जिस प्रकार का तात्कालिक रचना चाहिए और उनके संगठनों को जिस प्रकार से सुदृढ़ करना चाहिए, उधर भारत सरकार की नजर नहीं है। यही हमारी कमजोरी है और आतंकवाद के कारण इतना भारी नुकसान हो रहा है, इतनी जन और धन की हानि हो रही है। तमाम तरीके के लोगों में अन्तर्विरोध पैदा करने की कोशिश की जा रही है और इसके पीछे राजनीति भी करने की कोशिश की जा रही है। अगर आतंकवाद के पीछे राजनीति की जाएगी तो इस समस्या का हल नहीं होगा। कुछ राजनीतिक पार्टियां अगर ऐसा करेंगी तो पूरे देश को नुकसान होगा। उत्तर प्रदेश में कई जगह आतंकवाद की घटनाएं हुईं। वहां की सरकार ने बड़ी मुस्तैदी के साथ उसका मुकाबला किया और बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियां की और सारा पर्दाफाश कर दिया, वहां डेढ़ लाख पुलिस पदों का सृजन किया गया, आतंकवाद विरोधी दस्ते का गठन किया गया, पूरी ताकत के साथ आतंकवाद से निपटने के लिए उत्तर प्रदेश की सरकार ने बड़ी मुहिम चलायी है लेकिन इसमें आपका जो सहयोग मिलना चाहिए, नहीं मिल रहा है। इस सहयोग के जरिए उन्होंने जितनी सूचनाएं आतंकवाद के विरोध में लाकर दी हैं, उससे पूरे हिंदुस्तान में आतंकवादी गतिविधियों का पूरा खुलासा हो गया है। इसलिए मेरा निवेदन है कि ऐसे मौके पर देश की एकता को देखते हुए जिस सरकार के साथ परा देश खड़ा है, उस सरकार को पूरी ताकत के साथ इसका मुकाबला करना चाहिए। इस मामले में पूरी संजीदगी बरती जाए। आपने स्वीकार किया है कि पूरी दुनिया

के देशों ने इस समस्या के साथ मजबूती से खड़े होने का वायदा किया है। आप उन सब को आगे लेकर आएं। पाकिस्तान में अगर ऐसी आतंकवाद विरोधी ताकतें हैं तो जासूसी ताकतों को साथ लेकर पूरी दुनिया के पैमाने पर आतंकवाद से लड़ें, इसमें कामयाबी मिलेगी और देश की जीत होगी।

SHRI A. KRISHNASWAMY (SRIPERUMBUDUR): Sir, I welcome the statement made by the hon. Home Minister, Thiru P. Chidambaram, which can be considered as comprehensive, constructive and forward looking. I join my other colleagues and friends who preceded me in condemning these dastardly acts of terrorism and commending the role of security forces.

There is no doubt that the country should be one in fighting against the acts of terrorism and defeat the nefarious tendencies of the people who are out to weaken our country, India, as emerging global force.

Today, we saw that our Opposition Leader, Advani ji registered his valuable points in this House that we should be united at this juncture. Whenever he speaks, he always speaks about religion--Hindu and Muslim. But today he spoke that terrorism is one of the other religions that we should fight against. I welcome Advaniji's speech also.

Our leader, Dr. Kalaingar has also condemned these terrorist attacks and paid homage to the martyrs and commended the exemplary role of the security persons and other paramilitary forces in their fight against terrorists, and also he had written letter to the Prime Minister in this connection.[\[m36\]](#)

Sir, I stand here to condemn the most horrendous attacks at several places including Taj Hotel, Oberoi Hotel and Nariman House in Mumbai on 26th November which were repulsed by our Police, security forces, Naval Commandos and the NSGs. &€ (Interruptions)

रेल मंत्री (श्री लालू प्रसाद): महोदय, विजय कुमार मल्होत्रा जी ने मेरा नाम मंशन किया कि जब कंधार में आतंकवादियों को भेजा गया तब उसमें मैं भी था और माननीय प्रधानमंत्री जी भी थे जबकि हम इसमें नहीं थे।...[\(व्यवधान\)](#)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा (दक्षिण दिल्ली) : मैं दावे के साथ कह रहा हूं कि उसमें मनमोहन सिंह जी भी थे और लालू जी भी थे। उसमें सारी पार्टियों के लीडर थे, जिसमें फैसला हुआ था।...[\(व्यवधान\)](#)

श्री लालू प्रसाद: आप हमें लाकर दिखाइए। आप गलत बोल रहे हैं।...[\(व्यवधान\)](#) गलत बोलने से तो आप हार गए हैं।...[\(व्यवधान\)](#)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : मैं भी उस मीटिंग में था जिसमें आप थे। माननीय प्रधानमंत्री जी से कुछ कराने के लिए कोई भी कदम उठाएं, उसको तय किया गया।...[\(व्यवधान\)](#)

श्री लालू प्रसाद: मैं इस तरह के काम में नहीं जाता हूं।...[\(व्यवधान\)](#) Sir, he is misquoting my name.

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : मैं नाम दे दूंगा। उसमें मनमोहन सिंह जी, मुलायम सिंह जी और आप भी थे।...[\(व्यवधान\)](#)

श्री लालू प्रसाद: इस तरह के काम में मैं नहीं जाता। ...[\(व्यवधान\)](#)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : इसमें सभी नेता थे।...[\(व्यवधान\)](#)

श्री लालू प्रसाद: नहीं।

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा: कैसे नहीं?

श्री लालू प्रसाद: ये काम आप ही कर सकते हैं। ...[\(व्यवधान\)](#)

MR. DEPUTY-SPEAKER : Shri Krishnaswamy may continue.

SHRI A. KRISHNASWAMY : Sir, in the bomb blasts and attacks on 26th November by terrorists, unfortunately, 164 people were killed and among them 26 were foreign nationals. No words are strong enough to condemn these ghastly incidents. We pay our humble homage to Major Sandeep Unnikirhsnan of NSG who made a supreme sacrifice while confronting the terrorists. We also pay our respectful homage to the then Chief of Anti-Terrorist Squad and his other officers who had laid down their lives in their act of bravery for the sake of the country. We salute the brave soldiers and officers who have become martyrs while fighting against the terrorists and while saving and evacuating the innocent civilians and foreign nationals who had been taken as hostage at various places in Mumbai. We convey our condolences to the families of the bereaved. We also express our heartfelt condolences to the families of those victims including foreign nationals who were mercilessly killed by the terrorists.

Sir, I would request the Government to face the challenge posed by these terrorists resolutely and also urge upon the Government to strengthen the intelligence gathering mechanism both at the State and the Central level so that timely action can

be taken by the respective security agencies. I appreciate the decision of the Government to raise India Reserve Battalions in a number of States with financial assistance from the Central Government. Similarly, special task force or outfits on the lines of NSG should be set up in all the States under the control of the State Government with the financial assistance from the Centre to deal with such menace effectively in future. I also welcome the proposal of setting up of training schools for training the commando units of the State police forces in various States. Modernisation of police force in various States is also a very important component as the National Police Commission has emphasised this point.

Sir, such a large-scale attack by terrorists cannot be tackled by the State Governments; wherever it happens it cannot be tackled by the State Police because the State Police looks after the law and order problems and other small offences. To augment and reinforce the anti-terrorist squad forces, the centre should extend the help and assistance with Naval commandos, NSG etc. But, at the same time, whatever measures are taken by the Central Government to strengthen the internal security and anti-terror steps, they should keep in mind that the rights and jurisdiction of the State Government should not be infringed upon.

Sir, before I conclude I would like to say that I have got a SMS message from one of the citizens from the State of Tamil Nadu. The message is : "An Olympic shooter, a sportsman gets Rs. three crore; but a real shooter dies fighting against the terrorists and his family gets only Rs. five lakh from the Government". This is the SMS that I got. A real shooter got Rs. five lakh only but a shooter in the sports got Rs. three crore. The reward and award should be increased for the families of those who laid their lives. It should be done.

Sir, at the end, I would support the proposed Resolution which might be brought before the House for passing unanimously condemning the acts of terrorism and giving a clear signal to the world community that India is one and any attempt to weaken the unity and integrity of the country will not be tolerated.

[\[k37\]](#)

प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा : उपाध्यक्ष महोदय, जो भाषण अभी यहां विदम्बरम साहब और पूणव मुखर्जी साहब ने दिये थे, उन भाषणों को सुनकर मुझे काफी प्रसन्नता हुई। उन भाषणों में जिन बातों को उल्लेख किया गया, उसमें श्री पूणव मुखर्जी साहब की भाषा काफी कठोर और सख्त थी और मुझे कई बार लग रहा था कि वह भाषण हमारी तरफ से दिया जा रहा है, इस प्रकार की बातें उसमें दिखाई देती थीं।

महोदय, मुम्बई में जो कांड हुआ, यह सारे देश के लिए एक शोक का विषय तो है ही, परंतु यह राष्ट्रीय शर्म की बात भी है। उसमें विदम्बरम साहब ने माफि मांगी, श्री शिवराज पाटील का इस्तीफा हो गया, महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री का इस्तीफा हो गया, महाराष्ट्र के उप-मुख्य मंत्री का इस्तीफा हो गया। यह कोई साधारण घटना नहीं हुई है। वहां पर लाखों लोग इकट्ठे हुए और उन्होंने इकट्ठे होकर, मोमबतियां जलाकर सारे राजनीतियों के बारे में एक तरह की अपमानजनक भाषा का भी प्रयोग किया। सारे देश में क्रोध है, इसमें कोई शक नहीं है, परंतु इस बारे में कुछ बातों का उल्लेख करना इसलिए भी जरूरी है कि क्या यह घटना एक आकस्मिक घटना थी। पूणव जी ने कहा कि यह घटना एक सिस्टम के थू, एक षड्यंत्र के थू हुई और यह बात भी कही गई कि पाकिस्तान चार युद्धों में जब हिन्दुस्तान को नहीं हरा सका, हमने उनके 91 हजार कैदियों को अपनी कैद में ले लिया था। उसके बाद उसने तय किया कि इसे बदला जाए और हिन्दुस्तान को थाउजैंड कट्स, हजार जगहों पर घाव दिये जाएं, जिससे ब्लीड होकर हिन्दुस्तान एक तरह से खत्म हो जाए और इस पर बाद में एज ए स्टेट पालिसी वहां की सरकार की नीति के मुताबिक इस आतंकवाद को प्रश्रय दिया गया, आतंकवाद को पैसा दिया गया और आतंकवाद बढ़ाने के लिए वहां पर सारी घटनाएं की गईं। अब इस बात पर हाउस को डिवाइड नहीं होना चाहिए। हाउस को इस पर मिलकर काम करना चाहिए, यह बात ठीक है। परंतु मैं याद दिलाना चाहता हूँ कि इस हाउस ने दो प्रस्ताव सामूहिक तौर पर पहले भी पास किये थे। जब चीन का आक्रमण हुआ, तब एक प्रस्ताव पास किया और चीन के आक्रमण के समय, जब आक्रमण चल रहा था तो श्री जवाहर लाल नेहरू ने हाउस में एक प्रस्ताव रखा था। वह इसी प्रकार का प्रस्ताव था और उसमें स्पष्ट रूप से यह कहा गया था कि अपनी एक इंच जमीन तक को छुड़ाने बिना हिन्दुस्तान कभी वैन से नहीं बैठेगा। परंतु उस प्रस्ताव का क्या हुआ? खड़े होकर यूनेनिमस रेजोल्यूशन दोनों हाउसेज में हुआ और उस प्रस्ताव का आज कोई नामो-निशान नहीं है। हमारी चात्स हजार मील जमीन चाइना के पास है। हम उससे बातचीत कर रहे हैं और बातचीत ऐसे ही जारी है।

दूसरा प्रस्ताव इस हाउस में पाकिस्तान के बारे में पास किया गया। जब इस प्रकार की घटना हुई थी तो पाकिस्तान के बारे में श्री नरसिंहराय जी ने यहां प्रस्ताव रखा था। उसमें यह कहा गया कि केवल एक काम बाकी है - पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को वापस लेना। यही एक काम बाकी रह गया है और सारा हिन्दुस्तान इस बात का संकल्प करता है कि हम उस जमीन को वापस लेंगे। आज उस जमीन को वापस लेने की कोई बात नहीं की जा रही है। इसलिए मेरा कहना है कि हम जो प्रस्ताव यहां पारित कर रहे हैं, इस प्रस्ताव का दृष्टि क्या होगा?

अभी मुम्बई कांड हुआ और उसके बाद गृह मंत्री का इस्तीफा हो गया। क्या इसके बाद कोई कांड नहीं होगा, क्या कोई इस बात का आश्वासन देगा कि पाकिस्तान फिर से ऐसी कार्रवाई नहीं करेगा और यदि वह ऐसी कार्रवाई फिर से करेगा तो क्या किया जायेगा, इसके बारे में न प्रस्ताव में कोई बात कही गई है और न सरकार की ओर से कोई बात कही गई है। मैं इन चीजों के बारे में इसलिए जिक्र कर रहा हूँ कि आप देखें, यहां कितनी बार इसकी चेतावनी हुई, एक, दो, तीन या चार बार नहीं, बल्कि कई बार ऐसा हुआ। अभी हमारे मित्रों ने इसका जिक्र भी किया कि 26 नवम्बर को हमला होता है और 22 नवम्बर को श्री शिवराज पाटील कहते हैं -

"â€¦ to control terrorism in the hinterland, we have to see that infiltration of terrorists from other countries does not take place through the sea-routes and through the borders between India and friendly countries. The coast line also has to be guarded through Navy, Coast Guard and Coastal Police. The Special Force and CID should identify the persons, etc. â€¦"

चार दिन पहले उन्होंने यह बात कही और चार दिन के बाद यह घटना हो गई। उससे पहले 13 नवम्बर, 2008 को, 13 दिन पहले प्रधान मंत्री जी कह रहे हैं, [\[b38\]](#)

"Terrorism and threats from the sea continue to challenge the authority of the State." इससे पहले कम से कम 15 बार चेतावनी दी गई कि सी-रूट से यह होने वाला है। लक्षद्वीप के रास्ते से पाकिस्तान के लोग वहां आते हैं, आकर अपने अड्डे कायम करते हैं और फिर वहां से अपनी सारी कार्यवाहियां करते हैं। आपने सुरक्षा के नाम पर वहां केवल एक गार्ड और एक इंस्पेक्टर लगा रखा है।

उपाध्यक्ष महोदय, यह कहा गया कि ताज होटल के मालिक को इस हमले की चेतावनी दी गई थी कि ताज पर हमला होगा। हमारे दोस्त कह रहे थे कि रामपुर में जो व्यक्ति पकड़ा गया है, उसने कहा कि ताज होटल पर हमला होगा। ताज होटल के अंदर सात दिन तक सुरक्षा रखी गई, फिर उस सुरक्षा को हटा दिया गया। हमारे मित्र कह रहे थे, जिस पर मैं जाना नहीं चाहूंगा, जिन्होंने ए.टी.एफ के बारे में जिक्र किया या अन्य बातों के बारे में कहा। मेरा कहना है कि इन बातों की ओर ध्यान क्यों नहीं दिया गया, क्यों नहीं कार्यवाही की गई? सन् 2005 से कोस्टल गार्ड की व्यवस्था को मजबूत किया जा रहा है लेकिन 2008 तक कोस्टल गार्ड पुलिस स्टेशन कायम नहीं किया गया। कोस्टल गार्ड पुलिस स्टेशन के लिये धनराशि रखी जानी चाहिये, जिसे सरकार ने नहीं रखी। कोस्टल गार्ड नौसेना पर इलाजाम लगा रहे हैं, नौसेना के चीफ रॉ पर लगा रहे हैं, रॉ होम मिनिस्टर पर लगा रहा है। यह तो एक तरह से सिविल वॉर हो रहा है। इसके बारे में विचार करने की जरूरत है कि आखिर कहां गलती हुई है? सरकार ने कहा कि इन सब बातों का विवेचन करेंगे। अभी तक किसी अधिकारी के सामने बात नहीं आयी। रॉ कह रहे हैं कि होम मिनिस्टर को सूचना दी, होम मिनिस्टर कह रहे हैं कि हमने नौसेना को सूचना दी और नौसेना कह रही है कि हमने महाराष्ट्र सरकार को सूचना दी। इस तरह सभी एक दूसरे को सूचना देने की बात कह रहे हैं लेकिन यह कब से चल रहा है? अगर आप देखेंगे तो मालूम होगा कि यह केवल एक दिन की बात नहीं है। ऐसा लगातार कई दिनों से चल रहा है। मैंने यह सब इसलिए कहा क्योंकि सारे देश में गुरसे की लहर है और इस लहर के कारण आपने यह प्रस्ताव रखा है। इस प्रस्ताव में आपने जिक्र किया है "India shall not cease her efforts until the terrorists and those who have trained, funded and abetted them are exposed and brought to justice. हमारे यहां लोग कह रहे थे कि आतंकवादियों के टुकड़े कर दिये जाने चाहिये परन्तु वया मैं गृह मंत्री जी से पूछ सकता हूं कि आप जो कह रहे हैं कि "We will bring them to justice." जस्टिस होने के बाद, आज तक निवली कोर्ट से ऊपरी कोर्ट तक ने पार्लियामेंट पर हमला करने वाले अफजल के खिलाफ फांसी की सजा सुनाई, जिसे आपने चार साल से रोक रखा है, आखिर क्यों रोक रखा है? यह घटना आज से सात साल पहले हुई और 2005 में सुप्रीम कोर्ट ने सजा-ए-मौत दी। अगर आतंकवादी को लगे कि पहले तो वह पकड़ा ही नहीं जायेगा, पहले उसकी सूचना ही नहीं मिलेगी, अगर सूचना मिल भी गई तो यहां आने के बाद मारा नहीं जायेगा, अगर पकड़ा भी जाता है तो सजा नहीं होगी और अगर सजा हो भी गई तो उसे एवजीव्यूट नहीं किया जायेगा- Where is the will? आप कह रहे हैं कि आतंकवाद को कुचलने के लिये पाकिस्तान पर हमला करने से हल नहीं हो सकता है। अगर यह हल नहीं तो फिर वया है? आतंकवादी को पकड़ने के बाद, सजा-ए-मौत होने के बाद अभी उसे माफी देने के लिये फाईल 6 साल तक दबा कर रखी, वया आतंकवाद से मुकाबला करने का यह तरीका है? मैं इसका जिक्र इसलिए करना चाहता हूं कि अभी बाटला हाऊस में केस हुआ। उसके बारे में पुलिस को सारी सूचना थी और होम मिनिस्टर के यहां की पुलिस को थी। इंस्पेक्टर मूल चंद शर्मा की शहादत हो गई लेकिन उस पर भी सवाल खड़े किये जा रहे हैं। यह कोई गुजरात की पुलिस नहीं थी, आपके अपने यहां की पुलिस थी जिसने वहां रेड किया और इसमें मूल चंद शर्मा मारे गये। इस मुठभेड़ में दो आदमी पकड़े भी गये। उसका पता लगने के बाद अगले दिन महरौली में घटना हो गई। इस प्रकार की घटनायें कब तक चलती रहेंगी? यहां जो भाषा कही गई है, वह आपके नेता ने कही है कि हम आपके साथ हैं, आखिर इस सवाल का कोई जवाब है जो आप कह रहे हैं कि "India shall firmly counter all evil designs against the unity, sovereignty and total integrity" सारी दुनिया में ईराक को छोड़कर हिन्दुस्तान सब से ज्यादा आतंकवाद से प्रताड़ित है परन्तु इतना प्रताड़ित होने के बावजूद पाकिस्तान से लड़ाई करना मुनासिब नहीं होगा, यह आप कह रहे हैं। फिर आतंकवाद से आप कैसे मुकाबला करेंगे? हिन्दुस्तान में कोई लॉ नहीं है, वया इससे ज्यादा शर्मनाक बात और हो सकती है? [s39]

हिन्दुस्तान अकेला ऐसा बढकिरमत देश है, जहां 80 हजार से ज्यादा लोग मारे गये हैं। हमारे चारों युद्धों में जितने सेना के जवान मारे गये, पाकिस्तान से हमारी चार लड़ाईयां हुई हैं, चारों लड़ाईयों में हमारे जितने सैनिक और अर्द्ध सैनिक बल के जवान मारे गये हैं, उससे दुगने से ज्यादा आतंकवादियों के हाथों मारे गये हैं। हमने बहुत जोर से इस बात को उठाया है। आतंकवादियों से मुकाबला करते हुए जिन शहीदों ने शहादत दी है, हम उनको नमन करते हैं। यह कहा गया कि हमारे जवान 303 रायफल के साथ लड़ रहे थे और वे ए.के.47 लेकर आये थे। हमने अपने जवानों को ए.के.47 क्यों नहीं दी? हमने अपने जवानों, कोस्ट गार्ड के जो जवान हैं और दूसरे हैं, उनको पूरी सुविधाएं मुहैया क्यों नहीं कराईं? आपने गृह मंत्रालय के बजट में ये बातें क्यों नहीं रखीं? यह बात तीन साल से कही जा रही है कि सी-रूट से हमला होगा। अगर मैं तीन साल का सारा विवरण बताना चाहूँ तो कम से कम बीस बार वार्निंग दी गयी है कि सी-रूट से हमला होगा। अभी आड़वाणी जी ने उसको पढ़कर सुनाया था। शिवराज पाटिल जी के 2006 के बयान में विलयरली लिखा है कि हिन्दुस्तान पर सी-रूट से हमला होने वाला है। इसके लिए सावधानी क्यों नहीं बरती गयी? अगर सावधानी बरती नहीं जानी है, केवल यह प्रस्ताव पारित कर देना है और यह केवल प्रस्ताव ही रह जाएगा, तो हम आपसे यह जरूर पूछना चाहते हैं कि वया इसी प्रकार से आतंकवाद का मुकाबला होगा? पोटा कानून नहीं होगा, पोटा कानून नहीं है, तो विदम्बरम कानून बना दीजिए, राजीव गांधी एन्टी टेरिज्म लॉ बना दीजिए। कोई एन्टी टेरिज्म लॉ हिन्दुस्तान में हो तो सही। इंग्लैंड के अंदर केवल एक लॉ है और उसका नाम उन्होंने पैट्रियाटिक लॉ रखा है। वह हमसे कहीं ज्यादा सख्त है।

मानवाधिकारों का हनन करने की बात यहाँ आती है। मानवाधिकारों के हनन की बातें मानवों के लिए होता है, शैतानों के लिए नहीं होता है। जो औरतों और बच्चों को मार डालें, यहाँ पर आकर लोगों को खत्म कर दें, उनके खिलाफ बहुत भावना व्यक्त की जा रही है, सारा हाउस भावना व्यक्त कर रहा है, परन्तु भावना व्यक्त करने के बाद भी, उसके खिलाफ कोई कानून कहाँ है? इसमें लिखा हुआ है कि आतंकवादियों के पास अकूत धन है, अनलिमिटेड रिसोर्सेज हैं। उनके पास बेइतहा पैसा है। उस पैसे से वे लोगों को खरीद भी सकते हैं, वैहिकल भी खरीद सकते हैं, सी-रूट से भी आ सकते हैं, नावें भी ला सकते हैं, सब कुछ कर सकते हैं। उनकी सरकार भी पीछे खड़ी है। पूणव जी कहते हैं कि ये सरकार से बाहर के लोग हैं, बाहर के लोग कहाँ से आये हैं - कोई आसमान से तो नहीं टपके हैं, पाकिस्तान से नहीं आये हैं। पाकिस्तान को वार्निंग देते हैं तो वे एक जगह से दूसरी जगह बदल लेते हैं। एक जगह से हटकर दूसरी जगह चले जाते हैं, दूसरी से हटकर तीसरी जगह चले जाते हैं, इतना पैसा उनके पास है। उनको पकड़ने के लिए कौन सा कानून है? आपके द्वारा कोई कानून न बनाना, मैं समझता हूँ कि इससे ज्यादा नाकामी, इससे ज्यादा गलत बात, इससे ज्यादा आतंकवादियों को प्रश्रय देना, आतंकवाद का समर्थन करना - यह नहीं हो सकता कि हिन्दुस्तान में उसके लिए कोई कानून न हो। आपने जिक्र नहीं किया कि हम कोई ऐसा हार्ड एन्टी टेरिज्म लॉ बनाएँगे, जिससे टेरिस्टों में कोई आतंक पैदा हो। आतंकवादियों में आतंक नहीं है और सारी जनता आतंकित है, सारा देश आतंकित है, सारा देश सहमा हुआ है। अभी कल परसों ही आया है कि दिल्ली निशाने पर है। कल रात को दिल्ली में एक छोटी सी घटना हुई, सारी दिल्ली सहम गयी, सब एक-दूसरे को फोन कर रहे थे। किसी ने वहाँ कोई सामग्री रख दी थी। इससे सारी दिल्ली दहली हुई है। लोग इस बार रामतीला, दुर्गा पूजा में नहीं गये। दिल्ली सहमी हुई है, सारा हिन्दुस्तान सहमा हुआ है। आप कहते हैं कि हम बड़े जोर से मुकाबला करेंगे। हमारे नेता ने आपसे कहा है कि आप कदम उठाएँ, हम आपके साथ हैं। आप कदम उठाएँ तो सही, आप पोटा बनाइए, हम आपके साथ हैं। आप यहाँ पर आतंकवादियों को सजा दीजिए, हम आपके साथ हैं। आप पाकिस्तान के खिलाफ कड़ा कदम उठाइए, हम आपके साथ हैं, लेकिन हम आपका साथ इस बात पर नहीं दे सकते कि आप वोट बैंक पॉलिटिक्स के लिए किसी भी तरह आतंकवादियों को छोड़े रखें, आतंकवादियों के खिलाफ कदम न उठाएँ, आतंकवाद को फैलने दे। आपके नारायणन साहब ने कहा कि - There are 800 modules in India being funded by ISI. उनको यह मालूम होगा तभी उन्होंने आपसे जिक्र किया है। आप उन 800 को रमैश कीजिए। अगर आप उन 800 को रमैश करेंगे तो हम आपके साथ खड़े हैं। पाकिस्तान के खिलाफ आप कोई भी जोरदार कदम उठाइए, हम आपके साथ हैं और पूरा देश आपका साथ देगा, किन्तु यह नहीं हो सकता है कि आप कोई कदम न उठाएँ, अपने सी-कोस्ट को भी खुला छोड़ दें और बांग्लादेश के मार्फत आर्ये, असम के अंदर पाकिस्तानी झंडे लहराएँ और कोई कदम न उठाएँ। वया गृह मंत्री जी आपसे नहीं पूछा जाना चाहिए कि असम के अंदर जिन्होंने पाकिस्तानी झंडे लहराये, और झंडे लहराकर वहाँ डेढ सौ आदमी मार दिये,

उन लोगों के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हुई, [r40] उनको टीवी पर दिखाया गया। आखिर लोग देखते हैं लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई। कश्मीर में पाकिस्तानी झंडे लहराए जाएं, तो कोई कार्यवाही नहीं। अगर सरकार चाहे कि उनका इस बात पर समर्थन किया जाए कि बंगलादेश हो या पाकिस्तान हो या कोई और सेक्टर हो, उनके खिलाफ किसी तरह की कार्यवाही न करें और केवल भाषा से, कागज़ की तलवारें चलाएं, उससे आतंकवाद मिटने वाला नहीं है। इसलिए हम आपसे कहना चाहते हैं कि सारा देश इस समय आपका साथ दे रहा है। यह समय है कि आप कठोर कार्यवाही करें। एक बात यही कही गयी कि ऐसा नहीं हो सकता। ईट का जवाब पत्थर से नहीं देंगे तो कैसे होगा? अगर वे एक आँखा फोड़ते हैं तो उनकी दोनों आँखें नहीं फोड़नी, अगर उन्होंने एक दाँत तोड़ा है तो उनका जबड़ा नहीं तोड़ना, अगर इस प्रकार की बात नहीं करनी तो कोई घबराएगा कैसे? कुछ तो करना पड़ेगा। इसका कोई जिक्र इसमें नहीं है। यह एक रिजॉल्यूशन है - हम रिजॉल्यूशन पास करते हैं कि आतंकवाद को कभी सफल नहीं होने देंगे। ऐसे रिजॉल्यूशन तो बीसियों बार पास हुए और मैंने आपको बताया कि चाइना के खिलाफ वार के समय का रिजॉल्यूशन हुआ, पाकिस्तान के संबंध में रिजॉल्यूशन हुआ, उन सब रिजॉल्यूशंस को बाद में सारी दुनिया भूल जाती है। अगली घटना कभी भी घटी तो क्या आप इसकी जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं? क्या फिर यही होगा कि एक और गृह मंत्री को हटा दें और अगर एक और कांड हो गया तो फिर तीसरा बना दें। इसमें जॉइंट रिस्पॉन्सिबिलिटी होती है। गृह मंत्री की जिम्मेदारी सारी बातों की नहीं है। परंतु इस समय हमने कहा नहीं है, आडवाणी जी ने इसका उल्लेख नहीं किया कि जाना चाहिए था तो सारी सरकार को जाना चाहिए था। परंतु इस समय जिस तरह की स्थिति में आप काम कर रहे हैं, उसमें कम से कम रिजॉल्यूशन में तो पोटा को वापस लाने का, एंटी टैरर ला बनाने की बात होनी चाहिए थी। जो आप सेक्टरल जांच एजेंसी बनाने की बात कर रहे हैं, हम भी चाहते हैं कि एक फ़ैडरल जांच एजेंसी होनी चाहिए, पर वह अगर बिना कानून के होनी तो क्या काम करेगी? एक फ़ैडरल एजेंसी को अगर सिर्फ़ ला एंड आर्डर मेनटेन करना है, केवल उसने किसी चोर या डाकू को पकड़ना है, कोई कानून नहीं है तो फिर ला एंड आर्डर तो स्टेट सबजैक्ट है। कोई स्टेट वचो मानेगा? आप फ़ैडरल एजेंसी बनाएं। उसके पीछे कोई ज़ोरदार पैट्रियॉटिक ताँ रखें। जैसा कानून इंग्लैंड में है, अमरीका में है, ऐसा कानून उसके साथ रखें तो हमें बड़ी खुशी होगी और हम भी उस फ़ैडरल एजेंसी का पूरा समर्थन करेंगे बशर्ते कि उसके हाथ में आतंकवाद को रोकने के लिए कोई कड़ा कानून हो। आज दुर्भाग्य से यह हो गया है कि पैट्रियॉटिज्म या पैट्रियाट या नेशनलिज्म माने गाली सी हो गई है। नेशनलिज्म की बात करना, पैट्रियाटिज्म की बात करने को कहा जाता है कि यह कम्यूनल है, इसे कम्यूनल बातें कहकर हटाया जाता है। मैं गृह मंत्री जी से अनुरोध करूँगा कि हमने आपको पूरा समर्थन दिया है, सारा सदन और सारा देश समर्थन दे रहा है। उसको लेकर आप कोई कड़ी कार्यवाही करिये और वह कड़ी कार्यवाही ऐसी होनी चाहिए कि जिसके बाद आतंकवाद रुके। ऐसा न हो कि फिर कोई आतंकवादी घटना हो और हमें फिर ऐसा प्रस्ताव पास करना पड़े। इन्हीं शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

श्री अनंत गंगाराम गीते : उपाध्यक्ष जी, हिन्दुस्तान दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और लोकतांत्रिक देश होने के नाते हमने लोकतांत्रिक व्यवस्था को यहां स्वीकार किया है। इस व्यवस्था में सत्ता पक्ष और विपक्ष का होना स्वाभाविक है। इस लोकतांत्रिक राज व्यवस्था में जब हम चुनाव के माध्यम से सत्ता में आते हैं तो चुनावी मुद्दे होना स्वाभाविक है। जब कोई चुनावी मुद्दे की बात बनती है तो विवाद होना, मतभेद होना लोकतंत्र में स्वाभाविक है। इसलिए कई बार इस सदन में भी हम एक दूसरे के खिलाफ लड़ते हैं। ऐसा कई बार हुआ है। कई बार हम एक दूसरे के खिलाफ आरोप लगाते हैं। अनेक मुद्दे ऐसे हैं, जिनमें मतभेद होते हैं और एक दूसरे के खिलाफ आरोप लगाते हैं, [h41] इसके बावजूद हमारे देश का यह इतिहास रहा है कि जब भी देश पर हमला हुआ है, तब हम सारे विवादों, मतभेदों और सारी राजनीति को भूल कर देश की रक्षा करने में एक रहे हैं। चाहे कोई भी सरकार सत्ता में हो, उसके साथ हम एक रहे हैं। यह हमारा इतिहास रहा है और उसी इतिहास को आज इस सदन में दोहराया जा रहा है।

उपाध्यक्ष महोदय, आडवाणी जी ने चर्चा की शुरुआत की और उन्होंने सही दिशा में इस चर्चा को शुरू किया। मुंबई में जिस प्रकार से आतंकियों के हमले हुए, उनमें जो शहीद हुए, उसमें चाहे पुलिस के अधिकारी, पुलिस कर्मी, एनएसजी के कमांडो या जो भी हमारे कर्मचारी हों, जो देशी-विदेशी नागरिक शहीद हुए, उनके प्रति कल इस सदन में श्रद्धांजलि अर्पित की गई, जिन्होंने जान हथेली पर लेकर सारे आतंकवादी हमले से मुकाबला किया। 60 घंटे तक यह संघर्ष चलता रहा, उसके बाद हमारे एनएसजी और पुलिस को सफलता मिली। इसलिए उन सारे वीरों को, जिनके प्रति हमें गर्व है, पूरे देश को उनके प्रति गर्व है, उनका सम्मान भी इस सदन में किया और देश ने भी किया। उस आतंकवादी हमले की सफलता के बाद, आडवाणी जी ने जिस बात का यहां जिक्र किया, मीडिया ने एक जवान से पूछा कि आज जब सफलता मिली है, आपने आतंकवादी हमले पर काबू पाया है, आतंकवादियों को खत्म कर दिया है तो आपको कैसा लगता है, उन्होंने उसका जो जवाब दिया, मैं उसे यहां दोहराना चाहता हूँ। उस जवान ने यह कहा कि हमारे पास इस देश में इतनी ताकत है कि हमारे ऊपर कोई भी हमला हो, उससे मुकाबला करने की एवं टकराने की ताकत हम में है। हम हर हमले में दुश्मन से जीत सकते हैं, टकरा सकते हैं। हर हमले से टकराने की ताकत हम में है। उसका दूसरा अर्थ यह निकलता है कि हमारी सेना, एनएसजी एवं पुलिस सक्षम है, सिर्फ़ राजनीतिक हौसले की आवश्यकता है। सबसे बड़ी कमजोरी यदि है तो वह आज पोलिटिकल विल की है। हम सही निर्णय नहीं कर पा रहे हैं। आतंकवाद के खिलाफ सख्त से सख्त जो कार्यवाही होनी चाहिए या कड़ी से कड़ी कार्यवाही करनी चाहिए, उसके लिए जो पोलिटिकल विल चाहिए, दुर्भाग्य से उसकी आज कमी है। इसलिए आज सारे देश की जनता हम पर नाराज है। एसएमएस सभों को आते हैं और वे यही कहते हैं कि हम इस देश के जो राजनीतिज्ञ एवं पोलिटिशियंस हैं, उन पर नाराज हैं। जनता यह मानने लगी है कि इनमें ताकत नहीं है, आतंकवाद से लड़ने और इसे रोकने के लिए ये सक्षम नहीं हैं। इस प्रकार की नाराज़गी आज देश की तमाम जनता में है। इसलिए किसी भी राजनीतिक समर्थन के बग़ैर, जो दो लाख से ज्यादा लोग यहां श्रद्धांजलि अर्पित करने गए थे, उनका जो क्रोध एवं गुरसा था, उसे टी.वी. पर हमने देखा है, अखबारों में पढ़ा है। [s42]

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस बात के लिए गृह मंत्री जी को धन्यवाद दूँगा कि उन्होंने कम से कम इस बात को स्वीकार तो किया। मुझे याद है कि जब भी आतंकी हमले देश पर हुए, चाहे वह मुंबई में जुलाई में रेलों में आतंकवादियों का हमला हो, उसके बाद जयपुर का हमला हो, उसके बाद दिल्ली में हमला हुआ, वह हो, हर बार जब यह चर्चा इस सदन में आई, तब कभी भी इस बात को गृह मंत्री ने स्वीकार नहीं किया कि यह आई.बी. की या हमारी असफलता है। पहली बार, गृह मंत्री जी ने मुंबई हमले के बाद, इस बात को स्वीकार किया है कि यह हमारी या आई.बी. की असफलता है। उन्होंने मुंबई जाकर इस बात को स्वीकार किया और स्वयं एपोलोजी मांगी कि मैं क्षमा चाहता हूँ। उन्होंने मुंबई जाकर कहा कि जो हमारी कमी रही या जो हमारी विफलता है, उसके लिए मैं क्षमायाचना करता हूँ।

उपाध्यक्ष महोदय, सवाल केवल क्षमायाचना करने का नहीं है। यह तो उनका बड़प्पन है कि उन्होंने इसे स्वीकार किया। मैं उनके बारे में एक बात और कहूँगा कि जब उन्होंने आज पूतः यहां स्टेटमेंट दिया, उसमें उन्होंने दो बिल लाने का जिक्र किया। उन्होंने अपने स्टेटमेंट में सुबह इस बात का जिक्र किया कि सउदी अरब से इन सारे आतंकवादियों को धन मिल रहा है और पाकिस्तान की गुप्तचर संस्था, आई.एस.आई. की तरफ से इन्हें आतंकवादी कार्यवाइयों हेतु इंटीजीजेंस मिल रही है। इन दोनों के खिलाफ लड़ने के लिए हमें अच्छे कानून की आवश्यकता है। इस संदर्भ में वे दो बिल लाना चाहते हैं। उन्होंने अपेक्षा की है कि सदन में इन बिलों पर हमें समर्थन मिले और उन बिलों को हम इसी सत्र में पारित करना चाहते हैं। हम आपको आश्चर्य करते हैं कि देश की सुरक्षा के लिए आप जो भी कदम उठाएंगे, जो भी बिल लाएंगे, उनका समर्थन यह सदन करेगा। उनका विरोध बिलकुल भी सदन नहीं करेगा। इसमें कोई राजनीति की बात नहीं है। इसमें राजनीति करने का कोई सवाल नहीं है।

महोदय, आज सुबह जब प्रोफेसर विजय कुमार मल्होत्रा जी बोल रहे थे, तब उन्होंने पोटा का जिक्र किया। मैं इस चर्चा को किसी दूसरी दिशा में नहीं मोड़ना चाहता हूँ। श्री लालकृष्ण आडवाणी जी ने इस चर्चा की शुरुआत करते हुए, जो दिशा दी है, मैं भी उसी दिशा में बोलना चाहता हूँ। इसलिए कहना चाहता हूँ कि सख्त से सख्त और कड़े से कड़े कानून की आवश्यकता है। अतः कम से कम इतना साहस तो इस सरकार को अवश्य दिखाना चाहिए कि जो धन आतंकवादियों को सज्दी अरब से मिल रहा है, उस धन का हमारे राष्ट्र के खिलाफ प्रयोग किया जा रहा है और आतंकवाद को हमारे देश में बढ़ावा दिया जा रहा है या इन आतंकवादियों को आई.एस.आई. के माध्यम से जो इंटीलीजेंस का सपोर्ट मिल रहा है, उसे रोकने के लिए हमें सख्त कानून बनाने की आवश्यकता है।

उपाध्यक्ष महोदय, आज पूरे देश में आतंक का साया छाया हुआ है। जो गुरसा हमारे देश में है और उसे देखकर जब किसी सदस्य ने कहा कि हमें पाकिस्तान पर हमला करना चाहिए, तो तुरन्त यहां पर दो राय हो गई। एक तो हमारे विदेश मंत्री और सदन के नेता ने तुरन्त खंडन कर दिया कि पाकिस्तान पर आक्रमण करना, आतंकवाद का कोई हल नहीं है। उन्होंने तुरन्त यहां पर कह दिया कि आतंकवाद को रोकने के लिए पाकिस्तान पर हमला करना, कोई हल नहीं है। इसके बाद हमारे कई दूसरे सदस्यों ने भी कहा कि पाकिस्तान पर हमला करना, आतंकवाद को समाप्त करने का कोई हल नहीं है।

महोदय, हमले की बात अलग है। आज इस देश की जनता यह चाहती है कि कम से कम हमारी सरकार यह साहस दिखाए और कहे कि जब तक पाकिस्तान आतंकवाद को बढ़ावा देना बन्द नहीं करेगा या आतंकवाद को दबाने के लिए सही कदम नहीं उठाएगा, तब तक पाकिस्तान के साथ भारत के सारे संबंध हम समाप्त तोड़ देंगे। यह कहने की आवश्यकता है और सरकार को इन सारे संबंधों को तोड़ना चाहिए। हमें पाकिस्तान से कोई संबंध नहीं रखना चाहिए। जब हमारे गृह मंत्री कह रहे हैं कि मुम्बई पर जो आतंकवादियों का हमला हुआ है, उसकी जड़ें पाकिस्तान में हैं, हमारे विदेश मंत्री भी यही कह रहे हैं कि मुम्बई पर जो आतंकी हमला हुआ है, उसकी जड़ें पाकिस्तान में हैं और पाकिस्तान के प्रेसीडेंट भी यही कह रहे हैं कि जिन्होंने मुम्बई पर हमला किया, वे सारे पाकिस्तानी हैं। वे इस बात को स्वीकार तो कर रहे हैं, लेकिन जो पाकिस्तान के प्रेसीडेंट, श्री जरदारी हैं, उनका आपने बयान पढ़ा होगा या सुना होगा, तो आपको पता लगेगा कि वे इस बात को तो स्वीकार कर रहे हैं कि मुम्बई पर आतंकी हमला करने वाले पाकिस्तानी हैं,

लेकिन वे यह भी कह रहे हैं कि इसका पाकिस्तान से कोई ताल्लुक नहीं है। आखिर में, जब पूरा स्टेटमेंट खत्म हुआ, तब एक तौर पर वे यह कहकर हमें वेतावनी दे रहे हैं, कि यदि हिन्दुस्तान ने पाकिस्तान पर हमला किया तो पाकिस्तान लड़ने के लिए तैयार है - इसका मतलब क्या है? पाकिस्तान के प्रेसीडेंट यह कह रहे हैं कि यदि हिन्दुस्तान इस मामले को लेकर हमला करता है तो पाकिस्तान हिन्दुस्तान से टकराने में सक्षम है - इसका अर्थ क्या होता है? इसलिए सबसे पहले हमें यह फैसला करना चाहिए, सरकार को यह निर्णय करना चाहिए कि जो भी हमारे पाकिस्तान से सम्बन्ध हैं, उन्हें तुरन्त खत्म करना चाहिए। प्रस्ताव इस बात का होना चाहिए था, आज सदन में इसी बात का प्रस्ताव लाना चाहिए था और सदन से राय लेनी चाहिए थी कि हमें पाकिस्तान से सम्बन्ध तोड़ देने चाहिए।

हमारे एक गज़ल गायक जगजीत सिंह हैं। हमने उनका एक बयान कल अखबार में पढ़ा। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान पहले ए.के.47 भेजता है, मशीनगन भेजता है और उसके बाद हारमोनियम भेजता है। हमारे एक गज़ल गायक हैं और गज़ल गाने वाला बहुत भावुक होता है, जो गज़ल गायक हैं, वे ज्यादा भावुक होते हैं, वे ज्यादा शान्तिप्रिय होते हैं, वे ज्यादा अहिंसावादी होते हैं, लेकिन इस देश के गज़ल गायक को भी यह कहने पर मजबूर होना पड़ा कि पाकिस्तान पहले ए.के.47 भेजता है और उसके बाद हारमोनियम भेजता है। हमें आगे से किसी भी पाकिस्तानी कलाकार को अपने देश में नहीं आने देना चाहिए, यह हमारे देश का एक गज़ल गायक कहने लगा है, और हमें किस दिशा में जाने की आवश्यकता है, हमें किसकी और राय चाहिए?

आज देश की आम जनता चाहती है कि हमें पाकिस्तान से सम्बन्ध तोड़ देने चाहिए, तोड़ ही देने चाहिए। जिस दिन हम यह एतान करेंगे, आतंकवाद को सबसे पहला झटका उसी दिन लगेगा कि आज सचमुच हिन्दुस्तान आतंकवाद के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार हुआ है। यह उसी समय साबित होगा, हमला तो बाद में करने की बात है। पाकिस्तान आवयूपाइड कश्मीर के अन्दर जो आतंकवादी प्रशिक्षण केन्द्र हैं, उनके ऊपर हमला करने की बात तो बहुत दूर की है, लेकिन सबसे पहले इन सारे सम्बन्धों को खत्म कर दो। हमें समझौता एक्सप्रेस नहीं चाहिए। हमें नहीं चाहिए कि हमारे यहां से बस वहां पर जाये, यह कोई समझौते का विषय नहीं है। पाकिस्तान आज जिस प्रकार से दोस्ती का हाथ बढ़ाता है, हम दोस्ती का हाथ बढ़ाते हैं, वह हम पर यहां हमला करता है।

वे जो आतंकवादी हमले हैं, पहली बार मैं इस बात के लिए सरकार को धन्यवाद दूंगा कि हमला मुम्बई पर हुआ, लेकिन सरकार ने कम से कम यह तो बयान दिया कि यह हमला मुम्बई पर नहीं, पूरे देश पर हमला है। अब पहली बार हम कम से कम यह अहसास तो करने लगे हैं कि यह मुम्बई पर हमला नहीं है, यह देश पर हमला है और पिछले कई वर्षों से पाकिस्तान इस बात को पूरी तरह जानता है। पाकिस्तान को इस बात का अहसास है कि आम युद्ध, डिवलेयर्ड वार में पाकिस्तान हमसे कभी जीत नहीं सकता और इसीलिए उन्होंने आतंकवाद के नाम पर यह छिपा युद्ध शुरू किया है। कहते हैं कि यह लश्कर-ए-तैयबा की तरफ से है, उनसे हमारा कोई सम्बन्ध नहीं है, लेकिन एक प्रकार से यह हमारे देश के खिलाफ चलाया हुआ अघोषित युद्ध है। यदि हमें आतंकवाद से टकराना है, आतंकवाद पर कबू पाना है तो भारत सरकार को भी यह कहने की आवश्यकता है कि यह हमारे देश के खिलाफ आतंकवादी हमला नहीं, यह हमारे देश के खिलाफ पाकिस्तान द्वारा चलाया हुआ युद्ध है और युद्ध के स्तर पर ही हमें इसका मुकाबला करना चाहिए, और आवश्यकता होगी तो हम इस स्तर पर इसका मुकाबला करेंगे। कम से कम यह कहने का साहस तो हमें दिखाना चाहिए। जब तक हम यह साहस नहीं दिखाएंगे, हम इस पर कैसे कबू पाएंगे। कल रात को किसी अनजान जगह पर कनाट प्लेस में एक चीज मिली थी और 11 बजे आज तक मैं एक खबर आ गई, ब्रेकिंग न्यूज़ आ गई कि आर.डी.एक्स. मिला या कुछ आतंकी विस्फोटक सामान वहां पर मिला।[\[R43\]](#)

इससे पूरी रात दिल्ली सो नहीं पायी। हमारी क्या हालत है? हमारा सार्वभौम देश है। सौ करोड़ से ज्यादा आबादी वाला यह देश है। हमारे पास हमारे देश की सीमाओं की रक्षा करने वाली सक्षम सेना है, दुनिया की किसी भी ताकत से टकराने वाली सेना हमारे पास है, हमारे पास उतनी ही सक्षम नौसेना है, हमारे पास उतनी ही सक्षम आंतरिक सुरक्षा के लिए आवश्यक इंटरनल सिविलोरीटी फोर्स हैं, हमारे पास पुलिस है, हमारे पास केवल राजनीतिक मनोबल नहीं है। यह देश कमजोर है तो सिर्फ राजनीतिक मनोबल के मामले में कमजोर है। अब समय आया है राजनीतिक मनोबल को प्रकट करने का, राजनीतिक मनोबल को टढ़ करने का और यह कहने का कि जब तक पाकिस्तान आतंकवाद को बढ़ावा देगा, अभी दो दिन पहले कौंडालीजा राइज हमारे देश में आकर वापस नहीं। यहां आकर उन्होंने पाकिस्तान को धमकया। पाकिस्तान में जाकर एक बयान दिया और फिर अमरीका में जाकर उन्होंने पाकिस्तान को धमकया कि जो टेररिस्ट कैम्प पाक आवयूपाइड कश्मीर में चलाये जा रहे हैं, अगर पाकिस्तान उन्हें खत्म नहीं करेगा, तो हमें हमला करना पड़ेगा। अमरीका की विदेश मंत्री वहां से तलवार सकती हैं। आडवाणी जी ने कहा कि हमें किसी के बल पर नहीं, इस आतंकवाद से अपने ही बल पर लड़ना होगा, अपनी

ही ताकत पर लड़ना होगा और यह दिखा देना होगा कि देश की सुरक्षा के मामले में कोई समझौता नहीं हो सकता है, चाहे इसके लिए हमें जो भी कदम उठाना पड़े, हम उठाएंगे। इस संदर्भ में सरकार जो भी कदम उठाएगी, यह सदन ही नहीं सारा देश इस सरकार के साथ में होगा।

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY (PURI): Mr. Deputy Speaker, Sir there is no word to narrate the incidents of terror of Mumbai carnage.

Sir, it is reported in the statement of the hon. Minister of Home Affairs that about 164 persons (civilians and security personnel) lost their lives and 308 persons were injured. Among the civilians killed were 26 foreigners belonging to many nationalities.

Sir, at the outset, I would like to pay my homage and respect to the families, the innocent civilians who were killed and the brave security personnel who laid down their lives in order to save the lives of many others.

Sir, now the country has coped with the aftermath of the horrors of Mumbai. One genuine cause of satisfaction must be that our countrymen of all religions have shown that they are united and it is most satisfying that they have expressed their anger and determination. But I wonder whether this was really a terrorist attack or something more? Hon. Leader of the Opposition, Shri Advani, has narrated the details. I think this event was looking a lot more like a Classical Special Forces or Commando style raid that it did like any terrorists attack that we had seen earlier.

Sir, I believe that the hijacking a fishing vessel, infiltrating *via* the sea, *via* inflatable boat, launching diversionary attacks, designed to pool the first responders out of the way of the subsequent follow on groups that struck Chatrapati Shivaji Terminal, the Oberoi, the Taj Mahal, the Nariman Centre and the equipment the terrorists carried and their attire were all in the vein of a covert special-forces raid, rather than a traditional terrorist attack.

Hence there is a little doubt that this was sponsored and planned with State support. Hon'ble Prime Minister and hon. Minister of External Affairs have already told the nation that the Government has in possession of clear and incontrovertible proof. [\[a44\]](#)

16.00 hrs.

They have already told the nation. They have told the nation that the Government is in possession of clear and incontrovertible proof that Lashkar-e-Toiba had carried out the attacks and the group's leaders were trained and supported by Pakistan's ISI.

Even, in the recent past, in the last August, 2008, a piece of evidence also surfaced after the bombing of the Indian Embassy in Kabul when the USA intercepted the communications between Pakistani Intelligence officers and the militants who carried out the attacks. So, there is ample proof that all these attacks are being planned and supported by Pakistan's ISI.

Lashkar-e-Toiba , a terrorist organisation that is listed in the UN Security Council Resolution 1267 and is banned in Pakistan and now functioning in different names. It is now needed that India should build international pressure on Pakistan to hand-over those who masterminded the Mumbai terror attack by going to the United Nations Security Council under Resolution 1373, adopted in September, 2001 by the UN Security Council, which is a counter-terrorism measure that mandates member-countries of the UN to initiate steps to curb terrorist activities. Since 2001, although this Resolution 1373 has been adopted by the UN Security Council, nothing has been done. Pakistan is going ahead with terrorist activities. The entire thing is planned and supported by the Pakistan Government. Although the terrorist outfits in the banned organisation are banned in Pakistan, they are functioning in different names; they are being funded but nothing has been done. The Security Council is just silently observing all these things by just passing the Resolution 1373.

The challenge before India is to respond to the terror attack in an intelligent and peaceful way. India should make a case for approaching the international forum persuasively and democratically through the powerful instrument of Resolution 1373. This will expose India's diplomatic and political capabilities. It would be tested in the coming days. It would show how this Government is successful in the international forum to pursue and to utilise the instrument of 1373 which has been adopted by the UN Security Council. That will be a test for this Government how it is capable of pursuing it in the international forum.

In the matter of administration and maintenance of internal security too, which is the constitutional obligation of this Government under Article 355 of the Constitution, the capability of this Government is reflected with stories of failures.

In fact, India has since 2004 lost more lives to terrorist incidents that is equal to all the lives lost in the world put together, after Iraq. They should know this. Whatever terrorist attack it may be, the people and the civilians were killed. They are equal to the people suffered in the world after Iraq. More than 75000 Indian citizens, both civilian and security personnel, have lost their lives

in the last two decades in terrorist attack. Even in the war, we have not lost so many people. In the last 20 years, the country has lost more than 75,000 citizens including security personnel. Hence an attack by terrorists on Indian citizens is an attack on India. We should consider it in that spirit. This attack is not on Mumbai alone. The attack is on India and this terrorist attack is not just a simple attack. They are declaring war against India.[\[R45\]](#)

So, we should be prepared to face these terrorists and we should see how terrorism can be wiped out completely in our country. During the rule of the UPA Government of more than 4 years, there have been 7,000 casualties in terrorist incidents and there have been 25,000 terrorist incidents that took place in the country according to the latest data available with the Union Home Ministry. This figure of 7,000 casualties in the course of 4 ½ years does not include the number of people died in the Mumbai attack.

Sir, we need a strong political will to deal with terrorism. Many hon. Members have referred to it and so I do not want to go into details. This Government lacks the political will to combat terrorism and without a strong political will it is not possible to fight against terrorism.

The terrorist attack of 26th November, 2008 in Mumbai is to India what 9th September, 2001 was to the USA. But in the USA, in the last 7 years, there has not been a single terrorist-related incident. In the aftermath of 9th September, 2001 attack, the security scenario underwent a sea change in the USA. Can India respond to the menace of terrorism like the USA? The Home Minister has learnt many things from the USA and now we shall have to learn many things from the USA to combat terrorism in our country. Mr. Minister can you implement the security arrangements of the USA in our country?

So, what needs to be done to prevent repeat of such attacks in our country? I would like to give answer to this question in the form of some suggestions. I would suggest that an urgent meeting of all the senior officials of the coastal States, Navy, and Coast Guard has to be convened by the Central Government to chalk out a comprehensive strategy for coastal security. Mr. Home Minister, are you prepared for a single window approach? A single window approach modelled on what is available in the USA is required to deal with terrorism. They have a Department of Homeland Security and they have a single window approach. Can you also do it in the same way in our country?

Then, a strong anti-terror legislation is required with dedicated fast track anti-terror courts; only legislation will not suffice; there is a need also to have fast track anti-terror courts to decide the cases quickly. Otherwise, the cases will linger on for years together in ordinary courts. Then, legislation is also necessary for permitting the Indian Navy and the Coast Guard to stop and search suspected merchant ships before they enter Indian harbours. At present we do not have any such legislation for that. Some hon. Members have referred that our Navy was not able to do anything because such ships operate within the Pakistani territorial waters. So, legislation is required for this purpose.

Then, the Government should also enhance the strength of the Navy, Coast Guard, Marine Police and Intelligence Agencies. As the Home Minister said, there is shortage of manpower. Then, security of all the 13 mega ports must be handed over to the Navy. This is my request to the Government. Then, the security of 36 minor ports must be handed over to the Coast Guard. Can the hon. Home Minister consider this proposal? In addition, a single window National Marine Advisory Authority should be created. The hon. Home Minister stated that he is creating something like this. He said that they are trying to create a national maritime advisory authority or something like that.[\[R46\]](#)

[S\[r47\]](#)ir, we do not have national electronic anti-terrorist data link and data bank. So, we should have this thing also. We should also have cooperation with other marine nations who face the same threats of terrorism and piracy.

After Mumbai terror attacks, the intelligence agencies of the Centre and Maharashtra, the Coast Guards and the Indian Navy have much to answer for. Men of National Security Guards have shown tremendous bravery and courage, and we have paid our homage to them but it is strange that for no fault of theirs it took them nine hours to reach Mumbai from Delhi – how efficient this Government is that from Mumbai to Delhi it is taking nine hours -- during which time the terrorists had dug in and killed a lot of people.

It can be said about this Government clearly that there is no will, no resolve to act and worse, there are apprehensions of political protection. The Government's bumbling response to terror attacks both in preventing them and in bringing the merchants of death to book have shocked and frustrated the countrymen.

Let us hope that this Government will come out from the political trauma it is suffering from and good sense will prevail on them to give justice to the nation.

SHRI GURUDAS DASGUPTA (PANSKURA): Sir, I rise to join the nation in unequivocally condemning the heinous terrorist attack on Mumbai perpetrated by the criminals who have been trained on the soil of Pakistan. We denounce the carnage that has taken place.

India is only one and shall remain one in fighting the terrorism that is confronting us. We shall defeat the attempt of those forces who want to destabilise India and put India in trouble. We salute the national heroes who have been instrumental in fighting terrorism. We pay our homage to those who have given their lives. We send our condolences to the bereaved families of those who have fallen victims, particularly, to those who had come from the foreign countries.

The House is speaking in one voice. That is the inherent strength of Indian democracy. But our indignation, as naturalities, must be accompanied by courage as well as patience. Our indignation cannot be allowed, my dear colleagues, to de-generate or to get de-railed into irresponsible reckless act. Our response has to be firm and responsible. We must work for the building up of international public opinion which can isolate really the mentors of terrorism in Pakistan.

Hon. Deputy-Speaker, Sir, there is no one Pakistan today. There are many Pakistans. There is a Pakistan of Bhuttos, there is a Pakistan of democracy, there is a Pakistan of Zaidis and there is a Pakistan of terrorists.[\[r48\]](#)

We cannot act in a way which will unite the entire Pakistan against India. Our friendship, bridge of friendship must be developed with the democratic forces of Pakistan who have also fallen a victim to terrorism in their own country. The hotel was sought to be destroyed in India; similarly a hotel was destroyed in Pakistan. Therefore, Sir, we must build a bridge of friendship and cooperation in the entire Subcontinent between the people who love democracy and freedom against the forces who want to destabilise this part of the world and who try to unleash terrorism on Indian nation.

Sir, I have heard the speakers who preceded me. Most interesting speeches have been made. I appreciate the statement of the Home Minister, and more so I appreciate the speech of the Foreign Minister. Over-simplification of the multi-dimensional problem is dangerous for India. Politicalisation of the outrage is a nefarious game; it is being sought to be played.

16.16 hrs (Shri Arjun Sethi *in the Chair*)

Mr. Chairman, Sir, but I must say that there is a prime question which the hon. Home Minister has to reply or think over. There needs to be introspection. The question is whether 26/11 incidents could have been averted. That is a prime question. The truth is that one particular intelligence agency has intercepted a number of messages from a well-known Al-Qaeda leader in Pakistan to unknown persons somewhere else. Three messages were intercepted. It is for the Government to find out. On September 18th, there was a message which the computers intercepted and it was a satellite conversation. It said that an operation is being planned on a particular hotel at the Gateway of India in Bombay. That was as far back as 18th September. Six days after, another message was recorded on the computer of one of the leading intelligence agencies in India which said that a criminal well-known to India was talking to another person and it was said that an attack was imminent. The next one was dangerous. On November 19th, merely seven days before the incident, a particular intelligence agency listeners picked up a message. The voice was clear. I quote what the voice said. The voice said: "We will be reaching Bombay between 9 and 11 in the night". This is for the hon. Minister to say whether there is any truth in it. But it is a matter of serious lapse. But let me tell you that no other person than the Defence Minister, Mr. A.K. Antony, while attending a particular Naval session in Kerala had made a statement. It came out in a premier daily *The Hindu*. I quote:

"Time was when the Himalayan region was thought of as border, but now the coastal region, more specifically the Indian Ocean Region (IOR), has become more significant in terms of threat perception. Therefore, we need to be more vigilant when we come to coastal security."

Sir, the point is that if three messages were intercepted by RAW, if the hon. Defence Minister made such a statement, then the conclusion is obvious that there is a gap, there is a definite gap between the intelligence agencies, intelligence system of the country and the security forces. It is quite clear that the information was not acted upon.[\[r49\]](#)

I think, a probe can only tell the truth. Therefore, I demand a probe, and the country should be made to know if there have been any lapses.

Last of all, Sir, there is a statement issued by the Naval Chief which says that there is systemic failure. We have heard of systemic failure in the economy but we have never heard of systemic failure in the operation of the Defence forces. Who is he? He is no other person than the Naval Chief. Therefore, Sir, when the nation stands totally united with the Government in fighting

terrorism, in building up international public opinion, in forcing Pakistan to take action, there is another point remains to be answered. It is that we must build up our own domestic preparedness. Our foolproof domestic preparedness is the only guarantee for preventing future assault on India. It is not eye for eye; it is not stone for stone; it is not for bomb against bomb; it is not a war-like hysteria. That is a guarantee. POTA is no guarantee. The guarantee is our preparedness. The guarantee is our political will. The guarantee is the unity of the nation. The guarantee is that the whole country is mobilized irrespective of the politics and colour to fight terrorism without allowing the people to take political advantage and without allowing the people to take partisan view of the situation. If it is so, that is the only guarantee.

POTA is no guarantee. There was POTA when Parliament was attacked. POTA is not the preventive. Our preparedness is the only preventive. Therefore, Sir, we must put our house in order. There is some disorder in the house. And not only one head should roll in Delhi and not only one head should roll in Maharashtra but there is a failure. The accountability has to be established. One person cannot be made the scapegoat. I do not hold any brief for any person who has lost his berth in the Cabinet. I do not hold any brief but the point is that it is not to put the blame on one person only. I agree that he has to take the moral responsibility but there are other holes, there are other pit-holes, there are other gaps which the Government has to take note of, and put the country into one hundred per cent foolproof preparedness to face such an eventuality in the future.

We want a composite monitoring system for ensuring collection of intelligence data and for guaranteeing that would be worked upon. We want a comprehensive system of collecting information and find out whether this information is being acted upon.

Sir, we should take all steps to ensure that 26/11 incident does not take place again. We should ensure that. Public opinion is to be aroused. Why is this Resolution? Some of my friends have been asking as to why is this Resolution; it is just on paper because similar Resolution was passed during the so-called Chinese aggression, and similar Resolution was passed during the Indo-Pakistan war. Resolution is the only symbol of national unity which will inspire the entire nation to get united and fight terrorism in the country once for all. That is why, such a Resolution is needed. It should not be viewed for political angle.

Finally, Sir, international public opinion has to be created to compel Pakistan to liquidate the launching pad of terrorism on the soil of Pakistan. International public opinion has to be created.

Sir, Pakistan is also a victim of terrorism. Therefore, people of Pakistan must be distinguished from the terrorists who are operating against India perpetually.

Sir, there should be no war hysteria. We should dissociate ourselves from war hysteria. No war-like situation should be created. The call for economic boycott of Pakistan or severance of diplomatic relations is wrong. [\[H50\]](#)

The people of Pakistan are also the victims of the aggression of terrorism.

Sir, I agree with Mr. Pranab Mukherjee that it is a long way to go. There has to be a political vision. The road to tackle terrorism cannot be short-circuited. It can be used for a slogan to consolidate electoral advantage. It is not going to benefit the nation.

Therefore, Sir, I believe that the situation is too grave. We are living under the shadow of a great tragedy. Let the nation be united; let the Parliament symbolise, become the embodiment of national unity; let the Resolution be a new breaking ground; and let the whole world know that Indian nation is one, absolutely one, in dealing with the situation despite whatever differences may be there existing. That is the Resolve, that is the determination, and that is the only and the most important guarantee not to help the Government only. We are not helping the Government only, we are helping the nation, we are helping ourselves to prevent and avert such types of situations in the future.

Therefore, I support the Statement made by the hon. Home Minister, I support the proposal for having a Resolution, I call for national unity and while saying so, I feel that India is too strong to be destabilised and cowed down.

श्री सन्दीप दीक्षित (पूर्वी दिल्ली) : महोदय, मुम्बई में जो बहुत भयानक घटना हुई है, उसकी निंदा करने के लिए, एक राष्ट्रीय संकल्प लेने के लिए और देश ही नहीं पूरी दुनिया को दिखाने के लिए हिंदुस्तान, यहां की संसद, यहां के सांसद और यहां का पूरा नेतृत्व इस देश के साथ खड़ा है। इस भयानक घटना के बाद जो एकता की भावना पूरे देश में फैली है, उसका प्रतिबिम्ब बन कर हम आज इस चर्चा में शामिल हो रहे हैं। बहुत समय पश्चात् मुझे एक युवा व्यक्ति होने के कारण भी और एक सांसद होने के कारण भी, कहीं न कहीं दिल में इस बात की उत्पत्ति हुई, जब गृह मंत्री जी के बाद सबसे पहले नेता प्रतिपक्ष ने अपना भाषण दिया, तो मुझे लगा कि भारतीय जनता पार्टी का नेता नहीं, बल्कि इस देश के प्रतिपक्ष का नेता अपनी बात सदन के सामने कह रहा है। मैं उनका धन्यवाद करता हूँ। उसके बाद विदेश मंत्री जी ने जिस प्रकार से अपनी बात कही, कठोर शब्दों में, लेकिन संयम के साथ देश के सामने विकल्पों की बात बताई, अंतर्राष्ट्रीय स्थिति का उल्लेख किया, पूरी स्थिति की पेंचीदगियों के बारे में बताया और बिना संकोच अपनी कड़ी वाणी में इस बात का अंदेश भी जाहिर किया कि अगर आवश्यकता पड़ेगी, तो जिस संयम से आज यह देश काम ले रहा है, उस संयम से आगे जाने का भी कहीं न कहीं हमारे अंदर संकल्प है। इस बात के लिए भी उनका बहुत-बहुत स्वागत करता हूँ। उसके बाद कई वक्ताओं ने अपनी बात सदन के सामने कही। यह जरूर दुर्भाग्य की बात है कि एक-दो वक्ता इस बात का राजनीतिकरण करने से नहीं चूके। मैं नहीं चाहता कि मैं उसी वाणी में बोलूँ, जैसा अन्य सदस्यों ने कहा है और मैं चाहता हूँ कि आगे बोलने वाले वक्ता भी राष्ट्र हित में राष्ट्र हित की बात यहां से पूरे देश को कहें। गृह मंत्री जी आपका आने वाला समय अत्यंत कठिन है। हमारे सामने बहुत विकल्प हैं। आतंकवाद की चर्चा में जब आप किसी चीज को लक्ष्य बना कर चले, जब यह भी पता न हो कि हमारे सामने लक्ष्य क्या है, जिस धरती से या जिन देशों से या जहां से भी आतंकवाद उत्पन्न होता है, जहां आतंकवाद की माता बैठी हुई है, उस स्थान को विद्धि करने में हमें दिवक्त हो रही है। जैसे कहा गया कि एक नहीं बल्कि कई पाकिस्तान है। वह पाकिस्तान कितना सशक्त है, उसका चेहरा क्या है? हमें आतंकवाद के खिलाफ लड़ने की बात कही जाती है और युद्ध की भी बात कही जाती है। युद्ध का भी समर्थन करता हूँ, लेकिन युद्ध किसके खिलाफ किया जाए? क्या हमारी सरहद के पास पाकिस्तान की जो फौज खड़ी है, वह हमारा असली दुश्मन है, क्या उनके जनरल जो इस्लामाबाद में बैठे हैं, वे हमारे दुश्मन हैं? [51]

क्या युद्ध की स्थिति में हम उनको परास्त कर सकेंगे? क्या वे कैम्प जहां आतंकवादी प्रशिक्षित होते हैं जो बॉर्डर में 300-400 किलोमीटर दूर या कश्मीर के किसी हिस्से में जो पाकिस्तान के कब्जे में है क्या हम उन्हें नेस्तनाबूद कर पाएंगे, क्या इसके पीछे ऐसे लोग, संगठन जो पाकिस्तान में नहीं, किसी दूसरे देश में बैठे हैं जिन में मिडल ईस्ट के देशों का नाम आता है, क्या हम उन पर प्रभाव डाल पाएंगे? मेरा गृह मंत्री जी से निवेदन है कि उस लक्ष्य को निर्धारित करना और वे कौन से लक्ष्य हैं, उनके बारे में संवाद करना आज की बहुत बड़ी आवश्यकता है। आप कहीं चले जाइए, चाहे दिल्ली की किसी गली में चले जाइए, मुम्बई में जहां के लोग क्षतिग्रस्त हुए हैं या देश के किसी गांव में चले जाइए, अगर आतंकवाद पर चर्चा होती है तो हर किसी का यह मत है, क्रोध में भी मत है, जब हम किसी चीज पर प्रतिक्रिया की बात करते हैं या युद्ध की बात करते हैं या सेना के इस्तेमाल की बात करते हैं तो वह क्रोध के कारण है। सरकार हमारे यहां के लोगों को कॉन्फिडेंस में लेती है, संवाद से बताती है कि उसके क्या लक्ष्य हैं और कहां तक जाना चाहती है। बहुत हद तक हमारे यहां का जो आक्रोश है हम उसे सकारात्मक रूप में डाल सकते हैं।

पिछले 5-10 दिनों से कई बातें आ रही हैं। विपक्ष के नेता पोटा की भी बात करते हैं। मैं यहां दूसरे मत से एक बात कहना चाहता हूँ। चाहे पोटा की बात हो या सेना को सशक्त करने की बात हो, चाहे जो भी बात हो उसे केवल लक्ष्यों से मापा जाए। मैं यहां तक कहने को तैयार हूँ कि अगर सरकार को लगे पोटा की आवश्यकता है तो पोटा लगाए और आवश्यकता नहीं है तो न लगाए। उसके पीछे राजनीति की बात नहीं होनी चाहिए। अगर टुकड़ियों को सशक्त करने की जरूरत है, सेना को दूसरे रूप में प्रशिक्षित करने की या नियोजन करने की बात हो तो उसे करें लेकिन जो भी करें, उसमें कहीं राजनीति दिखायी नहीं देनी चाहिए। उसमें केवल राष्ट्र हित दिखायी देना चाहिए। मैं स्वयं आज भी तय नहीं कर पाता हूँ जब लोग हमारे सामने विकल्प रखते हैं या सवाल-जवाब करते हैं तो उसके पीछे राजनीति छुपी है या नहीं? यह वह समय है, जब देश के नागरिक राजनीतिक नेतृत्व और राजनीतिक दलों की तरफ देख रहे हैं। अगर नागरिक के रूप में आक्रोश है तो कहीं एक आशा भी है कि इस घिनौने कांड के बाद हमारा राष्ट्र ऐसी दिशा पर चलेगा जो आने वाले समय को और ज्यादा सशक्त करेगा और देश आतंकवाद के खिलाफ अग्रिम भूमिका निभाएगा। इस मौके का इस्तेमाल करना आज हमारा दायित्व है। हम चाहे खुफिया एजेंसियों की बात करें उसे सशक्त करने, समन्वय लाने, उन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर की खुफिया एजेंसियां बनाने, या दूसरी कोई बात करें, मैं एक ही बात गृह मंत्री जी को बताना चाहता हूँ कि मेरे दिल को बहुत चोट लगी है। जब मुम्बई में दुखद घटना हुई थी तो कई लोग टेलीविजन चैनल्स में आकर बयानबाजी कर रहे थे। उसमें खुफिया एजेंसियों के भूतपूर्व अध्यक्ष भी थे, कोई रॉ का चीफ था, कोई फौज का था, कोई आईबी का था। वे वहां बैठकर जिस घड़त्ले से इसी सरकार के बारे में बातें कर रहे थे, उसे सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ। जिस संस्था के पूर्व चीफ अपनी संस्था के बारे में तॉयल्टी न रख सकें, उस संस्था की आप क्या टिप्पणी कर सकते हैं। यह इसी बात से दर्शाता है कि रिटायर होने के दो साल बाद भी उनके मन में अपनी संस्था के बारे में यह भावना नहीं पनपती है कि क्या भावना इंटीलिजेंस एजेंसी में आएगी। स्टाफिंग की बात करें, मैं किसी का दिल नहीं दुखाना चाहता हूँ लेकिन क्या हमारी खुफिया एजेंसियां उनके लिए नहीं हैं जो किसी-किसी स्टेट्स में जाकर पुलिस का काम नहीं करना चाहते हैं। क्या हमारी खुफिया एजेंसियों में ऐसे लोग आ रहे हैं जो देश के हर कोने की समस्या का विश्लेषण कर सकें? क्या उनमें इंटीलिजेंस की बात आती है? क्या हमारी खुफिया एजेंसियों के पास वे हथियार हैं जो जमीनी हकीकत को समझ सकें।

बार-बार पुलिस रिफॉर्म की बात की जाती है। क्या उन रिफॉर्म में पुलिस विभाग को सशक्त करने की बात की जाती है। पुलिस विभाग से जुड़ी इंटीलिजेंस की जब बात आती है, आपस में संबंध बनाने की बात आती है, कॉन्फिडेंस जताने की बात आती है, क्या वे इंटीलिजेंस गैटर कर पाएंगे जिन को वहां की गतियों में रहने वाले लोग सबसे बड़ा दुश्मन मानते हैं। अगर मेरे पास कोई भी चीज बताने के लिए होगी तो पुलिस का आला अधिकारी आखिरी व्यक्ति होगा जिस को मैं अपनी बात स्पष्ट रूप से कहूंगा। मेरे हिसाब से पुलिस वालों के प्रति लोगों में कॉन्फिडेंस नहीं है। ये छोटी-छोटी जमीनी हकीकत है। यही से बात चालू होती है कि कैसे धीरे-धीरे सूचनाएं आगे जाएंगी। अगर मुझे अपने इलाके में कोई व्यक्ति संदिग्ध रूप में दिखायी देता है तो मैं जाकर नहीं बताऊंगा इसलिए नहीं कि मेरा मन किसी को बताने का नहीं है लेकिन उस व्यक्ति से ज्यादा कोई संदिग्ध दिखायी देता है तो पुलिस वाला दिखायी देता है।

आदरणीय दास गुप्ता जी ने जवाबदेही फिक्स करने की बात कही है। यह बहुत बढ़िया बात है और सबने कहा कि राजनीतिक रूप में जो लोग हैं, उनसे कहीं गलती होती है तो मोरल रिस्पॉसिबिलिटी लेनी चाहिए। माननीय गृह मंत्री जी ने इस बात को स्वीकार किया और तंतु इस्तीफा दिया। महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री ने इस्तीफा दिया और वहां के गृह मंत्री ने भी इस्तीफा दिया। ऐसे बहुत आला अधिकारी हैं, हो सकता है उन पर सीधा दायित्व न आता हो लेकिन जब किसी संगठन में इतनी बड़ी कमजोरी दिखायी है तो दायित्व कहीं न कहीं तो बनना ही है। वहां पर वर्यो कदम नहीं उठाए जाते हैं? इस देश पर बहुत बड़ा आघात हुआ है तो वर्यो नहीं कॉन्फिडेंस दिया जाता है कि केवल राजनीतिक व्यक्ति नहीं बल्कि जो भी व्यक्ति कमजोर पाया जाएगा उसे बदलना पड़ेगा।

सभापति जी, आज हमें तमाम सुरक्षा एजेंसियां जिसमें फौज भी है, का करेक्टर या नेवर बदलना पड़ेगा। जब आर्मी, थल सेना, वायुसेना और जल सेना बनाई गई थी तब उस समय का नजरिया और था। तब दुश्मन दिखाता था। तब दुश्मन और हमारे बीच में सरहद बनती थी और वह सरहद पहचानी हुई होती थी। वह किस वर्दी में है और हम किस वर्दी में हैं, हम किस जहाज में हैं और वह किस जहाज में है, हम किस कमांडर के नीचे हैं और वह किस कमांडर के नीचे है, यह बात स्पष्ट थी। यह बात अब के लिए नहीं बल्कि पहले जो युद्ध होते थे, उसके बारे में है लेकिन अब युद्ध का नजरिया बदल गया है। अब सरहद पर लड़ाई नहीं होती है, हमारे घरों की दीवारों के बीच लड़ाई होती है।

लड़ाई हमारी कालोनियों, स्कूलों और होटलों में होती है। आज हम उन्हें पहचान नहीं पाते हैं क्योंकि वे हमारे जैसा कपड़ा पहनता है, हमारे जैसी भाषा बोलता है और हमारे पड़ोसी की तरह लगता है। आज यही थल सेना, वायु सेना और नौ सेना अपने आपको शक्तिशाली नहीं दिखा पाते हैं क्योंकि वे ऐसे नहीं बनाई गई हैं कि उस तरह की चीजों को टैकल कर सकें या सोच सकें। इन्टेलिजेंट एजेंसियों को अपना नजरिया बदलना पड़ेगा। हम जिस तरह से अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय कर रहे थे, उसे अपनी बात बदलनी पड़ेगी। विदेश मंत्री जी भी यहां बैठे हैं इसलिए मैं एक बात का आग्रह करता हूँ। अमरीका ने हमें सहयता देने की कोशिश की है और कहा है कि वह पाकिस्तान पर प्रभाव डालेगा, लेकिन हमें अमरीका को दो-तीन बातें कहनी पड़ेंगी। यह बात ठीक है कि 9/11 की घटना के बाद अमरीका ने आतंकवाद को दूसरे रूप में देखा है। लेकिन एक बात अमरीका को देखनी पड़ेगी कि अगर वह चाहता है कि उसकी लड़ाई में सारे देश हर रूप में उसके साथ रहें तो अगर दूसरे देशों पर आघात होता है तो उस रूप में अमरीका को दूसरे देशों के साथ उसी तरह साथ देना होगा। आपस में सही मित्ता और संवेदनशीलता तब बनती है अगर मैं बीमार हूँ और आप घर आकर दवा दें और जब आप बीमार हों तो मैं भी आपके घर डॉक्टर लेकर जाऊँ। हिन्दुस्तान जैसा शायद ही कोई देश होगा जिसने आतंकवाद का इतना नुकसान पाया और उसके बावजूद इस देश ने जितना संयम दिखाया है, इस देश ने इतनी गहराई से चीजों को विश्लेषण करके संवेदनशीलता से अपने आपको संयम में रखा है, इतना किसी और देश ने नहीं रखा है। इस चीज को कभी-कभी हमारी कमजोरी भी माना जाता है लेकिन आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हमें आतंकवाद के खिलाफ नेतृत्व दिखाना चाहिए। हमें अपने आपको सशक्त बनाने की आवश्यकता है। वित्त मंत्री जी आप प्रबंधन के बहुत अच्छे ज्ञाता हैं, आपने पूरे हिन्दुस्तान की वित्तीय संस्थाओं को देखा है। आज हमें आतंकवाद को रोकने के लिए स्पेशल परपज व्हीकल जैसी चीजों की आवश्यकता है। यह बात बार-बार आती है कि हमारे फौजियों को हथियार नहीं मिलते हैं, एसपीजी में बुलेट पूफ नहीं मिलते हैं। मुझे नहीं लगता है कि यह बहुत बड़ी चीज है। माननीय मंत्री जी आपके पास बहुत ज्ञान है, आप इन संगठनों और संस्थाओं को जानते हैं, आप ऐसे तौर तरीके बनाइए कि जब भी जिस चीज की जरूरत हो, फौजियों, सिपाहियों और अधिकारियों के लिए वह इस्तेमाल हो। इसके लिए किसी आदमी की कलम और दस्तखत की जरूरत न पड़े क्योंकि उनकी जरूरत उनकी जरूरत नहीं है, आपकी मेरी, सदन में बैठे हुए हर व्यक्ति की जरूरत है। हम जिन लोगों का प्रतिनिधि बनकर आते हैं उनकी जरूरत है। अगर बुलेट पूफ किसी फौजी की छाती पर चढ़ती है तो वह हिन्दुस्तान की छाती पर चढ़ती है। अगर किसी पुलिसवाले के हाथ में बंदूक आती है जिससे वह रक्षा करता है तो वह देश की रक्षा करता है। मेरी बेटी, आपके घर और सम्पूर्ण देश की रक्षा करता है। मैं कहना चाहता हूँ कि असाधारण समय में हमेशा असाधारण चीजों की आवश्यकता होती है। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे देश ने जिस तरह से पिछले दिनों में संयम और कठोरता के साथ पड़ोसी और अन्य देशों से बात की है, हम इसी रूप से चलेंगे। विदेश मंत्री जी के आज सुबह के बयान से बहुत आशा बंधी है। हमने आपकी आवाज के पीछे जो जोर और कठोरता देखी है उससे हमें ढांढ़स बंधा है। मैं आशा करता हूँ कि अगर वांछित प्रयास अन्य देशों से नहीं होते हैं तो आपकी आवाज में जो कठोरता और पौरुष दिखा है, इसका प्रभाव हमारे आने वाले समय में इस देश के कदमों में होगा। [r52] जो कदम हमें उठाने पड़ेंगे, वे उसी कठोरता और पौरुष से आप उठाएँ। यह देश सम्पूर्ण रूप में आपके साथ है, यह देश सम्पूर्ण रूप से आपकी तरफ देख रहा है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपना वक्तव्य समाप्त करता हूँ।

*SHRI. SHARANJIT SINGH DHILLON (LUDHIANA) : Sir, my party Shiromani Akali Dal fully supports the resolution against terrorism tabled in this august House. The attack in Mumbai by terrorists has outraged not only India but the entire world. The terrorists are having a field day and striking at will in various parts of the country. The terrorists are using new strategies and new techniques to unleash violence in the country. Either the intelligence agencies have failed to provide the necessary inputs or our State Governments have not acted on those inputs. Apprehension was being expressed that the terrorists could strike via the sea-route. There were also reports that the Taj Hotel in Mumbai could be targetted. It is a matter of concern that the Hon. Home Minister has accepted that there has been some lapse on the part of those responsible for patrolling our sea-shores and high seas.

We have decided unanimously that we should together face the challenge posed by the terrorists. So, Shiromani Akali Dal wholeheartedly supports this resolution. But, the need of the hour is to take concrete steps to check the menace of terrorism.

Sir, in the past, Punjab has suffered a lot at the hands of terrorists. We have not been able to recover fully from those dark days. Our progress was a casualty. There was a time when people were afraid of visiting Punjab. But, by God's grace, we were able to come out of that phase and now peace prevails in Punjab.

Sir, the Government wants to set up a National Agency to tackle terrorism. But, Sir, will it be enough? I do not agree with this proposition. The need of the hour is to strengthen the sates in the fight against terrorism. Liberal financial assistance should be provided to the states. Sir, the policemen in our country have

*English translation of the Speech originally delivered in Punjabi.

out-of-date and obsolete weapons. These are weapons of the time of World War II. How then can our brave policemen face the automatic weapons of the terrorists? If the terrorists can brandish state-of-the-art weapons, why can't we equip our security forces with modern weapons?

Sir, more and more training academies should be opened in all states to train our valiant policemen in counter-terrorism. In Mumbai, the terrorists had maps of the entire area but our policemen were handicapped as they did not have the maps of the affected area. We should look into this matter.

Sir, the need of the hour is to improve our intelligence gathering mechanism, provide modern weapons to our policemen and

provide proper training to them in counter-terrorism techniques. Educated young men should be recruited in our police-force and training academies should be opened in all states for our policemen.

Also, sir, our laws need to be amended. These laws were framed during British times. There are so many loopholes in our criminal laws that the criminals and terrorists go scot-free. These laws need to be suitably amended in the light of changing times. Such stringent laws should be enacted that do not allow terrorists to walk free even after their arrests. Only then will the terrorists be convicted.

In the end, I will request the Government to convene a meeting of the Chief Ministers of all the States of India. The issue of terrorism should be discussed threadbare. This meeting of Chief Ministers should decide whether we should set up a National Agency to fight terrorism or we should strengthen the states to check the menace of terrorism.

Sir, Punjab today is in dire need of financial assistance as it had to spend a lot of money in the past for fighting against terrorism. I appeal to the Central Government to provide liberal financial assistance to Punjab.

16.47 hrs. (Mr. Speaker in the Chair)

श्री हरिन पाठक (अहमदाबाद) : अध्यक्ष महोदय, 26 नवम्बर की रात के 9.30 बजे के बाद देश की आर्थिक राजधानी मुम्बई पर जिस तरह से पाकिस्तान स्पांसर्ड आई.एस.आई. और लश्कर-ए-तैय्यबा की ओर से आतंकवादियों ने हमला किया, उससे निर्दोष लोगों की जानें गईं और देश पर मर-मिटने वाले हमारे पुलिस के जवानों और नेशनल सिविलिटी गार्ड्स के कमांडो ने अपनी कुरबानी दी, उससे सारा देश शोक की लहर में डूबा रहा।

अध्यक्ष महोदय, आज हमारे देश के सामने सब से बड़ी चुनौती आतंकवाद की है जिसे आज सुबह से सदन एकमत से कह रहा है। हमारे यहां यह आतंकवादी हमला न होकर पाकिस्तान की ओर से हिन्दुस्तान की धरती पर किया गया अघोषित युद्ध का हिस्सा था। हम लोग पिछले 20 साल से भुक्तभोगी हैं। यहां पर इस बात की कई बार चर्चा हो चुकी है मगर उन 60 घंटों के बाद देश की जनता में आक्रोश पैदा हुआ और वह एकजुट होकर खड़ी हो गई। सभी वर्गों के लोगों में यह आवाज निकली जिसने हम सब को अपने कर्तव्यों को और दृढ़तापूर्वक निर्वहन करने के लिये प्रेरित किया। आज सुबह से नियम 193 के अंतर्गत कहें या माननीय गृह मंत्री जी ने सब की वेदना को समझ कर, सदन में चर्चा के लिये विषय को संकल्प के रूप में रखा है।[\[s53\]](#)

उसके बाद इस सदन के दो वरिष्ठ आदरणीय, मित्र नेतागण, श्रद्धेय आडवाणी जी, श्रद्धेय मुखर्जी जी ने जिस तरह से इस पूरे संकल्प के सामने अपनी प्रतिबद्धता, अपना कमिटमेंट, अपने विचार रखे, मुझे लगता है कि शायद पिछले बीस साल में मैंने इस दृढ़तापूर्वक देश के खिलाफ जंग की लड़ाई में एकजुट होते हुए सदन में कम देखा है। मैं उन सभी माननीय सांसदों का आभारी हूँ, और हम सब आज मिलकर सिर्फ संकल्प नहीं, मेरे एक साथी अभी कह रहे थे कि संकल्प करना जरूरी है, मगर संकल्प के साथ अगर हम एक्शन नहीं कर सकते, कई बार इस रोल में संकल्प करना बहुत जरूरी होता है, अगर संकल्प करने के बाद उसका अमलीकरण न हो तो यह ठीक नहीं है। मुझे ऐसा लगता है कि ऐसे संकल्प हमने कई बार किये हैं। आज देश एक बुरी परिस्थिति से गुजर रहा है। जब पहली बार प्रतिपक्ष के नेता आडवाणी जी ने आज से करीबन दस साल पहले एक शब्द पूर्वसी-वार का प्रयोग किया था, तो उस वक्त शायद मेरे कई साथियों को यह शब्द पसंद नहीं आया था। पाकिस्तान की तरफ से हिन्दुस्तान के प्रति एक पूर्वसी-वार, एक अघोषित युद्ध आतंकवाद के नाम से हो रहा है, क्रांस वॉर टेरिज्म के नाम से हो रहा है। आज यह हमारे सामने एक खुली किताब की तरह साबित हो चुका है। आज जरूरत यह है कि हम सब एक होकर इस अघोषित लड़ाई के खिलाफ, अपनी पार्टियों के मतभेद से ऊपर उठकर, दलगत राजनीति से ऊपर उठकर, संकल्पबद्धता और प्रतिबद्धता से कार्य करें और इन सारे संकल्पों को एक्शन में रखें तो मुझे लगता है कि आने वाली पीढ़ी, हमें जो इस सदन में दायित्व दिया गया है, वह हमने ठीक तरह से निभाया है, का आज जो आक्रोश है, उसे हम ठंडा कर पाएंगे। इस पर काफी चर्चा हुई है। मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूँ, मगर संकल्प के साथ-साथ हमें यह भी देखना है, जब गृह मंत्री जी संकल्प करेंगे, रिजोल्यूशन करेंगे कि हम इस लड़ाई को जीतेंगे, और आडवाणी जी, पूणव दा जी और सभी सांसदों ने जो कहा है, और मैं इस माध्यम से देश के बाहर जो भी तत्व पाकिस्तान में बैठे हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की सौ करोड़ से ज्यादा की आबादी, हिन्दुस्तान में विभिन्न राजनीतिक दल हैं, सभी जाति, धर्म, संप्रदाय में हमारी आस्थाएं अलग-अलग हैं, मगर इस मातृभूमि की तरफ अगर कोई देश या उस देश में पनपने वाला कोई भी संगठन हिन्दुस्तान की एकता, सामाजिक समरसता, उसके संविधान और उसकी संस्कृति और सभ्यता को खत्म या नाश करने की कोशिश करेगा तो हिन्दुस्तान की जनता और राजनीतिक दल एकजुट होकर उसे खत्म करने के लिए तैयार हो जाएंगे। हमारे अंदर राजनीतिक वैचारिक मतभेद हो सकते हैं, सत्ता में आना-जाना होता है, इस्तीफे होते रहते हैं, मगर इस देश को कोई चुनौती नहीं दे सकता। मुझे दो-चार सुझाव देने हैं।

अध्यक्ष महोदय : आप सुझाव दे दीजिए।

श्री हरिन पाठक : काफी बातें हो चुकी हैं। मैं आदरणीय गृह मंत्री जी को इस सदन में, देने वाले अपने कुछ सुझावों को उचित नहीं मानता हूँ, मुझे सदन के सदस्यों के सामने इस बात को नहीं रखना चाहिए, ऐसी बात नहीं है, कुछ बातें ऐसी हैं जो मेरे ज़हन में आती हैं, मुझे भी एक लम्बा अरसा राजनीति में हो चुका है, कुछ गलतियाँ हमारी तरफ से भी हुई हैं और हमें वे गलतियाँ दोहरानी नहीं चाहिए। मैं आपको अपने सुझाव लिखकर भेजूँगा। पैरामिलिट्री फोर्स और कमांडोज ने बहुत अच्छी तरह से कार्यवाही की है। [\[r54\]](#)

मगर उस कार्यवाही से पहले कुछ राजनीतिक अपरिपक्वता हमें देखने को मिली। मैं समझता हूँ कि उस अपरिपक्वता ने इस पूरे साठ घंटों में कई लोगों की ज़िन्दगी को जोरिम में डाला। मुम्बई के हमले में 26 नवंबर को जिन लोगों ने जानें गँवाईं, जिन जवानों ने, हमारे कमांडोज ने शहादत दी, अगर उनकी शहादत को हम ठीक तरह से लें, उनके सामने श्रद्धा सुमन समर्पित करें, वह तभी सही अर्थ में माना जाएगा जब हम ये जो जितनी भी बातें हैं, मैं रिपीट नहीं करना चाहता, रामपुर से इंटरसैट करके जो हमारे पास संदेश आए थे, लैंक ऑफ कोआर्डिनेशन, लैंक ऑफ पॉलिटिकल विल रही। यहां सांसद जी बैठे हैं। वे भी थे। मैं उनका इंटरव्यू देख रहा था। शायद ही 26 तारीख की रात कोई सोया होगा। पूरा देश जागता रहा और हम सब भी जागते रहे। हमारे सामने पूंन यह है कि ऐसी क्या परिस्थिति पैदा हो गई? वयों अमेरिका में 9/11 के बाद दोबारा वैसी घटना नहीं घटी?

MR. SPEAKER: Please conclude

श्री हरिन पाठक : मैंने अभी शुरू किया है। मैं ज्यादा समय नहीं लूँगा। मैं कुछ रिपीट नहीं करूँगा।

अध्यक्ष महोदय : दस मिनट हो गए हैं।

श्री हरिन पाठक : 9/11 के बाद अमेरिका में दोबारा ऐसी घटना नहीं घटी तो हमारे देश में हर सप्ताह ऐसी घटनाएँ क्यों घटती हैं? Kindly review what has happened on the 26th of November, 2008 in Mumbai. What are the loopholes?

अगर रामपुर में कहा गया था दो-चार घंटे पहले कहा गया था कि ताज होटल, मुम्बई में हमला होने वाला है तो हम कहीं चूके? इस पूरी घटना पर सिर्फ संकल्प करने के बजाय मेरा गृह मंत्री जी से निवेदन है कि मैं जांच शब्द का इस्तेमाल नहीं करूँगा, श्रद्धेय आडवाणी जी ने जिस शब्द का इस्तेमाल किया है, आप रिव्यू करिये, जो भी अखबारों में आता है, मीडिया में आता है, आपके पास गुप्त संस्थाओं से इन्फॉर्मेशन आती है, उसको बैठकर तालमेल करिये। मेरे तीन सुझाव हैं। मैं ज्यादा लंबा भाषण नहीं करना चाहता। मैं तो बोलने वाला भी नहीं था, मैंने मना किया था, मगर मेरे तीन सुझाव हैं।

एक तो अभी गीते जी और मेरे एक साथी ने कहा, आपने सुबह अपने संकल्प पत्र में कहा है कि हमें दो तरह से इस लड़ाई को जीतना है। एक तो हम सॉलिटैरिटी की बात करें कि हम सब एक हैं, पूरा देश इस लड़ाई में एक है और दूसरा, इस लड़ाई को जीतने के लिए कठोर से कठोर कदम उठाने पड़ेंगे। आपने नेशनल इंटीलिजेंस एजेंसी की बात कही, मगर उसके बाद और क्या? जब पोटा की बात आती है, आपको शायद वह अच्छी बात नहीं लगती, मगर गीते जी और आडवाणी साहब ने कहा था कि उसके साथ अगर कानून ठीक तरह से नहीं होगा, कानून मजबूत नहीं होगा, वह कानून केन्द्र का हो या राज्य का हो, वह कानून अगर मजबूती से आतंकवाद को कुचलने में समर्थ नहीं है तो मुझे लगता है कि सिर्फ नेशनल इंटीलिजेंस एजेंसी बनाने से हमारी बात पूरी नहीं होगी। मुझे तो सिर्फ इतना उल्लेख करना है कि रिट्रैजेंट कानून बनना चाहिए। मोइली जी बैठे हैं। एक रिपोर्ट सैंकेन्ड एडमिनिस्ट्रेटिव रिफार्म्स कमीशन में जो मोइली जी ने पेश की है, "Combating terrorism and protecting by righteousness". उसके पेज 115 पर मोइली जी के नेतृत्व में जो समिति बनी थी, उसकी सबसे पहली रिफॉर्मेशन है। आप चाहे उसको नाम पोटा दो, लोटा दो या टोटा दो, जो भी नाम दो, लेकिन कानून तो बनाओ।

MR. SPEAKER: You may take note of page number 115. [\[R55\]](#)

17.00 hrs.

SHRI HARIN PATHAK :It is in page 115, paragraph 4.1. 6, under the Summary of Recommendations.

MR. SPEAKER: You may note down page 115.

SHRI HARIN PATHAK : I quote:

"A comprehensive and effective legal framework to deal with all aspects of terrorism needs to be enacted. The law should have adequate safeguards to prevent its misuse. The legal provisions to deal with terrorism could be incorporated in a separate chapter in the National Security Act, 1980."

आप एक कानून बनाइए। लॉ एंड आर्डर, हम कहते हैं कि यह स्टेट सब्जेक्ट है, आज तय करें कि आतंकवाद या देश के अंदर नक्सलिटिक जैसी, राष्ट्र को तोड़ने वाली प्रवृत्तियाँ हों तो उसका भी समावेश आप इसमें करिए। राज्यों को भी कानून बनाने की सत्ता मजबूती से दीजिए।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक ही बात आखिर में कहूँगा कि जैसे गुजरात, महाराष्ट्र एवं कई राज्य हैं, जिन्हें ऐसी आतंकवादी घटनाओं से बार-बार निपटना पड़ता है। उन्होंने जो कानून बनाए हैं, आज जब पहली बार हम लोग राजनीति से ऊपर उठ कर चर्चा कर रहे हैं, पहली बार हम एक सूर में बोल रहे हैं तो मैं यह भी आग्रह करूँगा और चाहूँगा कि पहली बार आप भी राजनीति से ऊपर उठ करके गुजरात कंट्रोल ऑफ आर्गनाइज़्ड क्राइम एक्ट (गुजकोक), जो हमने बनाया है, राजस्थान ने बनाया है, जो महाराष्ट्र में कानून है, ऐसा कानून जो बाकी राज्यों ने बनाया है, जो राज्य ऐसे सख्त कानून बनाना चाहते हैं, अगर वे राज्य कानून बनाते हैं तो उन्हें अविलम्ब सम्मति देकर उनके हाथ मजबूत करिए, वरना केन्द्र तो मजबूत होगा, मगर राज्य कमजोर पड़ेंगे। इसलिए मेरी आपसे यही प्रार्थना होगी कि गुजकोक और जो राजस्थान ने कानून बनाया है, उस कानून को आप जल्दी से, सर्वसम्मति से, जो सम्मति आपको देनी बाकी है, वह उन्हें दें, उस पर राजनीति से ऊपर उठ करके कार्यवाही करें और राज्यों को भी मजबूत बनाएं। ...[\(व्यवधान\)](#) केन्द्र में भी आज के संकल्प के साथ-साथ एक्शन लेकर पूरी तरह से पाकिस्तान के सामने अपनी बात रखें कि यह दोतरफा बात नहीं चलेगी।

अध्यक्ष महोदय, कबीर जी का दोहा कह कर मैं अपनी बात पूरी करूँगा। कबीर जी ने बहुत अच्छी बात कही है - "विनय न मानत जलधि, जड़ गए तीन दिन बीती, बोले राम सकोप तब, भय बिन होत न पीति।" बार-बार कहने पर अगर कोई हमारी प्रार्थना नहीं मानता है, ...[\(व्यवधान\)](#)

MR. SPEAKER: Please do not add anything to Kabir. कबीर के ऊपर कुछ एड मत कीजिए।

श्री हरिन पाठक : मैं कुछ एड नहीं कर रहा हूँ, यह सही बात है। वह हमारे देश की संस्कृति है। गांधी जी ने भी यही कहा - I would conclude by quoting Mahatma Gandhi. If there is a choice between violence and non-violence, I would prefer non-violence but if there is a choice between violence and cowardice, I would prefer violence. ...[\(व्यवधान\)](#) यह देश की सुरक्षा एवं एकता का सवाल है।...[\(व्यवधान\)](#)

अध्यक्ष महोदय: कबीर की बात की है, अब वॉलोलेंस की बात कर रहे हो।

...[\(व्यवधान\)](#)

श्री हरिन पाठक : कबीर जी की बात में तकलीफ है तो महात्मा गांधी जी का उदाहरण देता हूँ। ...[\(व्यवधान\)](#)

MR. SPEAKER: I have still got a list of 25 more Members to speak.

श्री हरिन पाठक : पाकिस्तान हमारी शांति एवं सहनशीलता को हमारी कमजोरी न समझे और देश के खिलाफ पाकिस्तान ने जो जंग छेड़ी है, उसे नेस्तनाबूत करने के लिए हम एकजुट होकर आज संकल्प करें और संकल्प के साथ उसे कार्यान्वित करें।

इन्हीं शब्दों के साथ आपने जो प्रस्ताव रखा है, उसका मैं समर्थन करता हूँ। धन्यवाद।

SHRI RAHUL GANDHI (AMETHI): Mr. Speaker Sir, I thank you for this opportunity to air my views on what happened in Mumbai.

I would like to start by paying my respects to all the people who lost their lives in Mumbai. To all the people of Mumbai, I want to say that their spirit and courage inspire us. The country echoes a strong and united re[[U56](#)]action to this outrage. 164 voices were silenced in Mumbai. Several hundred people will carry this scarce with them. They will suffer in silence long after the noise abates. Our brave men fought the terrorists. They will carry the horror of Mumbai with them. I salute the security personnel who laid down their lives doing their duty. My deepest condolences to the families of the Constable Ambadas Pawar; Constable Arun Chitte; ACP Ashok Kamte; Sub Inspector Bapusaheb Durugade; Constable Murlidhar Lakshman; Havildar Gajender Singh; Joint Commissioner of Police Hemant Karkare; Constable Jaywant Patil; Home Guard Mukesh Jadav; ASI Nana Sahib Bhosale; Sub Inspector Prakash More; Constable Rahul Shinde; Major Sandeep Unnikrishnan; Inspector Shashank Shinde; ASI Omble, Constable Vijay Khandekar, Inspector Vijay Salaskar; Constable Yogesh Patil; the staff of CST, the staff in the Hotels and the Hospitals; and the firemen of Mumbai. Our nation owes all these men and women a debt that it can never repay.

The terrorists attacked Mumbai; they attacked the people of Mumbai. But in doing so, they attacked our way of life. They attacked the freedoms we give our people. They attacked the progress we promise our people. All those people who were killed in Mumbai believed in this country. A lot of them went to Mumbai for a better future, a better future that this country promises them and in a lot of cases delivers.

Terrorists did not just attack the people of Mumbai. They attacked all of us in this House; they attacked everyone in every State of this country. They attacked the idea of this country, an idea that we are all united in fighting for and an idea which we all stand behind.

The media has said that this was a new type of attack. They have said that this was a different attack. I would like to say that, "Yes", it is a different attack. It is a new type of war and it is a massive escalation of terrorism. But the Mumbai attack was different for other reasons. It was the first time that a terrorist attack used the institutions of this country. The central pillar of our nationhood is the freedom of our people, and by extension the freedom of our Press and the democratic nature of our politics. The terrorists chose their date very carefully. They chose a date when we were engaged in elections. They chose a date which was designed to show the differences between our politicians. The terrorist attack was also designed to be a public affair because it was designed to be confrontational and it was designed to happen over a long period of time.[[MSOffice571](#)]

The attack was designed in such a way so that our media would transmit this attack across the world and to our people. So, to me the biggest difference in Mumbai is the scale at which it happened, the loss of lives and the number of people who were killed, but more importantly, this attack was an attack on institutions of our country that we all are here to defend.

Sir, Mumbai, as I said, is different and the media also has said this, but in a lot of ways, Mumbai is the same. In the end, Indians were killed, the people who believed in this country died just like they have died in the attack on Parliament; in the hijackings; in Rampur and in other places. So, even though there is a difference in this attack, there is a similarity and the similarity is that we are all hit by this new type of warfare. What worries me and as I have been watching what is happening and as I view these terrorists' attacks, not as a single event but as a sequence of events, and not as something that has started recently, but something that has been going on for a long time. I noticed that the real outrage is that, as a country, we have stopped valuing the life of an individual Indian. It is not only related to terrorism, it is connected to a lot of other things.

But with regard to terrorism, we should not need a 'Mumbai' to remind us that people are dying. We should not need this massive press explosion and 200 dead people to tell us that we need to, as Indians, as politicians, as people in this House that every single Indian is worth defending and every single Indian regardless who is, where he comes from is going to be defended with everything at our command. If you look at the failures – my hon. colleague, Shri Sandeep Dikshit, has pointed out some and others in the Opposition have pointed out some. If you look at the Central failures, they all arise from this one single fact that as a country and this goes beyond Governments and politicians, we are ready to tolerate and we are ready to accept these deaths. If we were not ready to accept these deaths, you would not be faced with the situation, for example, where Assistant Sub Inspector, Ombale, has all the courage in the world, who actually goes and physically grabs the rifle of the terrorist, but does not have the equipment to support that courage and does not have the equipment that will save his life. If we actually believed that every single Indian life was worth fighting for, we would not have systems that provide massive attention to VIPs that focus on

what we all know as the *Lal Batti*, but do not apply the same focus on the trains stationed in Mumbai or on the streets of Mumbai. If we actually believed that every single Indian life was worth fighting for, our intelligence agencies would not let intelligence that was critical not reaching the place where it was supposed to reach or *vice versa*[a58].

Our police establishment would not let that happen from their side. So, I think, the central theme that we have to change is how we view the lives of ordinary Indians. As a group, we have to decide that we are not going to tolerate a single Indian's life going in vain this way.

Sir, the hon. Home Minister is here. I am confident that he will take this idea and push it deep into our Intelligence Agencies, all our institutions of security because it is this idea that we are actually talking about and fighting for. Our institutions are designed and operated in a hierarchial way. I have quite a lot of experience with these types of institutions. I am myself protected by some of these institutions. So, I would say that our institutions are designed to operate in a hierarchial way. The officer on the ground, the man who is actually facing the situation is not given as much importance as he should be given. So, what we need to do is that we need to fundamentally look at some of these institutions and we need to move this idea down these institutions that whether you are a junior officer or a senior officer, you are all a part of that institution that will protect the ordinary Indians from violence. I would like to add that it is not enough for us to protect the ordinary Indians but we need to go one step beyond that. The people who have done this, they need to understand clearly, whoever they are – I think we will find out that – that not only we hold the lives of our people highly dear but also they have to understand that there is a cost to killing innocent Indians; that India will not stand around and tolerate people coming into our cities and killing our innocent civilians.

There are two or three other things that I would like to add. We are the public representatives. So, as such, there is an important role for us in both putting across ideas and putting some of us in action in those ideas. There are two things that I would like to raise. It is a known fact that across the country, there is a politicisation of police force. There is interference in transfer; there is interference in promotions. There is a general attitude among us, the politicians to be fair, that we can interfere in these institutions. So, I think, as a young politician, I would like to put forth that in the interest of our country and in the interest of the innocent civilians, we should desist from that type of an activity; that we should accept that there are Central institutions that are fundamental in the protection of our people in which we will not interfere. That is the first thing.

The second thing is that when the terrorists attacked Mumbai, they did not attack the young people or the old people or the Hindus or the Muslims or the Christians or the upper caste or the lower caste people but they attacked Indians.

If you were an Indian in Mumbai, they wanted to kill you and in the same way that our enemies view us as one, we have to act as one. So, the type of politics where we divide each other, the type of politics where we play one group against another is something we should not do. We should try and restrain that type of politics. Those are the two things that I wanted to say with regard to us, the politicians.

The final point that I want to conclude with is that, as I said before, this is a war on India. It is a national priority and requires a national response. As in war, we must put the nation first. The nation must follow Mumbai's lead and act together as one. In the beginning of my speech I paid homage to the people who died and I said that the terrorists have silenced their voices. The terrorists cannot silence their voices. There are a billion people in India who speak for them today. There are people from every single party, from every single religion and from every single region in this country that speak for those 200 people. I am very proud that today the House has stood together as one. India will fight this war against terrorism and India will win this war.

PROF. M. RAMADASS (PONDICHERRY): Mr. Speaker, Sir, it is with a heavy heart that I participate in this discussion on the recent terrorist attack in Mumbai. The recent attack taking a heavy toll of 164 lives is an affront and an attack on this country and has aroused the conscience of the people of India.

At the outset, our party, PMK and its Founder President condemns this dastardly attack on the civilians as well as the foreign individuals who were killed there and we also condemn the perpetrators of this heinous crime.[R59]

[r60]We also join the entire House in paying homage to the civilians who were killed and also to our brave men of security forces and NSG who have laid their lives in this attack for defending the integrity of the country.

Now, the nature of Mumbai attacks has already been explained in different dimensions and we note that there are similarities and dissimilarities between this attack and other attacks. Our hon. Foreign Minister, this morning, explained how there are international ramifications in these Mumbai attacks and he was right in saying that the entire international community is with India in solving this problem or in facing the culprits of Mumbai blasts.

This attack is not only against the sovereignty and integrity of the country, but also against our efforts of developing this country. As the world countries have acknowledged, India is making rapid strides in her economy, in her society, in her polity and some of the forces hostile to India are inciting these kinds of elements to go against India's development. It is because of this that to detract and divert our attention from development all these things are happening. Therefore, unless these incidents of terrorism or any kind of extremism is curbed in this country, planning for development would be like writing on the sea-sands which are being constantly washed away by sea waters.

Therefore, we have to look into the entire malice from a greater perspective from both the long-run and short-term measures. We should be able to take a holistic view on this issue and we should look into the permanent factors, the short-term factors which are contributing to this menace of terrorism in the country.

Sir, the country is very often witnessing these kinds of atrocities time and again and these things cannot happen without there being certain fundamental factors operating behind these attacks and these incidents. Therefore, we should look into the multifarious dimensions of this problem. There may be sometimes religious factors, there may be sometimes social factors, and there may be sometimes economic factors as well as political factors behind these kinds of heinous crimes. We should be able to devote some of our precious time in looking into and examining these factors and see what best we can do to solve these problems.

Sir, not only we should embark on short-term measures but we should look into the long-term measures which the Government can take. In the short-run, I would feel that in order to instil confidence in the minds of people, the Government should be able to nab the culprits who have committed this type of heinous crime and for this purpose it would be better that the Government takes the help of all the countries which are willing to help us.

Some of the hon. Members here said that we should snap our ties with Pakistan and we should take our own action. I think, that may not be a wise step because Pakistan also is our neighbouring country and the people who are living there are peace loving people and therefore, we should take the cooperation and coordination of Pakistani people in getting these people arrested.

Secondly, we have to probe into this episode in all its dimensions and all its aspects and we must know the causes of it and the consequences and the policy measures that we can take in the near future. We have to find out what package of measures and strategies we can introduce to curb this menace.

The first thing that I would say is that there should be coordination among all the agencies in the country and there should be coordination between the Centre and the States in nabbing these culprits. Various agencies are operating without proper cooperation and we should effect, through a mechanism, coordination among them.

Secondly, Sir, we should provide relief

MR. SPEAKER: This is your second second.

PROF. M. RAMADASS Sir, I am just pointing out some of the short-term measures.

MR. SPEAKER: That is all right, but it is again second.

PROF. M. RAMADASS : Sir, for those people who have lost their lives, I would feel that the Government of India should confer on them the Gallantry Awards.

We should also introduce a system of community self-policing which is working excellently in different places. At the micro level, this kind of community self-policing will help us to know the various activities of the terrorists and other groups. We should be able to do it.

MR. SPEAKER: Thank you. Shrimati Ranjeet Ranjan.

PROF. M. RAMADASS : The police force should be modernized and the police equipment should be modernized. All the police force should be given the infra-red guns and they should have robot surveillance cameras to detect these things.

We should give proper training to our police force and probably we may get the training methods prevailing in other countries and the same can be imparted to the people here.

MR. SPEAKER: Please cooperate; so many hon. Members have to speak.

...(Interruptions)

PROF. M. RAMADASS : The coastal security has to be strengthened. The experience of this episode shows that the fishing boats that were stationed there were not properly registered and that is why the culprits had traveled in a fishing trawler and came to Mumbai. Therefore, I feel that all the fishing boats in the coastal areas must be registered.

Finally, to strengthen the security forces in the country, the funds earmarked for the Ministry of Home Affairs should be enhanced from the present level and topmost priority should be given to augment the infrastructure of the security forces.

MR. SPEAKER: Thank you for your cooperation.

PROF. M. RAMADASS: I hope that the UPA Government under the leadership of Dr. Manmohan Singh and under the inspiring guidance of Madam Sonia Gandhi would be able to have the necessary political will to curb this terrorism and maintain the integrity of this country.

MR. SPEAKER: There will be five minutes each for the hon. Members from now onwards please.

श्रीमती रंजीत रंजन (सहरसा) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको धन्यवाद देती हूँ कि आपने मुझे इस गंभीर मुद्दे पर बोलने का मौका दिया।

मैं आज यहां पर एक आम आदमी की जुबान, उसकी फीलिंग्स को बोलना चाहूंगी कि आज मुंबई बम ब्लास्ट की घटना के बाद आम आदमी क्या सोच रहा है। मैं बहुत से लोगों से मिली। आम आदमी में आज जितना रोष उस घटना से है, उससे कहीं अधिक रोष राजनीतिक लोगों पर है। आज आम आदमी अपने को ठगा हुआ महसूस कर रहा है। वह अपने को न किसी चौशे पर, न किसी पार्क में, न किसी थिएटर में, न किसी शॉप में, न किसी स्टेशन पर सुरक्षित महसूस कर रहा है। किसी भी जगह आम आदमी अपने आप को सुरक्षित महसूस नहीं कर रहा है। मैं एक आम आदमी की तरह सोचती हूँ तो यही क्वलून निकलता है कि आज जो हुआ है, जो पिछले कई सालों से हो रहा है, उसके बाद अब हमें न किसी डिस्कशन की जरूरत है, न किसी डिबेट की जरूरत है, अब हमें केवल एक्शन की जरूरत है।

अध्यक्ष जी, मैं कहना चाहूंगी कि हमारी भारतीय संस्कृति में यह एक तत्व रहा है कि हम लोगों को माफ करते आए हैं और आज उसी का नतीजा है कि मुंबई की यह घटना सामने आई है। आज आम लोग ठोस भरोसे की तलाश में हैं। मुझे लगता है कि हम लोग उस भरोसे को विश्वास के रूप में बदल नहीं पा रहे हैं, अब इसे विश्वास में बदलने के लिए हमें एक्शन करना होगा। अभी हमारे प्रधानमंत्री जी ने, यूपीए सरकार ने जो एक्शन लिया है, उससे मैं सैटिसफाइड हूँ, लेकिन मैं कहना चाहूंगी कि यह बात ठीक है कि कॉलोनीज राइस जी भारत आई, वह पाकिस्तान भी गयीं, हमारी सरकार ने पाकिस्तान को 40 लोगों की लिस्ट देकर उनको सौंपने की मांग की, लेकिन हम किस व्यक्ति पर विश्वास करें? क्या उस व्यक्ति या संघ पर विश्वास करें जिन्होंने हमारी कश्मीर की समस्या का आज तक हल नहीं निकाला? क्या हम उस व्यक्ति पर विश्वास करें जिसने खुद कारगिल वार के अपने ही फौजियों को यह मानने से मना कर दिया कि वे उसके ही फौजी या शहीद हैं? हम उस देश पर विश्वास कैसे कर सकते हैं? यह हमारा हक है, यह हमारा अधिकार है कि हम अपनी आत्मरक्षा के लिए इनिशिएटिव्स ले सकते हैं, एक्शन ले सकते हैं और आज इसी की जरूरत है। हमें अपने देश के आम लोगों के बारे में खुद सोचना होगा। माननीय गृहमंत्री जी ने सबसे पहले बोला कि मैं उन शहीदों को नमन करता हूँ, उनका आभार व्यक्त करता हूँ। बार-बार हर व्यक्ति ने यही बोला है कि हम उनको नमन करते हैं। [R61]

मैं कहना चाहूंगी कि अब लोग थक चुके हैं, अब वे शहीद थक चुके हैं कि अब हम उन्हें नमन न करें और न ही उनके लिए तालियां बजाएं। अब हम राजनैतिक दलों को कुछ ऐसा करना चाहिए कि वे लोग हमारे लिए नमन करें। उन्हें महसूस हो कि किसी राजनीतिज्ञ ने हमारे लिए शहादत दी और वह शहीद हुए। अगर हम उन्हें ऐसा करके दिखाएं तो सही मायनों में हम अपने आम व्यक्ति की सुरक्षा कर सकते हैं, न कि सिर्फ डिबेट करने के और यहां चर्चा करने के। आज इतनी मर्सी ही इस बात का परिचायक है कि कल जो कंधार कांड हुआ था, हम अपने यहां आतंकवादियों को पकड़ते हैं, उन्हें गिरफ्तार करते हैं, चाहे कितने भी लोगों का उन्होंने मर्डर किया हो, हम उन्हें मेहमान की तरह रखते हैं। वे हमारे यहां प्लेन हाईजैक करते हैं और फिर हम उन्हें मेहमान की तरह छोड़ने जाते हैं। इसलिए आज जरूरत है कि हम एक टाइम डिसीजन, एक हार्ड डिसीजन एक्शन के रूप में लें। मैंने समाचार पत्रों में पढ़ा कि हमारे पास कूटनीति के अलावा कोई और चारा नहीं रह गया है। मैं मानती हूँ कि कूटनीति भी एक रास्ता है। लेकिन मैं कहना चाहती हूँ कि मान लीजिए कॉलोनीज राइस ने जो कहा, पाकिस्तान ने जो कहा, जो उसकी नीयत है, जो हम हमेशा से देखते आ रहे हैं, जिस तरह से वह आज कहकर कल पलट जाता है कि हम जांच करेंगे उसके बाद कहता है कि हमारे यहां आतंकवादी नहीं हैं और कल फिर ऐसी स्थिति आती है, तो क्या करेंगे। क्या हम इस पर भी सोच रहे हैं? हम एक तरफ कहते हैं कि उसका समाधान युद्ध नहीं है, तो मैं पूछना चाहती हूँ कि क्या यह युद्ध से कम नहीं है कि एक व्यक्ति सड़क पर जा रहा होता है तो उसके घर वाले सोचते हैं पता नहीं वह वापस आएगा या नहीं?

मैं विपक्ष को भी इस बात के लिए सैल्यूट करती हूँ कि हम सब पांच साल में पहली बार किसी मुद्दे पर एकजुट हुए हैं। हम सब लोग अपने लिए धर्म, जाति और राजनीति की बात करते हैं। मैं कहना चाहती हूँ कि जब तक हम जाति, धर्म और वोट की राजनीति करते रहेंगे, तब तक इस समस्या का समाधान नहीं निकल पाएगा। हमारी सरकार ने इनिशिएटिव नहीं लिया, एक्शन नहीं लिया, तो इस बार हिन्दुस्तान के आम आदमी के मन में इतना रोष है, इतना गुस्सा है कि मुझे लगता है वह सक्षम हो जाएगा अपना बदला लेने के लिए। इसलिए हमारा फर्ज बनता है कि हमें अपना मुंह सफेद रखना है तो हमें एक्शन लेना होगा।

MR. SPEAKER: Shrimati Nivedita Mane – not present.

Shri Ramdas Athawale – not present.

Kumari Mamata Banerjee.

KUMARI MAMATA BANERJEE (CALCUTTA SOUTH): Mr. Speaker, Sir, I rise to support the Resolution. Today, this House is going to pass this Resolution unanimously.

Sir, we heard the speeches delivered by all the Members of this House. This House is democratic, the main foundation and the main institution in our country, but always a democratic institution will be based on democratic foundation. Today, the whole world is watching the performance of the Indian Parliament and also listening what the Indian Parliament is saying.

Sir, on behalf of our Party and on behalf of our people, we give our heartfelt condolences to the bereaved families and specially we salute to our jawans who had lost their lives, and also to our guests who were the foreigners and who also sacrificed their lives.

जो खून गिरा मुम्बई में वह खून था हिन्दुस्तानी। जो हिन्दुस्तानी का खून गिरा, चाहे मुम्बई का रहने वाला हो, चाहे देश के किसी अन्य कोने का रहने वाला हो। At the same time, 26 people belonging to other parts of the country had also lost their lives. We must send a message today in one voice that terrorism must end, and we want to see the end of it. From American Center to Kandahar, from Parliament to Jammu and Kashmir, and from Mumbai to Bangalore, we have been observing disaster not only in our country but in other countries also. We must always remember that India is a peace loving country. What India thinks today, the world thinks tomorrow because India is the leader in the Non-aligned Movement and India is the leader in the world. [\[H62\]](#)

India always gives the ray of light. India always see the way of thought. From India, we have our best of scientist, we have our best of technocrats, we have our best of experts starting from the political field to every field, we have got the great potentiality.

But the problem in India is that we start taking care only after anything has happened. We do not take steps continuously. There must be some continuous process and monitoring going on. From NASA to Bhabha, where Indians are not there. Indians are everywhere. In the NASA, everybody knows how our great scientists are contributing in a great manner. It is the India's brain there. It is the state-of-art and India is producing all the brain for the whole of world.

But today we are fighting terrorism. It is not that we are fighting terrorism alone, the whole world is facing this problem of terrorism. I think, India must take the lead. We have to finish this problem of terrorism. Now, terrorism has been taking place in a sophisticated way. How do they do it? They have institutionalized all the things. So, it is a sophisticate terrorism, which is taking place. How do they perform? They are doing it even through satellite. They do it through every channels.

Therefore, we must not take this problem in a very casual way. It is a very serious matter. I do not want to discuss it in great details because all the hon. Members, who have spoken before me, have covered almost all the points. Moreover, we have also the jurisdiction today that we should not discuss anything more. The hon. Home Minister has already said: "We are reviewing the situation. So, give us some time." I think, it is better to give them some time. Let them enquire; let them find out the details.

But there are two to three important things, which I would like to point out. Terrorism is a cancer of our society. Terrorism is the cancer of the world also. So, we have to see as to what is the answer to terrorism. Sometimes, the Government would change. Obviously, in a democracy, a Government would come and a Government would go. But the Government is a continuous process, which will carry on. So, firstly, I want to mention very categorically and I appreciate the point made by our young MP, Rahul Gandhi. Why do we not allow the people from Administration to work freely? Why would the politicians decide as to who would get the promotion? Whose job is it? It should not be for their political satisfaction. Administration is impartial. Let the Administration work always freely. Let them work according to their freedom. Now, we are busy not to control the terrorists, but we are busy to control the politicians, to control the voice of the people. Controlling voice of the people means, wherever there is Opposition, we are vigilant on them. The politicians are more vigilant on the Opposition political parties and not on the terrorists. Why? Sometimes, if anything untoward happens, we go for blame game; we give the whole blame to the Home Ministry. But it is not merely a matter relating to the Home Ministry.

India is a vast country. We have a large number of States. In every State, we have to gather intelligence very carefully. At the borders, yes, BSF and CISF personnel are deployed. But why am I saying so? In Punjab, we have a border; in the North-East, we have a border; in Bengal, we have a border; in Gujarat, we have a border; and in the coastal side also we have the borders. Even in Tamil Nadu also we have border with Sri Lanka....(*Interruptions*)

KUMARI MAMATA BANERJEE : Sir, give me just two minutes more.

MR. SPEAKER: No, you may carry on. It is just the first warning by way of a bell.

...(Interruptions)

MR. SPEAKER: Every speaker is getting five minutes. You may continue.

KUMARI MAMATA BANERJEE : Sir, from one party, so many speakers have spoken, and from my party, I am only the single Member.

MR. SPEAKER: This is the usual method, you know it.

KUMARI MAMATA BANERJEE : Okay, Sir, I am grateful to you that you have given me the time.

MR. SPEAKER: No, no. You have the right to speak.

KUMARI MAMATA BANERJEE : Thank you, Sir.

About the border areas specially, I would tell you one thing. Nowadays, in the border areas, the cross-border terrorism is increasing like anything. You just go and investigate as to which are the political parties, which are giving full shelters to these terrorists. I am not going to mention any name because today, we have the limitation, we have the jurisdiction. If you find that my political party is involved in this matter, you take action first against my party. I want to tell you very frankly that it is increasing, increasing and increasing. I do not know about the details about the Gujarat border or Punjab border. But I know about the North-Eastern border.[\[r63\]](#)

But I know the North-Eastern border. At least, you will appreciate that from childhood we have been in this background, in politics. Earlier I was in Congress. Now also, I am in Trinamul Congress. That is not the matter. The matter is this. I am raising this issue from the beginning. In border areas, I do not know whether there is border fencing. Where is the border fencing? Every day, cross-border terrorism is increasing like anything. They have their own identify cards. They have so many SIM cards. If you see the operations of blueprint, from American Center to Kandhar or from Kandhar to Parliament, you will see where the main route is and how it is coming through some places. Sir, I am telling you again, please give more importance to the border areas of Northern and Eastern parts of our country.

You look at North-East. I belong to the State of West Bengal. From geographical point of view, it is very important. Bengal is a gateway of North-Eastern Region and North-Eastern region and Bengal are the gateways of Bangladesh, Pakistan and Nepal. Arunachal Pradesh is the gateway of China, Burma and North-Eastern borders. If you see, all the borders are open. There is no restriction even for the SIM card, for Identity Card and for voters' list. There is nothing left out. Everything is available there. If you go to a political centre, you will get everything. If that is granted, I think, if you blame the Central Government only, the State Government has to take the responsibility also. It is a joint federal system. Both the State Government and the Central Government have to take care. I cannot say that only the Central Government has to take care of security and not the State Government. The State Government will give the shelter and the Central Government will take the blame. This is not the way. Everybody has to take care of the security guarantee for the people. This is very important.

Sir, take North Bengal. You know when you were the Finance Minister, you went to the Reserve Bank of India once for investigation. The foreign currencies are going on in circulation. All the time this is going on. If you do not take any action, I am telling you that any day the North-Eastern and the Eastern parts of the country can be disconnected from the country. Why I am telling you this is, because you give some more vigilance. You take some special care.

Even regarding coastal area, I am giving you one information. Sir, if we want to give some information, if I have some information, where can I pass on this information? Please tell us. The ordinary people also can give you the information. But how? What are the modalities? How will they give the information? The only institution, the police institution cannot give protection to the people. Even the Press, media and the ordinary people can pass on the information also but to where? Where will they give the information? Sometimes I get some phone call, and I know this phone call is not genuine. Though my phone is totally dead, there is a duplicate SIM card also. I am not discussing that. I will meet you personally. But I am telling you the difficulties that if somebody gives me a call, then I just cross-check whether that name is genuine or not. Sometimes when I feel that this is not genuine, because terrorism is increasing, I want to pass on this information. But I will send this information to whom? I sometimes lodge FIR also but there is no action. There is nothing.

Sir, there are two or three important points.

Please see so that there is an Information Window Centre for the public also so that the public can give you the information.

There is a place called Bay of Bengal. I am talking to you about the coastal area. There is a very vulnerable coastal place. The name of the place is called Janmu Dwip. Shall I tell you the story? I have said about this so many times but nobody cares. Who bothers? The Bangladesh Jihadis are coming. The ships are coming with Bangladesh flag. But when they cross the border, they use Indian flags. Like this, there is some operation going on. I cannot say more than that. If you ask me, I will give you full information. This is going on.

That is why, only if it happens, then everybody will blame. But when everything is ready, I cannot see my country to die like this. We want that our country should survive because we want to give a message to the people. I quote Rabindranath Tagore:

"Where the mind is without fear the head is held high; Where knowledge is free; Where the world has not been broken up into fragments by narrow domestic walls; Where the mind is led forward by Thee into ever widening thought and action".

I want my country should awake [\[m64\]](#).

Sir, we are not against any neighbouring country. But they have to understand. They should not give VIP treatment to the terrorists, to terrorism or to the terrorist organizations. They cannot play diplomatically a duplicate role. On the one side, they are giving protection to the terrorists. I believe that terrorism has no religion, no caste or no creed. They are the terrorists. The terrorism does not have any caste or any creed.

Here, I appreciate the people of our minority community that they are supporting the cause of the country and everybody is together throughout the country and they are supporting the cause of the nation.

MR. SPEAKER : Thank you.

KUMARI MAMATA BANERJEE (CALCUTTA SOUTH): Sir, that is why we are united very much. But, we have to tell Pakistan not to give VIP treatment to the terrorists. The terrorists are the individuals and they do not have any caste or any creed or any community. With these words, I conclude.

Whatever cooperation you need, please give us some time so that we can give you the information also. Our Party may die, but the country cannot die. Let the Parliament go on forever. Let this message go everywhere that we are one, we are together and we will fight the battle together. Weakness is death; strength is our medicine. Strength is the medicine for the world diseases. We have to give a befitting reply to the terrorists, we have to tell that India is one and India will show the way to the world.

MR. SPEAKER : Thank you very much. I invite Shrimati Priya Dutt to speak now.

KUMARI MAMATA BANERJEE : Thank you, Sir.

MR. SPEAKER : In place of five minutes you have got 14 minutes.

...(Interruptions)

MR. SPEAKER : Everyone is getting five minutes; you have got 14 minutes. You have snatched. You know how to snatch it. I know that. I admire you.

...(Interruptions)

MR. SPEAKER : Therefore, do not grudge.

KUMARI MAMATA BANERJEE : Sir, I do not come very often. ...(Interruptions)

MR. SPEAKER : You should come more often.

KUMARI MAMATA BANERJEE : Sir, please give some affection to us also. ...(Interruptions)

MR. SPEAKER : I have full affection. I am asking you to be here so that you can speak every time.

...(Interruptions)

MR. SPEAKER : Everybody has affection.

SHRIMATI PRIYA DUTT (MUMBAI NORTH-WEST): Thank you, Mr. Speaker, Sir.

Sir, 26th November is a day this country may never forget. Sir, 26th November was like any other evening for many; children being put to bed, parents going for dinner, business as usual, Leopold full of young, youngsters of Mumbai sitting around, chatting. But nobody could ever predict what lay ahead. Nobody could predict that this was the beginning of three days of terror and for some an end to their lives.

Sir, on 26th November, not only Mumbai but the world watched as this terror unfolded in front of our television screens; those nights Mumbai lay awake with the victims, with the people caught inside the hotels, with their families. They lay awake to see it, they prayed, there was anguish, there was anger, there was frustration, there was helplessness, as we saw bodies being carried out of the hotels, bodies being carried out of Leopold, as we saw the police officers felling to the bullets of these terrorists, initially faceless but soon their faces appeared on the television screen. An entire India and Mumbai looked at them, at their face.

Initially it was fear, fear of a war being waged against our country, some sort of an urban warfare. Everybody has said that this terrorism was a new kind of terrorism. I agree. We have not seen this kind of terrorism nor are we equipped to deal with this sort of terrorism.[\[k65\]](#) I think that it was quite clear, and the visuals exposed the lapses and our incapability to face this kind of terror.

I would like to reiterate that the first line of security in any State is its Police. It was our Police Force that came out first to protect the people from something like this, they did not understand as to what was happening -- in the beginning. But sooner they got to know that it was a terrorist attack. The terrorists used automatic weapons while our Police Force stood with *lathis* and not more than World War II weapons. They were in the front-line protecting us without any equipment to protect themselves. I pay homage, and I salute those officers who went out on the front-line and laid their lives to protect us.

I must commend our hon. Home Minister who came to the city with a one-point agenda to assess and give corrective steps. I agree with all the points that he has noted because those were the places where we lapsed in our security whether it be the coastal security, delays of the NSG, as well as the lapses in the intelligence gathering and sharing. We welcome these changes, and I think that these changes are a very very big step forward to secure the internal security of this country.

There are three points, which I would like to put in. Firstly, I spoke about the Police. I feel that Police Reforms are a way forward, and they need to be carried out if we want our Police Force to be equipped to deal with this new-age terror. We lost three of our best officers during these attacks, and this exposed the Police Force to the terrorists who were well equipped, well trained and very very determined. Therefore, a Special Trained Force of the Police is also a must to deal with this kind of terror.

The best tribute to these officers -- who have lost their lives -- will be to make changes that can be implemented in the Police Force. The primary duty of all of us sitting here is to provide the public with a honest, efficient, effective Police service that ensures the rule of law, and an environment of safety and security. As my colleague Shri Rahul Gandhi said that de-politicizing the Police Force -- who secures us -- is very very important. As we spend money on our Armed Forces or our Police Force, we are indirectly safeguarding ourselves, safeguarding our families and safeguarding our children. This money is never spent in vain.

Secondly, as regards our Judicial Reforms, this is seen for persons like Masood Azhar, who was in our jails for more than six years and became a bargaining point for terrorists. We saw him being handed over to hijackers, and today the same man is the boss of LeT, and may be the one who has trained these terrorists, who entered Mumbai.

Thirdly and most importantly, we saw the role of the media. I know that a handful of the news channels gave a very descriptive and very responsive account of what happened, but there were so many of them that used their discretion and sensationalised this event. Many times, we saw that it was jeopardising the operations because the movement of the Police and movement of our NSG was being broadcast, and this information was going directly to the terrorists.[\[r66\]](#)

18.00 hrs.

There were interviews happening from inside with the hostages which were coming on air. There were some channels who claimed to be speaking to the terrorists from inside. I think this jeopardises and has jeopardized the lives of the victims as well as the security forces. I think certain guidelines and certain norms should be followed where the media is concerned.

I thank you, Sir, for giving me the time.

MR. SPEAKER: Thank you for your cooperation. Hon. Members, I have got nine more names before I call the hon. Minister to give the reply. I would be very strictly enforcing the five-minute time schedule.

...(Interruptions)

प्रा. महादेवराव शिवनकर (चिमूर): सर, जब मेरा नाम आकर गया है।

अध्यक्ष महोदय : आपकी पार्टी का टाइम खत्म हो गया है। आपका टाइम खत्म नहीं हुआ।

...(Interruptions)

MR. SPEAKER: Please cooperate with the Chair. There is a spirit of cooperation. The Chair also needs this cooperation. Anybody who wants to lay down their speeches are very much welcome to do so. Instead of reading it out and bothering themselves, they can lay it down.

DR. C. KRISHNAN (POLLACHI): Thank you very much for permitting me to speak on this subject of "Terrorists' Attack in Mumbai on 26th November, 2008 on Taj Hotel and elsewhere in Mumbai". The terrorists have taken more than 150 lives including foreigners, and about 600 people were injured. The foreigners have come to improve our economy, and the civilians who died were all innocent people. These terrorist acts have to be condemned. I stand here to support the Resolution which will be tabled by the hon. Home Minister, Shri P. Chidambaram. We pay our respectful homage for the persons who have died in the fight against terrorists. Many of those who gave their lives are very high ranking officials and other officials. All those who have laid down their lives to protect our country deserve our respects.

Sir, 26th November, 2008 was a very sad day. The setting up of Specialised Marine Police Stations with speed boats and personnel in eight States and four Union Territories, which covers up a total of 7,600 kilometres of our Indian coastline, is a welcome step. Enough number of coastal patrolling ships and aircraft should be deployed as a permanent measure. To promote public involvement in the sovereign security of the State and the safety of our civilians, we should appoint the fishermen as watch groups or watch squads with proper training and awareness to guard the Indian coastline.

It is high time to go for the strengthening our Coastal Guards with enough infrastructure and equipment which may be necessary to suit the present international standards and also to combat the terrorists who are using them. Massive Home Ministry force, like NSG, should be available in all the metro cities, and also regional NSGs should be formed in the required number with enough training for commando operations in hostage situations both on land and in the sea. We have now been alerted to keep our country protected from attacks from both land and sea.

Sir, I am speaking on behalf MDMK Party of Tamil Nadu headed by Mr. Vaiko who is the leader of the World Tamils. I want to stress again that we condemn the terrorists' attack on Taj Hotel and at other places in Mumbai. We stand unitedly on the fight against terrorism in our country. Thank you, Sir.

श्री असादुद्दीन ओवेसी (हैदराबाद) : मोहतरम स्पीकर साहब, मैं सबसे पहले हुकूमत की तरफ से जो खयादात पेश की गई है, उसकी पुरजोर ताइद करता हूँ। मेरे पास अल्फाज नहीं हैं कि मुम्बई में जो वाक्या हुआ, किस तरीके से इंसानी जानों को वहां खिलौने की तरह इस्तेमाल किया गया [b67]। ताशों के अम्बार लगाये गये। चूँकि वक्त बहुत कम है, इसलिये मेरा पहला पाइंट यह है कि हुकूमत की तरफ से जो कौमी तहकीकात एजेंसी का ऐलान किया गया है, मैं इस खौर-मखदम करता हूँ कि जो दहशतगर्दी के वाक्यात हैं, महज रियासत और मरकज़ से ताल्लुक नहीं रखते बल्कि आज यह हिन्दुस्तान के लिये एक बहुत बड़ा चैलेंज बन चुका है कि रियासती पुलिस में इतनी ताकत नहीं है कि वह इन तहशतगर्दी के वाक्यात का सही तरीके से तहकीकात कर सके। इसकी मिसाल इस तरह से दी जा सकती है कि जयपुर में जो बम बलास्ट हुआ, उस बम बलास्ट के लिये जिस अखबार में बम रखा गया, वह तेलुगू अखबार था और वहां की पुलिस को पता ही नहीं था कि यह तेलुगू अखबार था। ऐसी कई चीजें हैं कि जो कौमी तहकीकात एजेंसी बनायी जा रही है, उसका हम खौर मखदम करते हैं।

स्पीकर साहब, मेरा दूसरा पाइंट यह है कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने इस बार बकरीद बहुत ही सादगी से मनाई। इसलिये कि हम मुल्क को बताना चाहते हैं कि हमारा उन वाक्यात से कोई ताल्लुक नहीं है। हम बार बार कहते आये हैं और कहते रहेंगे कि पाकिस्तान से हमारा कोई ताल्लुक नहीं है। हिन्दुस्तान हमारा मुल्क है, यहीं पर हमारा मुकदर है। आज भी जो लोग हिन्दुस्तान के मुसलमानों को पाकिस्तान से जोड़ना चाहते हैं, 60 साल पहले हमारे लोग पाकिस्तान नहीं गये। वयों नहीं गये, क्योंकि मौलाना अबुल कलाम आजाद ने दिल्ली की जामा मस्जिद पर खड़े होकर ये अलफाज़ इस्तेमाल किये थे कि तुम लोग हिज़रत के मुकदस नाम पर फराज की जिन्दगी गुजार रहे हो। वे अलफाज़ आज भी हमारे कानों में गूँजते हैं, हिन्दुस्तान हमारा मुल्क है, यकीनन हम यहां पर रहेंगे और पाकिस्तान की सरज़ीं से दहशतगर्दी के वाक्यात हो रहे हैं, एक वक्त आयेगा जब पाकिस्तान उन दहशतगर्दी को नहीं रोकेगा और एक दिन ऐसा भी आयेगा कि कहीं पाकिस्तान का आशियाना इसमें न जल जाये। कहीं पाकिस्तान के और टुकड़े न हो जायें मगर साथ ही साथ मोहतरम स्पीकर साहब, हम हुकूमत को आपके जरिये से बताना चाहते हैं कि आप बातचीत के सिलसिले को जारी रखिये। पाकिस्तान में जो लोग हिन्दुस्तान के मौकों की ताईद करते हैं, उनसे बातचीत करिये। किसी हद तक हमें बहुत दूर जाने की जरूरत है, उन तमाम कातिलान को उनके किरदार तक पहुंचने की जरूरत है।

मोहतरम विदम्बरम साहब को नया चैलेंज है क्योंकि वह नये वजिर-दाखिला हैं। मगर मैं तो कहूंगा कि उनके लिये एक poisonous challenge है और उनके लिये हमारी नेक तमन्ना उनके साथ है। स्पीकर साहब, हैदराबाद में एक नौजवान ने मुझसे सवाल किया कि ओवैसी साहब, मैंने टी.वी. पर उस वक्त के वजिर-दाखिला को कहते सुना कि तीन घंटे के अंदर हमारी एन.एस.जी. मुम्बई पहुंच जायेगी, सवा एक बजे दिल्ली से फ्लाईट निकलेगी। तो वह नौजवान मुझ से पूछना चाह रहा था कि क्या हिन्दुस्तान के

सियासतदान, हिन्दुस्तान के वजीर-दखिला इस तरह के बयान देकर तीन घंटे का टाइम उन दहशतगर्दों को दे रहा है कि तुन तीन घंटे में जो तबाह करना चाहते हो, तबाह कर दो। आपको इस पर भी नोट लेना पड़ेगा। एक अहम बात आज के नौजवानों के दिलों में यह बात है कि अखबारों में आया कि हकूमत की कौमी सलामती के गुशीर, जिस वक्त दहशतगर्दों के वाक्यात हो रहे थे, यहां पर एक पार्लिमान के घर पर बैठकर दावत खा रहे थे। दो घंटे तक वहीं पर रहे. तीन घंटे के बाद वजीर आजम के घर पर क्राइसेज मैनेजमेंट ग्रुप की मीटिंग होती है। अगर इस तरह का खैया होगा तो हम किस तरह से दहशतगर्दों का मुकाबला कर सकते हैं? एक बहरान का हमारा मुल्क शिकार हो चुका है। इसके लिये, स्पीकर साहब, एक सही तरीके से सिस्टम को लागू किया जाये। स्पीकर साहब, हमारे सामने जो सब से खतरनाक बात आ रही है, वह यह है कि अमरीका में बैठकर नरीमन हाउस में दहशतगर्दों ने जिन लोगों को गमाल बनाये हैं, उन से बातचीत करते हैं. कि मुल्क की सौवरनेटी मदाखलत नहीं है। किस तरह अमरीका में बैठे हुये यहूदी लोग नरीमन हाउस में दहशतगर्दों से बातचीत कर सकते हैं? उस पर हमारी हकूमत खामोश क्यों बैठी हुई है ? मैं आपको बताना चाहता हूँ कि यहां पर बहुत से लोग कह रहे थे कि 9/11 की तरह जिस तरह अमरीका ने किया, वया हिन्दुस्तान में हम ग्वानटानमो बनायेंगे? और अमरीका की 9 /11 की जंग दुनिया में और दहशतगर्दों को और फायदा करेगी? स्पीकर साहब, एक नहीं बल्कि हजारों दहशतगर्द पैदा होंगे। हिन्दुस्तान को उस रास्ते पर नहीं जाना चाहिये।

स्पीकर साहब, आखिर में मैं अपनी बात को मुकम्मल करने से पहले मैं कहना चाहूंगा कि जहां पर सियासी जिम्मेदारी है, वहां पर तानाशाही पर भी जिम्मेदारी आ जाती है। जहां पर उजरां को अपनी गदियों को छोड़ना पड़ा, तो ब्यूरोक्रेसी वया करेगी? स्पीकर साहब, हमारे अपोजीशन लीडर ने एक बात कही कि Spiritual Islam is all right but not political Islam. अगर इनकी बात बिलकुल सही है तो मैं मानता हूँ कि Spiritual Hinduism is all right but not political Hinduism. अगर आप हर चीज को इस्लाम से जोड़ेंगे तो बात कहां पर खत्म होगी? मैं आपसे गुजारिश करूंगा कि हिन्दुस्तान के मुसलमानों को एहतमाद में लें और दहशतगर्दों के खिलाफ हम आपके साथ हैं। अगर आप हम पर एहतमाद करेंगे, अगर आपके दिलो दिमाग में शक की सुई है, उसे निकालें। आखिर कब तक हम पर शक करेंगे? मैं आपसे फिर कहूंगा कि हम सबको साथ लेकर आगे बढ़ना है। यकीनन इंशा अल्लाह ताता हम इन दहशतगर्दों से तमाम तरह से निपट लेंगे।

SHRI M.P. VEERENDRA KUMAR (CALICUT): Sir, thank you for giving me the time; I will not take much time of the House.

There were three terrorist attacks this year – in Mumbai. This one is very dastardly and inhuman; and we know that the terrorists have no religion.

We pay homage; our party pays homage; our nation pays homage to all those who gave their lives in defending our nation – from Unnikrishnan to Karkare and all those security men who bravely fought and lost their lives.

Why did this attack take place? What was the purpose of this attack? They never wanted any ransom; they never held anybody for ransom; they never demanded anything. The man who was caught by the police, when questioned told that they wanted to kill. They wanted to kill about 5,000 people. They wanted to kill indiscriminately at everybody who was in their firing line. Why? What was the objective and the aim of this?

They wanted to divide this country and separate this country between fundamentalists and liberals in short a communal divide. They should never succeed in this and the nation should stand united. This must be the only answer to them.

It is true that they were trained in Pakistan. We heard the Foreign Minister speak. We must distinguish Pakistan as a State and Pakistan as a people. The very creation of Pakistan is from the conservative minds. It is not a natural division. Right from Khan Abdul Ghaffar Khan to Mahatma Gandhi, they stood against partition. I do not want to go into all this. But I want to say that Pakistan is also the target of this attack. Benazir Bhutto lost her life. The Marriott Hotel was destroyed. They were also the victims of the terrorist attacks that we also face.

The civil Government in Pakistan should not be disturbed. What will happen if we disturb the civil Government? The military will come out, which will be very dangerous to us. We should raise this issue in the UN Security Council. The Home Minister said that he has all the information with facts and figures. All this information must be brought before the UN Security Council and told that this is what is happening. It is not only to protect us, but also to protect Pakistan. The ISI may be playing games which need not necessarily be in the knowledge of the Prime Minister or the President of Pakistan. This has to be taken into account. The military option is no option at all against Pakistan. We cannot have a neighbour which will be in perpetual war with us. We cannot destabilize a Government which is elected by the people.

Let us talk about intelligence. How could somebody come through our ocean, get out, take a boat, come to our shore, very coolly walk into the targets or the places where they wanted to and fire at the people? How could it happen? Can we get into a hotel like that? In our own country, we cannot do that. How could they do? There is lax in intelligence. Intelligence agencies must have information. Everybody says that they had information 2-3 months back. Then how could this happen? This is a very serious question to ponder. It is not that I am very critical about them. But there is something very fundamentally wrong with our system. It has to be corrected. He said that he would look into it, I am very happy about it.

Lastly, why we want very stringent laws, like POTA and TADA. We had POTA; we had TADA, but how was Parliament attacked? With all the laws, Parliament was attacked. You can bring in any law, but we have the law which can deal terrorism. We had those existing laws, but innocent people become the victims in our country. They are the victims. If there are loopholes in the existing laws, they must be amended, but not laws like POTA and TADA. We should stand united.

*SHRI S.K. KHARVENTHAN (PALANI): The terror attack on Mumbai on 26-11-2008 targeted the economy of this country. There is a crucial difference between investigations into all previous terrorist strikes in India and one on the attacks on Mumbai. This time a wealth of information has become quickly available to the investigators. Based on the preliminary investigations there is a *prima facie* evidence against Pakistan. The Mumbai Terror Attack has totally pre-planned and it is widely believed by World countries that Pakistan has behind the attack. The major terrorist attacks in India:-

2000 - Delhi Red Fort Attack

2001 - Parliament House

2002 - Akshardam Temple, Gujarat

2006 ~ Ayodhya - Ram Temple

2008 - Mumbai attack and other serial bomb blasts in Delhi, Jaipur

Bangalore, Hyderabad and various other cities in the country were caused massive loss of life and properties. All the above incidents were well planned.

Hon'ble Leader of Opposition Shri L.K.Advani during his election campaign on 4-12-08 in Rajasthan mentioned terrorism as "terrorism was that the UPA at the Centre cannot keep the nation secure" but it is unfortunate that he had forgotten Kandahar Plane Hijack Attack. The terrorist organizations involved in the Mumabi attack and the hard core terrorists who were masterminded behind the incident were those terrorists who were involved in the Kandhar Plane Hijack Attack in the year 1999, 1C-814 was hijacked to Kandahar with hostage of passengers. During that time NDA was in power. Shri Advani was the then Home Minister of this country. For the above hostage the then Government released Maulana Masood Azhar now he is the most wanted accused and main man for Mumabi Terror Attack.

* Speech was laid on the Table.

During the NDA regime they had failed to take steps to protect the Coastal Region. In the year 2003 Gujarat Government has sent a proposal of Rs. 311 crore to protect 1600 KM coastal line but the NDA Government at the Centre failed to take any action. This has resulted in the vulnerability of our coastal line and lapses in coastal security.

During discussion in Congress working Committee Meeting about the Mumbai Terror Attack Madam Soniaji emphasized to take bold decisions to control the terrorism.

Now India wants Pakistan to surrender "20 Most Wanted Terrorists" including International Terrorists Dawood Ibrahim, Chota Shakeel, etc. If Pakistan failed to produce them to India, our Government should declare war against Pakistan to remove all terrorists in Pakistan and to save the entire world.

Entire Nation wants to teach a lesson to Pakistan and Terrorists hiding in Pakistan. Our Government should not hesitate to take action against Terrorists.

Our Government decided to establish Federal Police to control these kind of crimes. It is a welcomable step. Furthermore, I request the Hon'ble Minister Shri P. Chidambaram to enact a Law with stringent provisions to control the Terrorist activities. Throughout the country, strength of the police to be increased. They should be provided with all kinds of modern weapons to face the terrorists. All police force to be modernized. Latest high speed vehicles to be provided for them. Now most of the men in NSG are running behind the politicians in the name of security. They are all diverted to provide security to public. Special Air Crafts with advanced technology to be provided for NSG men to reach urgently to the affected area. The legal heirs of the police

officials who lost their lives in this attack and in this operation have to be paid very liberal compensation.

Our opposition members are insisting to bring back "POTA" but it is not the correct. After introduction POTA only the Parliament of India was attacked. Hence, a stringent law better than POTA to be drafted.

Hence, our Government must take suitable steps to contain terrorist activities in our country.

With these words I am supporting the resolution and concluding my speech.

MR. SPEAKER: I am sorry; the five minutes time allotted to each Member has become four minutes now.

SHRI SUBRATA BOSE (BARASAT): I thank you for giving me an opportunity to speak in this discussion here today.

I am very happy that the hon. Leader of the Opposition set the tone of the discussion today and mentioned that all Indians will be united in fighting terrorism. I am also very glad that the hon. Leader of the House intervened in the debate and told us some facts of how the Government of India has been dealing with the Government of Pakistan, what are the difficulties faced, etc. [\[p68\]](#)

I think, this has given us the belief that we can all stand together and unitedly fight against terrorism.

As far as the incident in Mumbai is concerned, I would like to mention only two points. One point is regarding the so-called intelligence reports which had come in but not acted upon. I do not know whether this is true but if it happened I think the hon. Minister of Home Affairs will ensure that in future all intelligence reports, when received should be taken very seriously and acted upon immediately. If that is done I think many of the actions of the terrorists may be defeated and we shall come out successful in dealing with them. This will definitely cause disappointment in the minds of the terrorists and they will be disheartened. This in turn will have an effect on reducing the acts of terrorism.

I may also mention the fact that the hon. Minister of Home Affairs has mentioned that he was intending to bring a Bill before the House very shortly, definitely in this Session, to speed up trials of all terrorists. This I think is very-very necessary because only deterrent action can to some extent, if not to a great extent, prevent acts of terrorism. I must say with regret that our normal judicial system causes a lot of delay. It is very necessary that all those who are accused of being terrorists should be given a very speedy trial and if they are found guilty, deterrent action should be taken against them to show that India will not feel shy in punishing the terrorists.

Since there is constraint of time, I shall not take more time of the House. I may assure on behalf of my Party to the Government that we shall give all cooperation, whatever its worth, to the Government to ensure that we fight terrorism. In this context, I would request that the Government set up a machinery to have exchange of views, opinion and information in future with all those parties who are in the Parliament so that we can really be united in taking action.

***श्री हंसराज गं. अहीर (चन्द्रपुर) :** मुंबई में 26 नवम्बर, 2008 को आतंकियों द्वारा किया गया हमला देश के विरुद्ध युद्ध के समान था। पिछले कई वर्षों से बम विस्फोट की घटनाओं का सामना कर रहे मुंबई के लोगों को 60 घंटे का युद्ध देखने को मिला। इस 60 घंटे में मुंबई पर आतंकी साया छाया रहा। आज हम सभी मुंबई के तत्काल सामान्य होने के जज्बे का बयान कर रहे हैं, लेकिन मुंबई के लोगों में आज भी असुरक्षा की भावना बनी है। पारंपरिक जांच के निष्कर्षों से पता चलता है कि मुंबई में आये आतंकी समुद्री रास्ते से आये थे। तो क्या अपनी समुद्री सीमा अब आतंकियों के लिए सुरक्षित आने का राजमार्ग बन गई है। मार्च 2007 में एल ओ सी से सटे राजौरी जिले से गिरपतार लश्कर-ए-तैयबा के चार आतंकियों से 2 आतंकी करांची से समुद्र मार्ग से मुंबई आये और मुंबई से कश्मीर में पहुंचने की पुष्टि हुई थी। नवाबशाह का अब्दुल मजीद और मनसेरा का मुहम्मद जमील के बयान के बाद तत्काल कार्रवाई कर समुद्री सीमा में खासियों को सुधारा गया होता तो 26 नवम्बर, 2008 का आतंकी हमले को हम रोक सकते थे। इसी तरह सरकार ने आतंकवादियों के समुद्री रास्ते को बंद करने के लिए 73 तटवर्ती थाने स्थापित करने का निर्णय लिया था इसमें बताया गया था कि तमिलनाडु और महाराष्ट्र में 12 थाने, गुजरात में 10, केरल में 8, आंध्र और पं. बंगाल में 6-6, कर्नाटक और उड़ीसा में 5-5, लक्षद्वीप में 4, गोवा में 3 और पांडिचेरी, दमन और दीव में 1-1 तटरक्षक थाना स्थापित करने की योजना थी। क्या यह स्थापित किये गये हैं। मुंबई में आतंकी हमले में शहीद हुए एटीएस प्रमुख हेमंत करकरे द्वारा स्वयं तटरक्षक थाने स्थापित करने का प्रस्ताव महाराष्ट्र के गृह मंत्रालय में महीनों से पड़ा था। अगर उस पर कार्रवाई समय रहते हो जाती तो आज यह हादसा नहीं होता। महाराष्ट्र मच्छीमार संगठन के अध्यक्ष तांडेल द्वारा राज्य के एक मंत्री के खिलाफ किये गये गंभीर आरोप को देखते इन सभी बातों की जांच होनी चाहिए। देश की आर्थिक राजधानी को 60 घंटे बंधक रखने का प्रयास

करने वाले आतंकियों को तो हमने मार गिराया, लेकिन सुरक्षा रक्षक और नागरिकों का मनोबल बढ़ाए रखने के लिए हमें इसके तह तक जाकर जांव और कार्रवाई करनी होगी। व्यक्ति जितना भी बड़ा हो उस बवशा नहीं जाना चाहिए। महाराष्ट्र सहित सारे देश को हिलाकर रखने वाले इस आतंकी हमले में हम सभी एक हैं। इसका पुनरुत्थार माननीय आडवाणी जी द्वारा दिया गया हम सभी भी सरकार के साथ हैं। लेकिन देश की समुद्री सीमा के साथ सुरक्षा बलों को भी चौकस रखना होगा। इसके लिए धन की जरूरत तत्काल पूरी की

जाये। मुंबई पुलिस के पास अगर अत्याधुनिक हथियार और अन्य साधन होते तो आतंकियों को पहले ही मारा जा सकता था। सस्ते बुलेटप्रूफ जैकेट के कारण महाराष्ट्र पुलिस के जांबाज सिपाहियों को अकारण प्राण गंवाने पड़े। डंडे के बल पर आतंकियों का सामना नहीं किया जा सकता। पुलिस को अत्याधुनिक हथियार, वाहन से तैस करना होगा। सीएसटी रेलवे स्टेशन पर भी देखा गया कि वहां पर तैनात पुलिस के पास अत्याधुनिक शस्त्र नहीं होने के कारण वह आतंकियों का सामना नहीं कर सके। यह देखते केन्द्र सरकार मुंबई के आर्थिक राजधानी की सुरक्षा के लिए अत्याधुनिक शस्त्र और सुविधा दिलाने में राज्य सरकार को सहायता दे। इतना ही नहीं तो आगे मुंबई के लोगों को आर्थिक राजधानी के कारण हो रहे लगातार हमले, बम विस्फोट डोलना ना पड़े। वह सुरक्षित रह इसलिए उपचारत्मक प्रयास करने होंगे। मैं इस आतंकी हमले के खिलाफ लड़ते हुए शहीद हुए पुलिस व सुरक्षा कर्मी तथा नागरिकों को श्रद्धांजलि देते हुए इस घड़ी में हम सब साथ हैं का पुनरुत्थार करता हूं।

मैं मुंबई के नागरिकों की भावना का आदर करता हूं, जो गुरसा प्रकट किया व मुंबई इतना सीमित नहीं यह भारत की जनता का गुरसा है। जो आजादी के बाद लोकतंत्र की पूर्ण स्थापना के बाद जनप्रतिनिधियों के कार्यक्षमता- निर्णयक्षमता तथा साहस का आव्हान किया है प्रश्न विन्ध लगाये है। इसका हम सभी सत्तापक्ष-विपक्ष के जनप्रतिनिधियों को आदर करना चाहिए और सभी को मिलकर इस घटना पर विंतन ही नहीं तो कुछ साहसिक कृति करने की आवश्यकता है। इसे हमको भी आखरी कदम माना जाये दोबारा इतना साहस पाकिस्तान या पाकिस्तानी आतंकी ना करे इतना साहसिक कदम सरकार द्वारा उठाने की अपेक्षा करता हूं।

* Speech was laid on the Table.

MR. SPEAKER: Dr. Arun Sarma is the next speaker. I hope you will express some regret for your behaviour in the morning. Four minutes are available with you to speak.

DR. ARUN KUMAR SARMA (LAKHIMPUR): Sir, I tender apology for what has happened in the morning.

MR. SPEAKER: I had raised the matter. Everything was fixed. You would not wait. You would not hear.

DR. ARUN KUMAR SARMA: But, Sir, there was no mention in the List of Business regarding the Statement by the Home Minister. (Interruptions)

MR. SPEAKER: You know all this. Please start now.

DR. ARUN KUMAR SARMA : I regret what has happened. We had to express our anguish.

MR. SPEAKER: If you had given two seconds to the Speaker, you would have heard everything. That is the problem. Kindly start your submission now. You are given four minutes' time.

DR. ARUN KUMAR SARMA : Thank you, Sir, for giving me this opportunity to speak on this issue. On behalf of AGP, myself and my colleagues I stand by the resolution of this House to firmly deal with the terrorists' attacks in the country, especially the incident of Mumbai and other parts of the country including Assam. [R69]

Sir, the terrorist attacks in Mumbai have exposed the loopholes in our country's security system. We have to find out the deficiencies of our security forces. For about sixty hours, the country was held to ransom by a few attackers. We have to find out the deficiencies very accurately. The newspaper reports have categorically mentioned that our security forces are not properly armed with sophisticated arms to deal with terrorist attacks. We also express our full sympathy to all those who have suffered in this incident and also in incidents that have taken place in other parts of the country. We also hope that the deficiencies in the intelligence, the lapses in the intelligence will be taken care of by the Home Ministry. The hon. Home Minister has said that he would review this aspect of lapses so that we are better equipped in future to fight terrorism.

Sir, terrorism is not an issue of the recent times. It has been taking place for years together in the North Eastern region. In Assam alone there have been instances of 600 bomb blasts in the last four years. These are attempts by international terrorist forces. These are not isolated cases in Assam alone. Therefore, we are happy that you have allowed a special debate and a statement on Assam. We will be participating in that discussion. On this particular aspect of national concern, we stand by the Government. We stand by the entire House because it is a national issue. We have to be united and we firmly resolve to fight terrorism at all costs.

SHRI SARBANANDA SONOWAL (DIBRUGARH): Sir, I also express regret for the incident in the morning.

MR. SPEAKER: The Assam matter will be the first thing to be taken up on Monday.

SHRI SARBANANDA SONOWAL: Sir, associate with Dr. Arun Kumar Sarma.

MR. SPEAKER: There is no system of association in this case. You can associate yourself with his speech.

Shri Ramdas Athawale, you have missed your chance. You were not present when I called out your name.

SHRI RAMDAS ATHAWALE (PANDHARPUR): Sir, I was in the lobby.

MR. SPEAKER: The people of Mumbai have not sent you here to be in the lobby. They have sent you to be present in the House. Anyway, you may start your speech. You have only four minutes.

श्री रामदास आठवले (पंढरपुर) : अध्यक्ष महोदय, 26 नवम्बर, 1949 को बाबे साहेब अम्बेडकर जी ने हमारे संविधान का ड्राफ्ट डॉ. राजेन्द्र प्रसाद एवं पंडित जवाहर लाल नेहरू को दिया था। 26 नवम्बर का अटैक केवल इस देश पर अटैक नहीं है, बल्कि इस देश के संविधान पर अटैक था, भारत की एकता और सैवयूतरिज़म पर अटैक था। मैं रिपब्लिकन पार्टी की ओर से इस अटैक की निन्दा करता हूँ।

अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार से कहना चाहता हूँ कि हमारा इंटेलिजेंस फैक्टोर हो चुका था। वे लोग कराची से पोर्बंदर आए और वहां से उनको तीन-चार दिन मुम्बई आने में लग गए। उन पर इसी दौरान अटैक किया जाना चाहिए था। आज तक देश में बम्ब ब्लॉस्ट होते रहे हैं, लेकिन यह ओपनली अटैक है। वे सीएसटी स्टेशन, अस्पताल, ताज होटल में गए, वहां चार आतंकवादी थे, ओबर्सेज में दो आतंकवादी थे, दो लोग नरीमन हाउस में थे। इस तरह से दस आतंकवादियों ने पूरी दुनिया और भारत को हिलाने का प्रयत्न किया है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आडवाणी साहब का आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने सरकार को समर्थन दे दिया है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आपने इस इश्यू पर सरकार का समर्थन किया है। इसी तरह से 13 दिसम्बर, 2001 में अटल जी प्रधानमंत्री थे और आप गृहमंत्री थे, उस समय संसद पर हमला हुआ था। जब भी देश पर हमला होता है, हम सभी लोग इसी तरह की भावना व्यक्त करते हैं। मैं आडवाणी साहब का दोबारा अभिनन्दन करता हूँ, क्योंकि उन्होंने कहा कि सर्वधर्म का भारत है, सैवयूतर भारत है। उन्होंने मस्जिद बनाने में मदद की है। हमारे हिन्दुओं ने मस्जिद, बौद्ध विहार और चर्च बनाने में मदद की है और हम लोगों ने मन्दिर बनाने में मदद की है। सैवयूतर भारत का अर्थ यह है कि हम सभी लोगों को कोआंपरेशन करना चाहिए, लेकिन जिस समय बाबरी मस्जिद टूटी थी, उस समय आपकी यात्रा इधर से उधर आई थी। यह ठीक है कि जब आपकी यात्रा आई थी, उस समय देश में इसी तरह का माहौल पैदा हुआ था।

अध्यक्ष महोदय, इस तरह के हमलों के खिलाफ ताकत से लड़ने की आवश्यकता है। जिस समय अटैक हुआ, उस समय सबऑर्डिनेट लैजिस्लेशन कमेटी नहीं थी। यदि मैं उस समय वहां होता, तो दो-चार आतंकवादियों को अवश्य मार देता। इस तरह की स्थिति में ऐसा ही होता है। एक फोटोग्राफर भी बोल रहा था कि आतंकवादी हमले के समय फोटो निकालने की बजाय, उन पर हमला करने की मेरी भावना हो रही थी।^[70]

हमारे मुंबई के इतने लोग मरे हैं - करकरे जी, सातरकर जी, कामटे जी, शिन्दे जी, उन्नीकृष्णन जी, इन लोगों ने हमारे देश की एकता को मजबूत करने के लिए बलिदान दिया है।

अध्यक्ष महोदय, मेरी मांग है कि प्रधान मंत्री जी ने जो ऑल पार्टीज़ मीटिंग बुलाई थी, उसमें मैंने मांग की थी कि पाक अधिकृत कश्मीर में जो आतंकवादियों के अड्डे हैं, उन पर हमला करने की आवश्यकता है। उन अड्डों को ध्वस्त करने की आवश्यकता है। अगर पाकिस्तान बीस लोगों को हमारे हवाले नहीं करता है, दाऊद को हमारे हवाले नहीं करता है तो एक दिन पाकिस्तान पर हमला करना होगा।...(व्यवधान) जो भाग पाकिस्तान के कब्जे में है, उसे भारत के कब्जे में लेने की आवश्यकता है। ...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय, अगर वे हमारे ऊपर हमला करेंगे तो हम सभी पार्टी के लोग एक साथ हैं। ...(व्यवधान)

MR. SPEAKER: Luckily, you were not in that hotel. If you had gone to that meeting, you would have at least fainted there.

...(व्यवधान)

श्री रामदास आठवले : अध्यक्ष महोदय, हमारी सिर्फ इतनी मांग है कि अगर पाकिस्तान हमारी बात नहीं सुनता है तो पाकिस्तान पर हमला करने की आवश्यकता है।

SHRI SANSUMA KHUNGGUR BWISWMUTHIARY (KOKRAJHAR): Respected Speaker Sir, I am quite thankful to you for giving me this opportunity to speak on the terrorists attack in Mumbai which took place on 26th November, 2008.

On my own behalf and on behalf of three million people of Bodoland territory, I do condemn, in the strongest term, the sophisticated and preplanned as well as barbaric attack on the innocent people of Mumbai. This terrorists attack is not a casual one, rather but I do feel and I do declare that it is a systematic and preplanned and unprovoked aggression against India.

अध्यक्ष महोदय, यह इस देश के ऊपर एक सुपरकल्पित भाव से किया हुआ आक्रमण है, इसकी मैं बहुत ही जबरदस्त भाषा में निन्दा करता हूँ। किन्तु कारणों से सिर्फ दस

आतंकवादियों ने हिन्दुस्तान के 130 करोड़ लोगों के ऊपर आक्रमण किया, उन्हें ऐसा करने के लिए कैसे मौका मिला? सिवयोरिटी फोर्सेस में, इंटेलिजेंस एजेंसियों में जो स्वामियां हैं, जो-जो लोग दोषी हैं, उनके खिलाफ स्ट्रिक्ट एक्शन लेना

होगा। पाकिस्तान से मुंबई तक आने के लिए कम से कम तीन दिन का समय लगा। इन तीन दिनों के बीच में क्या किया गया? There is lack of communication and understanding between the Indian forces and intelligence agencies. इंटेलिजेंस एजेंसी की तरफ से जो रिपोर्टिंग की गई थी, उसके मुताबिक अगर कार्यवाही की गई होती तो आज हिन्दुस्तान में इतना भयंकर आक्रमण मुंबई में संभव नहीं हो पाता।

अध्यक्ष महोदय, असम में 30 अक्टूबर को धारावाहिक बम विस्फोट का जो अति भयंकर कांड हुआ, कोकराझार से शुरू होकर बोंगई गांव और बरपेढ़ारोड से से गुवाहाटी तक जो बम ब्लास्ट हुए, होम मिनिस्ट्री के लोगों ने असम सरकार को बताया था कि इस प्रकार से कांड असम के कुछ स्थानों में बहुत जल्दी हो सकता है, लेकिन फिर भी कुछ नहीं हो पाया। 30 अक्टूबर को धारावाहिक बम ब्लास्ट हो गया और उसमें बहुत से लोगों की जान चली गई।

अध्यक्ष महोदय, मैं मांग करता हूँ कि असम में जो बम ब्लास्ट हुआ, उस घटना की हार्ड लेवल इन्वैस्टिगेशन होनी चाहिए और वह इन्वैस्टिगेशन सीबीआई के द्वारा या तो सुप्रीम कोर्ट के किसी सीटिंग जज के द्वारा होनी चाहिए। देश की सुरक्षा के लिये जिन-जिन विषयों के ऊपर स्वामियां हैं, उन्हें ठीक करने के लिए होम मिनिस्टर साहब को अतिशीघ्र ही शक्तिशाली कदम उठाने की जरूरत है।[\[s71\]](#)

अध्यक्ष महोदय, मेरा एक सुझाव है कि हमारे देश की जो इंटरनल सिवयोरिटी है, उसका आज कोई गार्जियन नहीं है। इसलिए हिन्दुस्तान में इंटरनल सिवयोरिटी की केन्द्रीय सरकार को स्वयं ही जिम्मेदारी लेनी चाहिए और पूरे देश में एक नया केन्द्रीय बल/फोर्स लाने की जरूरत है। उसे नैशनल इंटरनल सिवयोरिटी फोर्स का नाम देना चाहिए। वह नैशनल इंटरनल सिवयोरिटी फोर्स, स्टेट सरकार के अधीन जो पुलिस प्रशासन है, उसके साथ काम करे।

महोदय, मैं होम मिनिस्टर साहब से एक बात और जानना चाहता हूँ कि आज तक हमारे हिन्दुस्तान की जमीन पर कितने पाकिस्तान की आई.एस.आई. द्वारा ट्रेंड एजेंट काम कर रहे हैं? इसका सही हिसाब हमें चाहिए, देश को चाहिए। कितने पाकिस्तानी ट्रेंड एजेंट हिन्दुस्तान की जमीन पर काम कर रहे हैं, यह हिसाब, थाना-वाइज, डिस्ट्रिक्ट-वाइज और स्टेट-वाइज हमें और देश की जनता को चाहिए। चाहे कोई आदमी हो, जनता हो, चाहे पॉलीटिकल पार्टी हो या कोई एजेंसी हो, जो इन्फॉर्मेशन दी जाएगी, उस पर विश्वास कर के स्ट्रिक्ट एक्शन लेने की बहुत जरूरत है। पूरे देश की सुरक्षा के लिए आप जो भी सिद्धान्त बनाना चाहते हैं, जो भी एक्ट पास करना चाहते हैं, उनके लिए हमारा पूरा समर्थन रहेगा।

अध्यक्ष महोदय : शैत्यू वैरी मवा।

SHRI P.C. THOMAS (MUVATTUPUZHA): Sir, on behalf of my Party, I take this opportunity to support the Government and all the efforts taken to fight terrorism to the maximum level possible. We condemn what has happened in Mumbai. I am sure the Government will take it very seriously. Now that the country has come together on this matter, I am sure, a very strong message will go from this House today that every inch of India is very strong and very staunch to fight terrorism to the maximum. I am sure that the Government will act very stern in this regard by taking full effort to give the maximum organisational support with regard to the use of our technology for strengthening our forces in the defence sector and in the entire security sector.

I would also suggest that the people of India are so united today on this matter that we should take the people into confidence to the maximum. Information regarding these agencies should go to the people at the ground level. People do not know about these agencies. There are a lot of agencies, which are working. People are ready to cooperate, but they do not know to what extent they can cooperate. Something should disseminate from this House and also from the Government to give more information to the people in order to take the full cooperation of the people in this regard.

I thank you for the opportunity given to me to support the Government on this matter on behalf of the Kerala Congress Party.

MR. SPEAKER: Shri Mohan Rawle, your party has no time. Since you come from that area and since you made a special request, I give you four minutes' time to speak. Please cooperate.

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण-मध्य): अध्यक्ष महोदय, मुम्बई में जो हादसा हुआ, उसमें जो फिशरमैन मारे गए, पुलिस के लोग मारे गए, रेलवे पुलिस के लोग मारे गए, देशी और विदेशी और जो गरीब और सामान्य लोग इस आतंकवादी हमले में मारे गए, उन सभी के प्रति मैं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

महोदय, मैं आपसे विनती करता हूँ कि जिस अस्पताल में घायलों का इलाज चल रहा था या जहां मृत लोगों के शवों को लाया जा रहा था, मैं उस जगह पर तीन दिन लगातार था अस्पताल में 59 घंटे तक रहा। मैंने स्वयं अपनी आंखों से मृतकों को देखा है और मैंने स्वयं लाशें देखी हैं। मैंने तीन दिन तक लाशें गिनी हैं। जी.टी. अस्पताल, सेंट जॉर्ज अस्पताल और जे.जे. अस्पताल के डॉक्टर, नर्स और कर्मचारियों ने जो सेवा की है, उनके लिए मैं आभार प्रकट करना चाहता हूँ। मैं सदन का भी आभार प्रकट करता हूँ कि सदन ने मुम्बई के लोगों और देश-विदेश के लोगों के लिए संवेदना प्रकट की है। मैं मुम्बई का मੈम्बर पार्लियामेंट होने के नाते सदन का आभार प्रकट करता हूँ।[\[r72\]](#)

जो अग्निशमन दल के लोग हैं, जो फायर ब्रिगेड के लोग हैं, जब गोलियां चल रही थीं, जब हँड ग्रेनेड फेंके जा रहे थे, उन्होंने अपनी जान की परवाह नहीं की और बहुत से लोगों को बाहर निकाला। उनको मैं बधाई देना चाहता हूँ। इसमें जो पुलिस के लोग मारे गये, हेमन्त करकरे और सब लोग मारे गये, रेलवे पुलिस के लोग मारे गये, उन्नीकृष्णन मारे गये, सब मारे गये, उनको गैलेण्टरी एवार्ड दिया जाये। उनके साथ ही जो जख्मी हुए, तुकाराम कुम्बले गैरे क्षेत्र का था, जिसने 5 गोलियां झेलीं, इसीलिए उस स्कोडा गाड़ी को हम पकड़ सके। मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि जो जख्मी हुए, जो सदानन्द दाते, एडीशनल कमिश्नर हैं, जो अन्य पुलिसकर्मी जख्मी हुए, अरुण जाधव ने इन्फॉर्मेशन दी कि स्कोडा गाड़ी आ रही है। हेमन्त करकरे, कामटे और विजय सालस्कर की गाड़ी में वह लेटा हुआ था, लेकिन जैसे ही उसने देखा, उसने चांस लिया और

वायरलैस करके बता दिया कि ऐसी-ऐसी गाड़ी आ रही है, इसलिए हम उसे पकड़ सके। जितने पुलिस अधिकारी हैं, पुलिस कर्मचारी हैं, जो मारे गये हैं या जख्मी हुए हैं, और फायर ब्रिगेड के जवानों ने जो बहादुरी दिखाई, उन्हें भी गैलेण्टरी एवार्ड देना चाहिए, ऐसी में आपसे प्रार्थना करना चाहता हूँ।

टैरिज्म के लिए हमारे यहां नेशनल पातिसी होनी चाहिए और टैरिज्म के खिलाफ लड़ने के लिए ट्रेनिंग देनी चाहिए, लेकिन हमारे यहां नेशनल पातिसी कहां है, इस के लिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ, सरकार से प्रार्थना करता हूँ जिस जगह हेमन्त करकरे, कल्लटे मरे, उस जगह पर मैंने जाकर देखा। वे स्लो गाड़ी से जा रहे थे और उनकी गाड़ी की 10 किलोमीटर की स्पीड से जा रही थी, डै टैरिस्ट छुपकर बैठे थे, उन्होंने गोलियां चलाईं, उससे पहले शिंदे नामक एक लड़का मारा गया, एक ठाकुरकर का खाना खाते हुए बच्चा मारा गया। बाद में वे आ गये। अगर आफिर के पास बुलेटपूफ कार रहती तो वे मारे नहीं जाते। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि मुंबई और महाराष्ट्र के लिए स्पीड बोट का प्रोवीजन करना चाहिए, 9 एम.एम. सब मशीनगनों, ए.के.47, सोफैस्टिकेटेड एसॉल्ट रायफल्स, बुलेटपूफ व्हीकल्स, लाइट आर्मर्ड कार, माइन प्रोटैक्टिव व्हीकल की व्यवस्था करे, जिससे सुंग से प्रोटैक्ट कर सकते हैं। मुंबई में कम से कम 1000 सी.सी.टी.वी. कैमरे लगें, केंटेनमेंट व्हीकल्स, जो बम लेकर जाते वक्त सुरक्षित लेकर जा सकते हैं, मोबाइल व्हीकल, एक्स-रेज स्कैनर, साइबर इंटरनेट और एन.एस.जी. ग्रुप की मुंबई में रखने की आवश्यकता है। अमेरिका के 10 एन.सी.जी. ग्रुप के जो वहां वकालत में थे, एम्बेसी में थे, वे चले गये और 3-4 अमेरिकन लोगों को बाहर निकाला, उनमें से एक उनका बड़ा आदमी था।

मैं प्रार्थना करता हूँ कि हम कितने दिन लार्से गिनते रहेंगे, इसके लिए कितने दिन लेंगे? सरकार कह रही है कि इसमें आई.एस.आई. का हाथ है। आई.एस.आई. किसकी है? आई.एस.आई. पाकिस्तान की इंटर सर्विसेज इंटेलीजेंस है और उन्होंने उनको ट्रेनिंग दी हुई है। मैं प्रार्थना करता हूँ कि अगर हमारे पास सैटेलाइट के पूरे सबूत हैं, सरकार ने पहले ही कहा है कि 52 ट्रेनिंग टैरिस्ट्स कैम्प हैं, जो पाक आवयूपाइड कश्मीर में चलाये जा रहे हैं तो तुरन्त उन पर हमला किया जाये। अगर उसमें पाकिस्तान शामिल हो तो उसको भी छोड़ना नहीं चाहिए, ऐसी में आपसे प्रार्थना करता हूँ। मैं एक ही सुझाव देना चाहता हूँ कि हम चन्द्रयान में चले गये। मैं उन दोनों वैज्ञानिकों को सलाम करता हूँ। उन्होंने सैटेलाइट के दावरा बहुत फोटोग्राफ निकाले। उसके द्वारा हम समुद्र के द्वारा जो आतंकवादियों का जहाज आया था, उसका भी फोटोग्राफ हम ले सकते थे और जानकारी मिल सकती थी। हमारे यहां नेवल और कोस्ट गार्ड के लोगों के साथ, महाराष्ट्र सरकार और मुंबई पुलिस के साथ शिवराज पाटिल जी ने जुलाई, 2008 में मीटिंग ली थी, उसमें इस बारे में जानकारी दी गई थी कि समुद्र द्वारा हमला हो सकता है।

आपने मुझे जो मौका दिया, मैं उसके लिए आपका आभार व्यक्त करता हूँ और सरकार से एक विनती करता हूँ कि कम से कम 10 लाख रुपया, जो मरे हैं, उनके आश्रितों को दिया जाये।

MR. SPEAKER: Shri N.N. Krishnadas. He is the Chairman of the Committee on Subordinate Legislation. He was in the hotel. I believe you have fought very gallantly.

...(Interruptions)

MR. SPEAKER: I am very happy that all our Members have come back. We are happy. Of course, I have expressed my great sorrow on behalf of the House to the Officer of the HPCL who was deputed to look after all of you. He had to give up his life. We have assured that from the Parliament, we shall try to help them also in other ways, if possible.

Shri Krishnadas, please be brief.

SHRI N.N. KRISHNADAS (PALGHAT): Sir it was possible only because of the courage and sacrifices of our forces especially the security guards and other police personnel.[\[a73\]](#)

It was a very terrific experience. Due to time constraint, I am not going to share all the experience with the august House.

We were there, as you said, for some Parliamentary duty, for the meetings scheduled on 27th and 28th of the Committee on Subordinate Legislation. Some of our hon. Members, Shri Solanki, Shri Patil, Shri Lal Mani Prasad were there. Everybody is here. Our senior leader Shri Gamang was yet to arrive the same night there. Some of the MPs were to come next day morning. So, we were having our dinner in the same Restaurant named Shamiana in Hotel Taj. While we were having our dinner only, we heard the firing very near and the terrorists entered the same Restaurant and started indiscriminate firing. We cannot say how we are here. I really said it only because of the courage and sacrifice of the security forces of our country that we are here today. It is a pride of our nation. ...(Interruptions)

MR. SPEAKER: Yes, we salute them.

SHRI N.N. KRISHNADAS : Definitely, I salute them, especially the martyrs, the ATS Chief and his colleagues, the commandos, Major Sandeep and the other police personnel. We salute everybody. We salute the other commandos, the security persons who have defeated the terrorists and saved our nation.

In my experience, I would say that this is the spirit which must be there. The nature of the debate that is taking place in the very same House bears witness to that. This is the time that we should all stand together to isolate and fight out terrorism which is against humanism, all human beings, it is against our progress and against everything. So, we should stand together to fight out maximum the terrorism in the country and the whole world itself.

Sir, this is not the time to say anything, making any kind of a criticism or blaming anybody. I know it. While making the Statement, the hon. Home Minister made it clear that this is not the time to disclose the Interrogation Report and to disclose the Investigation Report and anything of that nature. I know it. This is not the time to blame the Government or criticize the Government. But, in the light of the recent terrorist attacks that have taken place in Mumbai, the anxiety of the nation is emerging. The Government should address the anxiety of the nation, the countrymen. So, wherever and whatever be the lapse, it must be looked into. I am not criticizing or blaming anybody. But I am carefully using the word. The system should be updated including the Office of the National Security Advisor, the system prevailing everywhere, the system in the Intelligence Department. We know that we are having an Intelligence Department. I am not mentioning the name of any Department. But I am carefully using the word that the Government should update all our systems to meet the challenge and to meet the present situation. The Government should come forward to update the existing system, whatever be the lapse. This is the only word that I would like to say.

I would like to share certain things with the other hon. Members also. I am coming to the point of the employees of the hotel. That is our experience. We congratulate and appreciate some of the hotel staff. With their balanced mindset and sense, they also helped us.

MR. SPEAKER: On behalf of the House, I have already sent it to them. They have appreciated that.

SHRI N.N. KRISHNADAS : We should specially mention that. This is the situation of our country. As I have mentioned earlier, the country should stand together to fight out maximum the terrorism. We should not compromise with terrorism or the anti-national activities.

With these words, I conclude. I thank you for giving me this opportunity.

MR. SPEAKER: I thank you very much. We are very happy that all our colleagues and friends have been able to come back. You are right that the security forces, the commandos have rescued our Members. But there are other forces. Even the Bombay Police and the hotel staff had put up a unique fight for the sake of others sacrificing their lives also. [R74]

They have sacrificed their lives. We are very happy and I am sure we shall not face any such situation in future.

श्री राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव (मधेपुरा) : अध्यक्ष जी, आप मुझे भी बोलने का समय दीजिए। ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Mr. Rajesh Ranjan, your party has no time. But anyway, I give you two minutes.

श्री राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव : अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे बोलने का मौका दिया। मुम्बई की घटना या अन्य कोई भी आतंकवादी घटना हो, उस घटना में शहीद हमारे देश के सुरक्षाकर्मी हों, बड़े अफसर हों या आम लोग हों, हम प्रत्येक व्यक्ति के प्रति अंतःकरण से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। साथ-साथ हम उनके परिवार, उनके माता-पिता का भी नमन करते हैं कि उन्होंने ऐसे पुत्रों को जन्म दिया जो देश, राष्ट्र और मानव के काम आये। मैं सदन में सुबह से चल रही बहस को बहुत गंभीरता से सुन रहा था। जब भी कोई घटना घटती है, तो मारे गये लोगों के सवाल लगातार उठते रहते हैं। जब भी देश की गरिमा का सवाल आता है, तो अब्दुल हमीद जैसे लोगों ने अपनी जान गंवाकर भी देश की रक्षा की। हम उनके अतीत को याद करते हैं लेकिन वर्तमान को भूल जाते हैं। उसी तरह आज भी श्री करकरे जैसे लोगों ने शहादत दी है। हम उनके वर्तमान को याद करते हैं, लेकिन आने वाले दिनों में हम सिर्फ उनके अतीत को याद करके रह जाते हैं और वर्तमान को कभी याद नहीं कर पाते। लोग अब्दुल हमीद के परिवार के बारे में पेपर में पढ़ते हैं। हरियाणा के बॉर्डर में मारे गये सैनिकों के परिवार के बारे में हम पेपर में पढ़ते हैं, टीवी में देखते हैं कि उनके पास खाने के लिए पैसे नहीं होते, रहने के लिए घर नहीं होता। हम ऐसे लोगों को तब तक ही याद करते हैं जब तक हमारे भीतर यह समस्या ज्वलंत होती है। उसके बाद हम सब कुछ भूल जाते हैं। हम कहना चाहते हैं कि आज निश्चित रूप से सम्पूर्ण राष्ट्र, पूरा सदन, पक्ष और विपक्ष आतंकवाद के सवाल पर एकजुट खड़ा है।

मैं गृह मंत्री महोदय से दो-तीन आग्रह करना चाहता हूँ। मैं मानता हूँ कि आज चाहे यूपीए सरकार हो या विपक्ष के लोग हों, सभी लोग इस सवाल पर इकट्ठे हैं कि देश से आतंकवाद समाप्त होना चाहिए। आम जन की सुरक्षा का जो सवाल है, वह निश्चित रूप से सबसे ज्यादा अहम सवाल है। लेकिन पाकिस्तान में आज जिन लोगों को गिरफ्तार किया गया है या हाउस अरेस्ट किया गया है, चाहे वे हमारे यहां की जेल से निकालकर कंधार भेजे गये हों, आज वे हाउस अरेस्ट हैं। हमारे गृह मंत्री जी और देश जानता है कि वे हाउस अरेस्ट हैं। यदि वे हाउस अरेस्ट हैं, तो क्या हम इस बात को बहुत गंभीरता से नहीं ले पा रहे हैं कि यदि पाकिस्तान पुनः उन्हें हाउस अरेस्ट से निकालकर कहीं दूसरी और भेज दे, वयों नहीं हमारी सरकार इतनी गंभीर है कि ऐसे लोग जिन्हें गिरफ्तार किया गया है या हाउस अरेस्ट हैं, उन्हें अविलंब भारत लायें, नहीं तो जिन हाउस में उन्हें अरेस्ट किया गया है, हमारी सरकार उन जगह पर हमला करे ताकि ऐसे आतंकवादी फिर सिर उठाकर हिन्दुस्तान की आम जनता की सुरक्षा पर कुठाराघात नहीं कर सकें। मैं आपसे आग्रह करना चाहता हूँ कि आज हिन्दुस्तान की सम्पूर्ण अस्मिता का सवाल है, रक्षा का सवाल है, गांव में, कस्बों में रहने वाले एक-एक लोग आज अपनी हिफाजत के लिए विवश हैं। सब लोग केन्द्र की यूपीए सरकार से उम्मीद जता रहे हैं कि अब यह आतंकवादी घटना अंतिम होगी। आने वाले समय में निश्चित रूप से केन्द्र की यूपीए सरकार एक होकर आतंकवाद को नेस्तनाबूद करेगी। मैं गृह मंत्री महोदय से आग्रह करूंगा कि जो अफसर मारे गये हैं, उनके परिजनों के लिए ऐसी व्यवस्था की जाये ताकि उनकी कभी अब्दुल हमीद के परिवार जैसी स्थिति न हो। जो आम जन मारे गये हैं, जो गरीब लोग मारे गये हैं, उनके परिवार वालों को दस-दस लाख रुपये देने की व्यवस्था की जाये। ... (व्यवधान)

आतंकवाद को समाप्त करने के लिए आंतरिक संकल्प के साथ हम सब लोगों को इकट्ठा होना चाहिए। ... (व्यवधान)

MR. SPEAKER: Mr. Nikhil Kumar, your party's time is over. But since you are a former police officer, I give you some time to

Speak.

श्री राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव : अध्यक्ष महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आपका आभार प्रकट करता हूँ। ... (लखनऊ)

अध्यक्ष महोदय : आपके बैठ जाने से हम भी आभार प्रकट करेंगे।

â€ (लखनऊ)

श्री राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव : मैं पुनः उन व्यक्तियों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और पूरी एकता के साथ सरकार का समर्थन करता हूँ।

SHRI NIKHIL KUMAR (AURANGABAD, BIHAR): Thank you very much, Mr. Speaker Sir. I join the entire nation in paying homage to those who lost their lives in the Mumbai carnage. I join the nation in condemning with the strongest possible terms the Mumbai carnage. I also condole the deaths of the valiant security personnel who were involved in the operations in Mumbai. As Mr. Mohan Rawale mentioned, each one of these is worthy of adequate recognition for his act of valour and I am confident that the Government of India will bestow on them suitable recognition for their act of valour.

Having said this, I wish to bring to the notice of the Government something that has come to our notice. It seems that there is no cogent comprehensive policy on counter-terrorism. I would submit that there should be such policy. The Federal Investigating Agency should be an important part of this policy about which the hon. Prime Minister had made a statement and which has been referred to in the hon. Home Minister's statement.

Sir, there is a little misgiving about this Federal Investigating Agency. There are States which object to it on the ground that this will be an encroachment on their privileges as per the Constitution. This misgiving is justified given the constitutional position. But terrorism is not a mere law and order situation. It is not a mere incident which has taken place somewhere and therefore, should be covered by the subject of law and order and therefore, it should be a State subject.

The whole House has repeatedly said, 'Awar on the country is a war on nation, it should be treated separately.' When the Constitution was being framed by our founding fathers, this situation did not exist at that time. Had it then existed perhaps there would have been a different approach to the system of drawing up a separate list. Even now we should be able to correct this, remedy this defect and it should be, if necessary, brought into the Constitution through a suitable amendment. Therefore, I whole heartedly support the idea of a Federal Investigating Agency even if it needs amendment of the Constitution.

The second point is that the terrorists have been using most advanced technology to carry out their acts of terror. Even in the last Mumbai incident, a lot of new technology was used. We have a technology law in our country, but it is supposed to be now under consideration for amendment. This Information Technology Act was framed in 2000. There have been some suggestions made for its amendment. This is very important today, especially, when we hear of the use of satellite phones and the need for intercepting communication through the Internet. This business of intercepting Internet messages is very important today and very topical, so I urge upon the Government that the proposed amendments to the Information Technology Act 2000, which are pending, should now be brought before the House and it should be discussed so that we are in a position to view and effect these amendments which are very important and very topical indeed.

Finally, this is a time when we must express solidarity amongst ourselves. This has been done as has been reflected in this august House and even outside. But what is more important is that I acknowledge also the wonderful gestures by our minority community in celebrating *Bakrid* in a very subdued manner and sporting black arm bands. Here itself, I also wish to bring on record the fact that only the other day in Hyderabad we had an International Conference and it was attended by merely 1,300 international delegates to the Internet Governance Forum. [r75]

They could have well said that India is not safe and we will not go there. But they did not. They came here, and in doing so they expressed solidarity with us. I wish to place on record our sincere appreciation for the fact that even the English Cricket Team is here in India and playing its scheduled Test matches which I think is something that needs to be acknowledged. And it is this spirit of solidarity that needs to be reflected in the whole country.

Sir, thank you very much once again. Time constraint prevents me from saying something else but I am indeed grateful to you for giving me this brief time. Thank you.

MR. SPEAKER: Two minutes for Shri Lalmani Prasad. He was in the Hotel. I am very happy that he is back with us.

श्री लालमणि प्रसाद (बस्ती) : अध्यक्ष जी, आपने मुझे मुंबई की आतंकवादी घटना के बारे में बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

महोदय, 26 तारीख को सर्वोच्च न्यायालय के इंसपेक्शन टूर में मैं भी शामिल होने के लिए ताज होटल पहुंचा था। हमारे लार्जनिंग ऑफिसर एवं अधिकारियों ने हमें वहां पहुंचाया। वहां मुझे रहने के लिए कमरा संख्या 228 दिया गया था। हमारे पदाधिकारियों ने बताया कि लगभग साढ़े आठ या नौ बजे भोजन मिलेगा। मैं साढ़े आठ बजे के लगभग नीचे आया और मैं खाना खा ही रहा था कि जनपद संत कबीर नगर के मेरे एक साथी ने फोन किया कि हम आपसे मिलने आ रहे हैं। मैंने उनको वहां आने के लिए यह कहकर मना किया कि अब बहुत रात हो गयी है, लेकिन उन लोगों ने कहा कि आप हमारे क्षेत्रीय सांसद हैं, इसलिए हम आपके रूम पर मिलने के लिए आ रहे हैं। मैं जब खाना खाकर अपने रूम में जा रहा था, उस समय अन्य लोग खाना खाने के लिए नीचे आ रहे थे। मेरे साथी मुझसे मिलने के लिए साढ़े नौ बजे पहुंचे। उन्होंने मुझसे बाहर चलने और बाहर चलकर खाने की बात की। मैंने उनको बताया कि मैंने खाना वगैरह खा लिया है, मैं सरकारी टूर पर हूँ, इसलिए इस समय बाहर नहीं जा सकता हूँ। कल दिन का शिड्यूल देखेंगे, अगर टाइम मिला तो आपके साथ चलेंगे। वे लोग साढ़े नौ बजे के लगभग मिलकर जैसे ही बाहर जा रहे थे, आतंकवादियों ने उन्हें गोलियों से भून दिया। जब होटल में गोलीबारी शुरू हो गयी, तो होटल वालों ने मुझे बताया कि आप अपना कमरा नहीं खोलें, होटल में आतंकवादी आ चुके हैं। उस समय मैं अपने कमरे में अकेला था। दहशत का वातावरण था, टेलीविजन बंद हो गया, लाइट कट गयी, केवल टेलीफोन चल रहा था। उस पूरे कमरे में धुआं भर गया, उस समय मुझे यह महसूस हो रहा था कि अब मैं नहीं बचूंगा। पूरे कमरे में धुं के कारण सांस लेना भी मुश्किल हो गया था। जान बचाने के लिए मैं पर्दे को थोड़ा सा हटाकर, उसके बगल से सांस ले रहा था। मैंने वहां से सामने का मंजर देखा कि गुंबद जल रहा है, धुआं निकल रहा है और दरवाजे के सामने धड़ाम-धड़ाम की आवाजें आ रही थीं। दरवाजे पर की-होल से देखते थे, तो पूरा मंजर जल-जलकर ऊपर से गिर रहा था। वह दहशत का वातावरण था। 26 तारीख को रात भर गोलियों और बम की आवाजें आती रहीं, एकदम मालूम होता था कि पता नहीं कब यह होटल टूट जाएगा। पूरी रात भर मेरे मित्रों, पदाधिकारियों, बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुश्री मायावती जी ने मुझसे बात की और कहा कि घबराना नहीं। यह डर लगता था कि कहीं मोबाइल की आवाज बाहर न चली जाए, इसलिए रजार्ड के नीचे तकिया लगाकर मोबाइल की आवाज सुनता था। [R76]

19.00 hrs.[R77]

27 तारीख का दिन भी उसी तरह बीता और रात को भी वैसा ही माहौल रहा। आज भी मुझे वह भयानक मंजर भूलता नहीं है। हमारी प्रेस मीडिया के लोग जब बाहर निकले तो 28 तारीख को 10 बजे तीन कमांडो लोग आए और उन्होंने कहा कि वे हमें बाहर निकालने आए हैं, ऐसा ऊपर से आर्डर है। मैं दहशत में था और सोच रहा था कि पता नहीं अब बचूंगा या नहीं। मैं दो रात से सो नहीं पाया था इसलिए सिर दर्द से फटा जा रहा था। मैं बार-बार कह रहा था कि मैं दरवाजा नहीं खोलूंगा। उन्होंने कहा कि विश्वास कीजिए, हम आपको छुड़ाने आए हैं। तब मैंने दरवाजे की की-होल से देखा कि तीन कमांडो मिलिटरी वर्दी में थे। मुझे विश्वास हो गया कि वे लोग मुझे छुड़ाने आए हैं। इस पर मैंने डरते-डरते दरवाजा खोला तो देखा कि मिलिटरी के तीन कमांडो थे। मुझे कपड़े वगैरह समेटने में 15 मिनट लग गए। मैं डर रहा था कि बाहर भी निकल पाऊंगा या नहीं। बहरहाल मैं बाहर निकला तो उन्होंने कहा कि आप अपने हाथ ऊपर कर लें और धीरे-धीरे बाहर आएं। इस पर मैंने उन्हें बताया कि मैं सांसद हूँ तो उन्होंने कहा कि आप अपने हाथ नीचे कर लें। जो तीन कमांडो थे, उन्होंने मुझे अपनी कस्टडी में ले लिया। कमरा बंद करके मैं अपने तीन सूटकेसों के साथ उनकी कस्टडी में चलने लगा। वे लोग धीरे-धीरे बात कर रहे थे, क्योंकि बार-बार गोलियों की आवाज आ रही थी। वह भयानक मंजर मुझे नहीं भूलेगा। एक नई जिंदगी मुझे मिली। करीब आधे घंटे में हम लोग सीढ़ियों के रास्ते लॉबी में आए और वहां मिलिटरी के अधिकारियों ने मुझे कहा कि आप घबराने नहीं, आप सुरक्षित हैं। उन्होंने मुझे चाय-पानी पिलाया। तब मैंने उन्हें बताया कि हमारे दो अधिकारी सेकंड और थर्ड फ्लोर पर हैं। पता नहीं वे किस हाल में होंगे और इसके अलावा हमारे तीन साथी जो मिलने आए थे, उनका भी पता नहीं कि वे बचे होंगे या नहीं। 28 तारीख की रात को 11 बजे पता चला कि हमारे वे तीनों साथी मार दिए गए। अधिकारियों के बारे में पता चला कि आतंकवादियों ने उनके कमरे का दरवाजा खटखटाया था। जब उन्होंने दरवाजा खोला तो उनके हाथ में गोली लगी। सिलावत जी ने कहा कि हमारे हाथ में गोली लगी थी, जो कि उन्नादियों ने मारी थी। फिर हमें पता चला कि उन्होंने रात को दरवाजा तोड़कर घुसने की कोशिश की थी। यह दहशत भरा मंजर हमने खुद देखा है। इस नाते मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि हमारी पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष सुश्री मायावती जी ने भी अपनी बात को मीडिया में रखा था। मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि हम सबको दलीय भावना से ऊपर ऊठकर चाहे बाहरी आतंकवादी हों या अंदर के हों, चाहे जिले-जिले का मामला हो या देश का मामला हो, जो यह दहशतगर्दी फैला रहे हैं, उस पर अंकुश लगाने की सख्त जरूरत है। मैं उन आतंकवादियों की घोर निंदा करता हूँ, जिन्होंने इन तमाम लोगों को मार दिया। इसमें जो रक्षाकर्मी शहीद हुए हैं, मैं उन वीरों के चरणों में नमन करता हूँ। मैं अपनी बात को समाप्त करते हुए कहना चाहता हूँ कि जो शहीद हुए हैं, उनके परिवार वालों को आर्थिक सहायता दी जाए।

MR. SPEAKER: We are very happy that you have been saved and you held your courage. We are very happy about that.

Now, the Home Minister.

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI P. CHIDAMBARAM): Mr. Speaker, Sir, since the Prime Minister is here to speak in this discussion, I request that I may be allowed to clarify a few points raised by the hon. Members and to perhaps answer a few questions that have been raised.

Sir, firstly let me thank Shri L.K. Advani, the hon. Leader of the Opposition and all other Members for assuring not only the Government but also the people of India that we stand united, that we support the efforts of the Government and that we have resolved to rid this country of this scourge of terrorism. I thank all of them once again.

Sir, as I said in the opening statement, the evidence unmistakably points to the territory of a neighbouring country, Pakistan. The fig leaf of non-state actors cannot hold for very long. [H78]

Even a non-State actor belongs to a State; he is not a Stateless person. Our investigation and the interrogation of a captured terrorist has conclusively established that the origin of all the terrorists was the province of Punjab in Pakistan. Therefore, I think,

we must now, as a nation, recognise not only the source of the threat but the gravity of the threat that emanates from that part of the world.

Sir, I said in Mumbai and I say that again. We are in Government. This incident happened when we are in Government, and therefore, we are responsible. There have been lapses. There have been lapses of two kinds. One is mistakes in the system itself, the systematic mistakes, and the second is because of indecision. The way we conduct Government's business takes us down the road to a point where instead of making a decision, we end up with indecision.

I think, therefore, we owe it to our people that we mend our ways of conducting Government's business, and decisions are taken promptly, courageously; and without constantly looking over our shoulders whether the CVC will ask us questions or whether the CAG will ask us questions or whether the CBI will ask us questions, I think, it is important to take decisions. And, in the last few days, I have impressed upon the Ministry of Home Affairs that decisions must be taken, decisions must be implemented, and I assure the House that wherever I find that there have been lapses, we will take the decisions and we will report it to you from time to time.

Sir, on the question about compensation, both the Central Government and the State Government have announced compensation. The Central Government scheme for compensating victims of terrorists and communal violence is, in fact, available in a brochure. We will pay compensation according to the scheme. The State Government has announced a very generous package of compensation. But as I said, money is not compensation, but this is a gesture. They have announced Rs. 5 lakh to every civilian, Rs. 25 lakh to every security personnel, and to personnel who died, full pay until their normal date of retirement will be paid to their families who will be allowed to retain their house, one job will be given to a dependent of the deceased security personnel and free education for children anywhere in India. The injured have been offered free treatment and monetary compensation.

I have impressed upon the Maharashtra Government that all compensations that have been promised must be paid by the 31st of December. They have sent me a note saying that in a large number of cases, compensations have already been disbursed. But I will ensure that by the 31st of December all compensations are paid to those who are entitled to compensation.

SHRI BRAJA KISHORE TRIPATHY (PURI): What is the amount for the foreigners?

SHRI P. CHIDAMBARAM: About the foreigners, the embassies have taken the bodies abroad and that has to be dealt with by the Ministry of External Affairs. But we will deal with that. If they make a claim for compensation, that will also be considered. But I am only talking about the Indians because that is the most sensitive subject. So, we will leave it to the Ministry of External Affairs.

Sir, I want to clarify a point, which Mr. Malhotra made, and I think, that has given rise to all kinds of apprehensions. Mr. Malhotra said that in the Kandahar hijack, there was an all-Party meeting and in that all-Party meeting, the then Leader of the Opposition, Dr. Manmohan Singh and many other leaders, who are now in the Ruling party including Mr. Lalu Prasad Yadav, and Mr. Mulayam Singh Yadav were present, which decided that the three terrorists would be taken in that flight back to Kandahar.

I am afraid, Sir, this is the first time I am hearing this story. Nobody has heard this story before. Therefore, I took the trouble of going through the books of Mr. Jaswant Singh as well as Mr. L.K. Advani.[\[r79\]](#)

Neither Mr. Jaswant Singh nor Mr. L.K. Advani referred to any such all-Party meeting or any such meeting in which Dr. Manmohan Singh or Mr. Lalu Prasad Yadav or anyone consented to take the three terrorists.

श्री मोहन रावले (मुम्बई दक्षिण-मध्य): अध्यक्ष महोदय, मेरा प्वाइंट आफ आर्डर है।

MR. SPEAKER: There is no point of order.

श्री मोहन रावले : अध्यक्ष महोदय, श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने मीटिंग ली थी। आदरणीय सोनिया गांधी भी वहां आई थीं...[\(व्यवधान\)](#)

MR. SPEAKER: No, he has not yielded. He is replying to that.

SHRI P. CHIDAMBARAM: I think this should be clarified. In fact, Mr. Jaswant Singh in his book refers to a Cabinet meeting which decided to reject the demand of the kidnappers, terrorists and he was asked to go and tell the Press. Then, Shri Advani refers to another Cabinet meeting where he says, "Finally, the Cabinet came to the decision that we should free three terrorists." I think the statements in the two books are correct. Maybe, Mr. Malhotra's memory is playing tricks with him. I think, perhaps, he must have gone through a very hectic election campaign. But I think that his statement is not correct. We are not going into the rightness or wrongness of taking those three terrorists but to attribute it to an all-Party meeting and a consensus, I think that should be made clear. As far as I am able to reconstruct from the contemporary writings on those events, no such thing took

place.

Sir, I only want to say finally one thing. I am very happy that our hon. Members have praised the work of the security forces. Policemen come from the same stock as you and I come from. They have their failings. Like each one of us has weaknesses, the policemen also have weaknesses. But ultimately, I want us to remember that that policeman, usually an overworked policeman, usually a policeman who is working about 12 to 14 hours a day, a policeman whose housing is in very poor condition, a policeman who occasionally falters, it is that policeman who is willing to lay down his life to save the lives of many other Indians. M.C. Sharma was such a policeman. Hemant Karkare was such a policeman. I was deeply hurt when there was an attempt to damage the reputation of M.C. Sharma. I was equally hurt when there was an attempt to damage the reputation of Hemant Karkare. In fact, the virtues of Hemant Karkare appear to have been discovered only after his death. But anyone in Mumbai will tell you that he is an Engineering Graduate, a graduate of IIM and an upright officer. All I plead is that in the months that I will preside over this Ministry, I will have to work with policemen. I will have to motivate them to work better. I will have to motivate them to set their system right. But during this period, my only appeal to all sections of the House is, whatever the failings of a policeman here or a policeman there, let us never forget that it is that policeman who is willing to lay down his life to save us from the clutches of terrorists.

Members were there in the Taj Hotel. Two policemen, Rahul Shinde and Major Sandeep Unnikrishnan died in the Taj Hotel operations. Many others died in other parts of Mumbai. So, I think, while we do our duty to make the conditions of service of policemen better, give them better equipment, give them better vehicles, give them better gear, we should also give them greater respect. It is that respect which will lift the morale of the police forces and it is these police forces which will eventually defend the integrity, security and sovereignty of India. With these words, I once again thank the hon. Members. Now, I would request you to call the hon. Prime Minister.

THE PRIME MINISTER (DR. MANMOHAN SINGH): Mr. Speaker, Sir, as I rise I am acutely cautious of the fact that in the recent months, the acts of terror have been on the increase and we have lost hundreds of our citizens in these dastardly acts. [\[m80\]](#)

I am conscious of the fact that our systems and procedures in dealing with terrorism need a review. On behalf of our Government, I would like to apologise to our people that these dastardly acts could not be prevented.

As far as Mumbai is concerned, it was a very calculated and sinister attack, intended to cause widespread terror and damage to the very image of India. The forces behind these attacks wanted to destabilize our secular polity, create communal discord and undermine our country's economic and social progress.

Each one of us has condemned this horrible incident and also extended our deepest condolences to the bereaved families and sympathies to those who have suffered injuries. We have all saluted the courage and patriotism of the Police and security forces, including the special forces, like the NSG and the Naval Commandos. This nation is proud of them. I also note with great sorrow that a number of foreign nationals have also been the victims of this terrorist onslaught. I have personally spoken and written to the Heads of State or Heads of Government of those countries whose nationals were the victims of this terrorist onslaught, apologizing to them that this incident could not be prevented.

Mr. Speaker, Sir, Nothing that we can say or do will compensate for the lives that have been lost. It is important to ensure that the memory of their sacrifice does not get dimmed with the passage of time. Parliament must resolutely reinforce our nation's determination to defeat terrorism and destroy it root and branch. The scourge of terrorism has to be, and will be, fought with determination. All means and measures needed for this purpose will be utilized.

Our immediate priority is to restore a sense of security to the people of India. We will not countenance a situation in which the safety and security of our citizens are violated with impunity by terrorists or other militant forces.

I believe we have to work at three levels. First, we have to galvanize the international community into dealing sternly and effectively with the epicentre of terrorism, which is located in Pakistan. The infrastructure of terrorism has to be dismantled permanently. This is for the good of the entire world community, including the well being of the people of Pakistan themselves.

Several Heads of State and Government have spoken to me in the wake of the terrorist attacks in Mumbai. Each one of them has praised India for demonstrating restraint. They agreed that strong action should be taken against those responsible for these acts. I conveyed to them that we could not be satisfied with mere assurances. The political will of the international community must be translated into concrete and sustained action on the ground. [\[k81\]](#)

It is time for the international community to squarely confront the challenge of terrorism. The use of terrorism as an instrument of State-policy is no longer acceptable. There should be no double standards in the global fight against terrorism.

There are no good or bad terrorists. There is no cause that justifies the massacre and killing of innocent people. We need effective steps not only to bring those responsible for the Mumbai attacks to justice, but also to ensure that such acts of terrorism do not recur.

I am happy that the United Nations has taken the step today to put sanctions on four individuals of the LeT, including Hafiz Muhammad Saeed and on the front organizations under which the LeT was operating such as the Jamaat-ud-Daawa. This is the kind of purposeful action that we believe should be pursued in a sustained manner by the world community to ensure that the entire infrastructure of terror is dismantled.

Secondly, we have taken up strongly with the Government of Pakistan the use of their territory for launching an attack of this kind, and the need for the strongest possible action against the perpetrators of such ghastly acts. The world community must be convinced that actions by Pakistan against the brutal perpetrators of these crimes against humanity will be effective and will be sustained over time.

We have so far acted with utmost restraint. But let not our commitment to civilized norms be misconstrued as a sign of weakness. Every perpetrator, organizer and supporter of terror, whatever his affiliation or religion or location must pay the price for such cowardly and horrific acts against our people. We have noted the reported steps that have been taken by Pakistan. But clearly much more needs to be done and the actions should be pursued to their logical conclusion.

Thirdly, we need to recognize as a Nation that we cannot depend on either of these two approaches for obtaining the outcomes that we all desire. The Mumbai incident has highlighted gaps in our preparedness to deal with these kinds of assaults. We need to equip ourselves more effectively to deal with this unprecedented threat and challenge to our country's integrity and unity.

The Home Minister has already outlined a number of steps that are being taken. The Administrative Reforms Commission Report has taken a comprehensive look at the problem of terrorism, and the course of action that the Commission has indicated is under the active examination of the Government.

The need for stronger measures to protect our coastlines has been highlighted before, but the progress on ground in this regard has, obviously, been tardy and too slow. We are strengthening our maritime security against asymmetric threats from the sea. Since there are currently multiple agencies tasked with coastal security, it has been decided that the sole responsibility of guarding the coastline would be entrusted to the Coast Guard. The Indian Navy would provide the necessary back-up support to the Coast Guard for this purpose.[\[r82\]](#)

This would come into effect immediately. Special security and protective arrangements are being put in place for all major ports. Similar steps have been initiated for guarding sensitive installations in the vicinity of our shore line.

Arrangements for securing our air space taking into account conventional as well as non-conventional threats have been streamlined. Real time monitoring of aircraft movement jointly by the Air Force and the civil authorities has begun. Air defence measures to prevent intrusion of rogue or unidentified aircraft are in place.

The attacks highlighted the need to be able to act in response to such incidents with much greater speed. We have worked out a mechanism for a comprehensive crisis management response. It has already been decided that the National Security Guard should be decentralized and dispersed and should be located in major metropolitan areas. At the same time, arrangements must be put in place such that rapid response units can reach other locations without loss of time. Till such time as the strength of the NSG is increased, and new units are trained, the Special Forces available with the Army, the Air Force and the Navy and other civilian agencies will be used. Commando units would be created by each State.

We have already decided to strengthen the legal framework to deal with terror and also to set up a national investigating agency. As promised by the Home Minister these Bills would be brought to the House at the earliest.

As has been indicated, mechanisms have already been put in place to provide more timely intelligence to pre-empt future terrorist attacks. Daily meetings at the level of the Home Minister are being taken. The Multi Agency Centre of the Intelligence Bureau will be concentrating exclusively on collecting, collating and disseminating information relating to terrorist threats. Integration and coordination among the various intelligence agencies is being improved. The States have been requested to energize intelligence collection at the district level to produce more actionable intelligence.

While we will be taking a number of short-term and long-term measures, there is a general consensus that the long-term strengthening of our security will only take place by strengthening the police establishment, particularly at the local level. We are committed to police modernization and will spare no effort and no resource to undertake this task within a definite timeframe. We

must provide our security forces with the modern and sophisticated equipment they require to tackle the increasing sophistication of terrorist crimes. The morale of our security forces is of utmost concern and importance and if there are any deficiencies these will be made good. The country needs a modern and efficient police force to deal with the twin challenges of security and development in this day and in this age.

The terrorist attacks in India have tried to sow communal divide in the country and weaken our polity and our social fabric. We have emerged stronger with every challenge, and will do so again. I have no doubt that the Mumbai attacks will also fail in their nefarious designs. All political parties have an obligation to unite against communal hatred and discord.[\[r83\]](#) We cannot fight and win this war against terrorism, if we are a divided house.

In conclusion, Mr. Speaker, Sir, I wish to say that it is in times of adversity that the true mettle of a nation is tested. We must remain calm and be resolute. We should stand firm as one nation and one people to meet this challenge posed by terrorism. We will give a fitting rebuff to our enemies. The idea of India as a functioning democracy and a pluralistic society is at stake. This is a time for national unity and I seek your cooperation. Truth and righteousness are on our side and together we shall prevail